★ पुस्तक : संस्कृति रा सुर

★ प्रवचनकार : राजस्थानकेसरी पुष्करमुनिजी महाराज

★ सम्पादक : देवेन्द्र मुनि शास्त्री, साहित्यरत्न

★ रूपान्तरकार : श्रीनृसिंहराज पुरोहित, एम. ए.

★ प्रस्तावना : डॉक्टर शक्तिदान कविया, एम. ए. पी-एच. डी.

★ प्रेरक : रमेश मुनि शास्त्री, राजेन्द्र मुनि शास्त्री,

★ प्रकाशक : श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, पदराडा जि. उदयपुर

★ प्रथम प्रवेश : जनवरी १९७३

★ पुस्तक पृष्ठ : एक सौ बहत्तर

★ मूल्य : पांच रुपए मात्र

★ मुद्रक : संजय साहित्य संगम के लिए
रामनारायन मेड़तवाल
श्रीविष्णु प्रिंटिंग प्रेस,
राजा की मंडी, आगरा–२

प्रकाशकीय

'संस्कृति के स्वर' पुस्तक प्रकाशित करते हुए हमारा हृदय आनन्द से झूम रहा है। हमारी कितने ही दिनों से इच्छा थी कि हम सद्गुरुदेव श्री के प्रवचनों की पुस्तक प्रकाशित करें, पर हमारी इच्छा मूर्त रूप न ले सकी। इसके पूर्व गुरुदेव श्री के प्रवचनों की पुस्तकें—'जिन्दगी की मुस्कान, जिन्दगी की लहरें, साधना का राजमार्ग, 'ओंकार : एक अनुचिन्तन' आदि अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। गुजराती और राजस्थानी भाषाओं में भी पुस्तकें निकली हैं, जो अत्यधिक लोकप्रिय हुई हैं।

सद्गुरुदेव श्री साहित्य और संस्कृति के संगमस्थल हैं। उनका व्यक्तित्व अनूठा है, और कृतित्व गौरवशाली है। वे स्थानकवासी समाज के एक प्रमुख सन्त हैं। प्रसिद्ध प्रवक्ता हैं और गम्भीर विचारक हैं। वे जब प्रवचन करते हैं तब गम्भीर से गम्भीर विषय को सरस व सरल बनाकर प्रस्तुत करते हैं। श्रोताओं में प्रसन्नता के फव्वारे छूट पड़ते हैं।

पुस्तक के प्रवक्ता हैं श्रद्धेय सद्गुरुवर्य राजस्थानकेसरी पुष्कर मुनि जी महाराज और सम्पादक हैं समर्थ साहित्यकार देवेन्द्र मुनि जी शास्त्री, जो उनके प्रधान अन्तेवासी हैं। गुरु के भावों को एक शिष्य पकड़ सकता है वह अन्य व्यक्ति नहीं पकड़ सकता। गुरुदेव श्री के मौलिक प्रवचनों का संग्रह देवेन्द्र मुनि जी के पास इतना है कि पच्चीस पुस्तकें तैयार हो सकती हैं। समय मिलने पर मुनि श्री की हार्दिक कामना है कि उन्हें सम्पादित कर प्रकाश में लाया जाय।

हमारी योजना है कि 'राजस्थान केसरी : व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व' महत्वपूर्ण ग्रन्थ शीघ्र ही प्रकाशित किया जाय। उसका लेखन राजेन्द्र मुनि जी शास्त्री, काव्यतीर्थ ने प्रारम्भ कर दिया है। शीघ्र ही उसे भी हम पाठकों के हाथों में प्रदान करेंगे।

ग्रन्थालय ने इन तीन चार वर्षों में महत्वपूर्ण साहित्य विविध विधाओं में प्रकाशित किया है जिसका सर्वत्र हृदय से स्वागत हुआ है, प्रस्तुत पुस्तक भी उसी तरह अपनाई जायेगी, ऐसी आशा है।

मैं उन सभी अर्थ-सहयोगियों का हृदय से आभार मानता हूँ, जिनका मधुर सहयोग हमें प्राप्त हुआ है। भविष्य में भी प्राप्त होगा जिससे कि हम नित्य-नया साहित्य प्रकाश में ला सकें।

शान्तिलाल जैन
मंत्री, तारक गुरु जैन ग्रन्थालय
पदराडा (उदयपुर)

प्रस्तावना

भारतवर्ष एक जूनौ अर मिनखपणै री नमूनौ देश है। जूनै तरवर ज्यूं सुलौ लागै, उण ही भांत जूनी परम्परा, संस्कृति अर धर्म रै क्षेत्र में भी कठैई-कठैई खोखलापणौ लागै। उणरै इलाज सारूं प्राचीन सरूप रा अनूप जांणकार कोई विरला ही लाधै, जके प्रेम-नेम सूं जीवण री पवित्र पंथ साधै। संसार में मांनखै सूं मूंघी अर मोवणी कोई चीज नीं है, पण सगला मिनखां में मिनखपणै री तमीज भी नीं है। किणी रै वास्तै औ संसार चोखौ है, किणी रै वास्ते अनोखौ अर किणी रै वास्तै धोखौ है। उपयोग री दृष्टि सूं ही हर चीज न्यारा-न्यारा रूपां में रैवै, ज्यूं पंछी परभात में अर उल्लू रात में ही राजी रैवै। आजकल असली री पूछ तो कम नै नकली री बाजार तेज है। इण वास्तै मांनखै रै मन में तो नफरत अर ऊपर सूं हेज है।

इण जमांनै में मिनखां रौ घाटौ नहीं, पण मिनखपणै रौ घाटौ जरूर है। आज स्थांन री दूरी तो घटी, पण दिल एक दूजां सूं घणा दूर है। आज कपड़ा तो ऊजला दीखै पण मन में घणी कालस है। तिकड़मबाजी में लोग ताखड़ा है, पण ईश्वर रै नांम में आलस है। आज बिजली री प्रकाश तो दीपै पण आत्म-प्रकाश मंद है। भ्रष्टाचार री तौ बाढ़ है, पण ईमानदारी री धारा बन्द है। रोग मेटण री लाखां दवाइयां तौ आवै, पण बिनां दवाई नींद भी नहीं आवै। सात पीढ़ियां रै सुख खातर माया जोड़ी जै, पण एक पीढ़ी में ई फूट पड़ै अर माथा फोड़ीजै। इन्सांन विज्ञांन रै साथे अज्ञांन तौ जरूर पायौ, पण ज्ञान अर भगवांन नीं पायौ। छत्रपति शिवाजी सिंहगढ़ जीतियौ जदे कयौ, कै गढ़ तो आयौ पण सिंह गयौ। सो वे ईज वातां आजकल वरतीजै है। मिनख उत्तम चीजां सूं तौ अलगा रैवै अर रुली चीजां माथै रीझै है। इलम

वधै ज्यूं इन्सांनियत घटती जावै है, नै हिवड़ां में प्रीत री डोर दिनो-दिन कटती जावै है। कारण कि आजकल री शिक्षा तो फगत नौकरी वास्तै भिक्षा है। उणमें विचार तो कम नै प्रचार जादा है। इणी वास्तै घणकरा पढ़िया लिखिया छोकरा आजकल दादा है।

क्यूंकि ऐज्यूकेशन रौ मतलब हुयग्यौ है 'ऐ ज्यूं कै सुन'; तौ पछै पढ़ण अर समझण रौ तौ कैवै ई कुण। खोटै संचै में ढालियोड़ा सिक्का ई खोटा है, सो आजकल नांम मोटा नै दरसण खोटा है। आज सचाई रौ सूरज इण भांत ढल् गयौ है कि विद्यार्थी, गुरु, बापजी अर दादै रौ अर्थ ही बदल् गयौ है। कारण कै इण शिक्षा री उलटी चाल है। मांयने तो भेड़िया नै ऊपर भेड़री खाल है। जके पराये इतिहास में सुजांण है, वे ईज घर रै इतिहास में अजांण है। जको विषय कोर्स में नहीं है, वो तो मांनो महत्त्वपूर्ण ही नहीं है। सो पाठ्यक्रम ही जद ज्ञान री कसौटी हुवै, उण समाज री हालत घणी खोटी हुवै। औ ईज कारण है कि आज विश्वविद्यालय तो वणग्या है विषविद्यालय और न्यायालय में हुयग्यौ है न्याय लय।

शिक्षा में जद तांई सुन्दर संस्कारों रौ मूंघो मेल् नीं हुवै, तौ मांनखै में अंतस में आणंद री केल् नीं हुवै। आजकल पढ़ाई ऊपर तो जोर है, पण वा पढ़ाई समाज रै पतंग सूं कटियोड़ी डोर है। कारण कै, शिक्षा नीति रौ जको वर्तमान कायदौ है, उण सूं ईज कुछ खास लोगों रौ फ़ायदौ है। अवार जो प्रजातंत्र है, उणनै समझण रौ औ ईज मंत्र है ; सब करै ज्यूं करौ यानी समाजवाद री बातां करौ नै आपोआप रा घर भरौ। आज ईमानदारी तो टकै सेर बिकै है नै चोरटों रै घरे मालपूआ सिकै है। आंधा पीसै नै कुत्ता खावै है, वै'ती गंगा में हाथ नीं धोवै जके पछतावै है। कुए भांग पड़ी है अर जनता पीवण नै अड़थड़ी है। करौ पाप तो खाओ धाप, करो धरम तो फूटै करम, ऐ औखांणा इण जमांनै में सुणीजै है, अर सदाचारी मिनखां रा तो सुण-सुण नै काल्जा सीजै है।

सायत आज सूं पैली समाज में इतरौ भ्रष्टाचार कदेई नीं हौ जित रौ आज है। औ जनता रौ राज है। इणमें न तो ईश्वर रौ डर है अर न मिनखां री लाज है। गरीब चिड़ियां रै वास्तै चालाक मिनख बाज है और समाज तो एक तरै सूं बिनां खेवटियै री जहाज है। औ इज

कारण है कै आज भला-भला मिनख चोर डाकू नीं करता जैड़ा कुकर्म करै है अर पछै जाल रै जंजाल में खुद फंस नै विनां मौत मरै है। आज राज-काज में तो भ्रष्टाचार, व्यौपार में कालोवजार, धर्म में धुंधूकार अर शिक्षा में वंटाढ़ार है। ऐड़ी अवेढी, अवखी अर अटपटी वेला में धार्मिक शिक्षा अर संस्कारों री घणी जरूरत है, पण उणसूं ई पैली औ समझणी है कै धरम री कांई असली सूरत है। जकी चीजां जितरी जूनी हुवै उतरी ही जोजरी भी हुवै, इण वास्ते वांरा रूप वदल जावै नै तेज ढल जावै। जद वांरो आकार वदलणौ पड़ै अर नांम भी वदलणौ पड़ै। आज 'धर्म' नै जिण अर्थ में समझियौ जावै है, उण तरै तो धर्म निरपेक्ष राज में धर्म री बात करतां ई लाज आवै है।

राजस्थान केशरी पंडित प्रवर श्री पुष्कर मुनिजी महाराज कृत तथा देवेन्द्रमुनि जी द्वारा संपादित पुस्तक 'संस्कृति रा सुर' नै 'जद आद सूं अंत तांई पढ़ी, तो म्हारै अंतस में आणंद री लै'र बढ़ी। इणरै अलग-अलग अध्यायों में जो अनुभव रा मोती पोया है, जो समाज सुधार रा सपना संजोया है; वे घणा ही उजला, अनूठा अर उत्तम है। वांरी जितरी प्रशंसा की जाय उतरी ही कम है। मांनवता रौ जको ऊजलौ आदर्श सुरंगै ढंग अर रूपालै रंग में दरसायौ है, वो म्हारै घणौ मनभायौ अर दाय आयौ है। इण जमांनै में पुष्कर मुनि जी, श्री देवेन्द्र मुनि जी, आचार्य विनोवा भावे जैड़ा अनूठा विद्वांनों रा सारपूर्ण विचार हर समझदार व्यक्ति अर विद्यार्थी नै पढ़ाया या समझाया जाणा चाहीजै, ताकि हियै में सचाई अर सनेह री जोत जाग सकै, नै अज्ञान रूपी अंधकार दूर भाग सकै, दरअसल माया रा त्यागी नै ईश्वर रा अनुरागी समझदार अर ईमांनदार विद्वांनों रा व्याख्यांनों तथा वांरी पुस्तकां रै प्रेम रस सूं ही मन वस में हो सकै अर जीवण-वेल री काकड़ी पकै।

मुनि महाराज 'जीवण रै परभात' में ही टावरों में चोखा संस्कारों री जो मरम री बात कही है, वा बिलकुल सही है। अभिमन्यु, शिवाजी, नेपोलियन, अर वनराज चावड़ा जैड़ा डावड़ा इणीज वास्तै सपूत अर महापुरुष वणिया, कै मां रै दूध रै साथे ही वांनै उत्तम संस्कार मिलिया। एक गुण रै पासै दूजो गुण आवै जदे ही मिनख पणौ शोभा पावै। धन री तीन गति—दांन, भोग अर नाश है। पैलै में हुलास, दूजै में प्यास अर तीजै में सत्यानाश है। दर

असल जो ऊजलो दांन है, वो न तो विज्ञापन है अर न एहसांन है। ईमांनदारी री लोय में जीवण री उजियास अर मिठियास हैं। इणरी कमी सूं ही संसार पाखंड अर अफंड में अलूझै अर पछै अमूंझै हैं। ईमांनदारी रौ आचरण ही धरम रौ मूलमंत्र है, इण सारभरी बात नै मुनि महाराज इतिहास रा अनूठा उदाहरण देय घणै रूपालै अर रलियावणै ढंग सूं बताई है, समझाई है अर हियै लगाई है। क्षमा वीरों रौ तो आभूषण, पण कायरों रौ दूषण है। जीवणरूपी वीणा रा तार है—विचार, वाणी अर व्यवहार यों तीनों रै हेल-मेल सूं ही प्रेम री सुरीली, रसीली अर नशीली झणकार पैदा हो सकै। पण इण जमांनै में तो पायल री झणकार, मैं'ल-मालियों री कतार अर मोटरकार री भरमार तौ जरूर मिलै, पण प्रेम री झणकार तौ कम ही सुणीजै। जीवण में सुख अर संतोष सूं जीवणौ है, तौ ईमानदारी रौ इमरत जरूर पीवणौ है। संसार में जो कुछ सार है, वो परोपकार है, मरजादा री कार है, अर प्रेम री झणकार है; बाकी सब बेकार है। औ ईज इण पुस्तक रौ सार है, सिणगार है अर आधार है।

—(डॉ०) शक्तिदान कविया
एम० ए०, पी-एच० डी०
प्राध्यापक—हिन्दी विभाग
जोधपुर विश्वविद्यालय

सम्पादकीय

मांनखै रै अनुभव नै वाणी रै द्वारा ही उजागर कियो जा सकै है। वाणी मिनख री अमोल संपत्ति है, अनूठी निधि है। जे मिनख रै पासे वांणी री घणमूंघी निधि नीं हुंती, तो वो आपरै ऊजला विचारों नै पसु-पंखेरुवांरी भांत प्रगट नहीं कर सकतौ, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, कला अर विज्ञान रौ निर्माण नीं कर सकतौ। वैदिक ऋषियों इणी कारण वांणी नै 'सरस्वती' कही। **'वाचा सरस्वती,' 'जिह्वाग्रे सरस्वती'** कैवतां वांणी रौ महत्त्व दरसायौ।

ऋद्धि, सिद्धि, समृद्धि री प्राप्ति वांणी सूं ही होवै है। मांमूंली मिनख री वांणी वचन है, पण ऊँचै साधक री वाणी प्रवचन है। प्रवचन में चिन्तन री गहराई, विचारों री निरमलता, भावों रौ फूटरापो नै प्रेरणा री पवित्रता हुवै, जकी श्रद्धालु श्रोतावां रै हिवड़ै में अरस-परस होय विजली ज्यूं गति री हिलोर पैदा करै। इणीज वास्तै कयौ है **'वक्ता दशसहस्रेषु'** यानी हजारों मिनखों में कोई एकाधौ ही साचो वक्ता मिल सकै।

'संस्कृति रा सुर' पुस्तक पढ़ती वेला सयाणा पाठकों नै लागैला कै ऐ प्रवचन घणा सरला, सहज नै गंभीर है। पूज्य गुरुदेव श्री री विचारधारा नदी री रूपाली तरंग ज्यूं बहती जावै, उणमें न वणावटीपणौ है अर न ही छिछलापणौ। यों प्रवचनों में जीवण रै अनेक पक्षों अर घणी मोकली समस्यावों ऊपर गैहरो चिन्तन है जको पूज्यगुरुदेवश्री रै अनुपम अर अनूठी अनुभव नै घणजांणी विद्या रौ निरखणौ नमूनौ है।

गुरुदेवश्री रै प्रवचनां रौ एक विराट संग्रह म्हारै कनै है, पण भांत-भांत रा घणा लेखण कांम-काज री वजै सूं म्हें उण पूरै कांम रौ संपादन नीं कर सकियौ हूँ। ऐ प्रवचन घणा बरसां पैली म्हैं संपादित किया हा, पण उण वखत छप नीं सकिया। पण म्हें समझूं हूं कै आज भी वां प्रवचनों में ताजगी है अर वो ईज नयापणौ है। आज भी ऐ प्रवचन पाठकों रै हिवड़ै नै हरणवाला, मन नै मोवण वाला है। यों प्रवचनों रै संपादन रै समै सनेह-मूर्ति मुनि श्री नेमिचन्द्र जी रौ घणी अपणायत भरियौ सहयोग मिलियौ हो, जिणानै म्हें भूल नीं सकूंला। साथे ही, रमेशमुनि शास्त्री, राजेन्द्रमुनि शास्त्री री भी प्रबल प्रेरणा रही कै यों प्रवचनों नै घणा बैगा छपाया जावै।

इण पुस्तक रा रूपान्तरकार श्री नृसिंहजी राजपुरोहित और भूमिका लेखक डॉ० शक्तिदानजी कविया रौ म्हें हृदय सूं आभारी हूँ कै वांरी लगन अर मेहनत सूं आ पुस्तक राजस्थानी भाषा रा प्रेमियों रै हाथों में घणै कोड सूं पूग रही है।

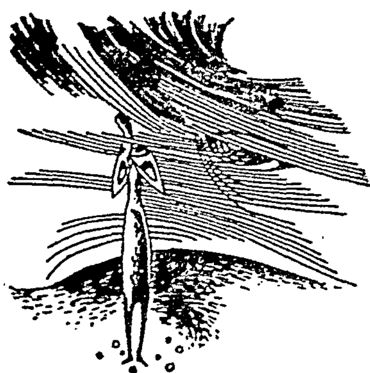
म्हनै आशा ही नहीं, पूरौ विश्वास है कै आ पुस्तक जणै-जणै रै मन में ज्ञान री नवी किरण दरसावैला, प्रेम रौ पवित्र पंथ बतावैला।

हरखचन्द कोठारी हॉल
सरदार पुरा, जोधपुर
दिनांक १६-१२-७२

—देवेन्द्र मुनि

अनुक्रमणिका

—●●—



संस्कृति रा सुर

जीवण री झणकार

मांनखा रो जीवण एक समस्या है। इण समस्या रो ऊकेल काढ़वा सारू जुग जुगां सूं धरमधारियां, तीरथंकरां, पैगंवरां, रिसि-मुनियां अर संतां पूरी मैंणत कीनी है। संसार री दूजी जीवा जूंण करतां मांनखा रो जीवण अनोखौ है। मांनखा रा जीवण नैं कोई साधारण आदमी पोता रा बुद्धि वल सूं नीं नाप सकै। उणरा जीवण नैं समझण वास्तै उण री समस्यावां रो ताग काढण वास्तै सजाग भेजा री जरूरत है। जठा लग जीवण में सजागता नीं वापरै, उठा लग मांनखा की वाचा नीं खुलै, अर वाचा खुल्या वगर जीवण रा इण भेद नैं समझणौ घणौ कठण है, घणौ अवखौ है। जीवण में इण सजागता री रणकार पैदा करवा सारू खांमची हाथां री जरूरत है, मीठा सुर री जरूरत है अर जरूरत है मन रै मस्ती री। ए सगली वातां प्रेम सूं पैदा होय सकै। पण ओ प्रेम स्वारथ रो नीं ह्वैणौ चाहिजै। स्वारथ रो प्रेम जीवण रा रणकार नैं गूंगी वणाय नांखै, उणरी आवाज नैं वेसुरी कर काढै अर मोहरा पड़दा सूं रणकार नैं मोलौ पाड़नैं उणनैं खतम इज कर नांखै।

मांनखा रो जीवण एक रूपाली वीणा रै उनमांन है। वीणा बजावण सारू, उण में सूं मीठी रणकार पैदा करण सारू हाथ, गला अर मन तीनूं रै मेल री जरूरत है। इण रै सागै वीणा रा तीनूं तार पण मिलियोड़ा ह्वैणा चाहिजै। तार मिलियां विनां रणकार फूटणौ कठण है। तारां नैं सफा ढीला छोड्यां सूं अथवा तण का तूताड़ कियां सूं पण कांम नीं वण सकै। वांनैं तो अनुमांन सूं सम राखणा पड़ै। इणीज भांत मांनखा रै जीवण रूपी वीणा रा पण

तीन तार है—मन, वचन अर सरीर। जे इण त्रितारी नैं अनुमांन सूं सम नीं राखी ह्वै तो जीवण रूपी वीणा में सूं प्रेम रो सुरीलौ झणकार नीं जनम सकै। अर जे इण तीनूं तारा नैं तण का तूंताड़ करनैं कस दिया जावै, मोह रूपी गूंद सूं चेप दिया जावै, माया रूपी गांठ सूं बांध दिया जावै तो जीवण वीणा में सूं रणकारौ ई नीं फूट सकै। इणीज भांत जे जीवण रूपी वीणारा तीनूं तार ढीला ढप्प छोड़ दिया जावै, आलस अर ऐंदी पणा नैं गलै बांध लियौ जावै तो पण इण में सूं मीठौ सुर नीं निकल सकै। कैवण रो मतलब ओ के जीवण में सूं प्रेम रो सुरीलौ झणकार काढवा वास्तै मन वचन अर सरीर रा तीनूं तार ठीक हालत में ह्वैणा चाहिजै। जे इण तीनूं तारां में सूं कोई एक तार पण खराब ह्वै, ढीलौ ह्वै के गड़वड़ में ह्वै तो जीवण वीणा में सूं मधुरौ सुर काढवा रो सपनौ अधूरौ इज रैवै। सुपनौ तो पूरौ उण हालत में इज ह्वै के जिण वखत ए तीनूं तार ठीक ढंग सूं जोड़ियौड़ा ह्वै। ठीक ढंग सूं रो अरथ ओ के जीवण वीणा बजावती वखत जांणीकार गवैया रा हाथ, मन अर गलौ इसा केवटियौड़ा ह्वैणा चाहिजै के प्रांण जीवण सागै एकमेक होय नैं प्रेमरी मस्ती में झूमण लाग जावै। मोह, माया अर ममता में गूंथिज्यौड़ौ रैवण सूं इण कांम में भांजगड़ पड़ै। इण गडबड़ नैं मिटावण वास्तै सगला तारां में तटस्थता ह्वैणी चाहिजै। तटस्थता रो मतलब ओ के जिण जिण वखत प्रांण जीवण सागै आसक्ति अर मोह-माया में जकड़वा रा संयोग आवै, उण वखत तीनूं तारां नैं थोड़ी ढील दे देवणी चाहिजै। इण सूं एकता बणी रैवै। एकता रो सरूप विगड़ै जरै इन तटस्थता री जरूरत रैवै। पण इण कोसिस में तटस्थता रो सरूप नीं बिगड़णी चाहिजै। मिनख जमियौड़ा तांना रे मूल में घाव देय नैं, प्रांण जीवण सागै एकात्म भावरी उपेक्षा करनैं नकांमी उदासीनता धारण करनैं तटस्थता रो सेवन करण लागै जं रै इज तटस्थता रो सरूप विगड़ै।

कैवण रो अरथ ओ के जीवण वीणा बजावती वखत खांमची वीणा वादक नैं तांना अर तटस्थता रूपी ताकड़ी रे दोनूं छैलां रो पूरौ ध्यांन राखणौ चाहिजै। पूरौ ध्यांन राखियां सूं इज जीवण वीणा में सूं सरस अर मधुर प्रेम रूपी झणकार निकल सकै। नीं तर का तो प्रेम रो झणकार मोह रा सुर में बदल जाएला अर का पछै वैर, विरोध अर उदासीनता रो सरूप धारण कर लेवैला। ए दोनूं सरूप जीवण

वीणा री खरावियां रा निसांण है, तांना अर तटस्थता रे तूटण रा सैनांण है।

आप नदी तो जरूर देखी व्हैला । जठा लग नदी दोनूं खड़कां रे बीच में पोतारी मरियादा में वैवै, उठा लग दुनिया नैं निरमल जल पावै अर अलेखूं जीवा जूंण री पालणा करै। पण जिण वखत आ पोतारी मरियादा नैं तोड़ नांखै, ढावा तोड़ नैं वैवण लाग जावै, उण वखत कांई हालत व्है ? नतीजौ ओईज निकलै के जिकौ निरमल जल जीवा जूंण री पालणा करै, मांनखा नैं जीवण अरपै, वो इज जल जीवा जूंण रे वास्तै काल रो सरूप वण जावै । नदी में पूर आवण सूं नदी रो नेह रस समतोल नीं रैवै। वैर, विरोध, क्लेस अर माया-मोह रे वसीभूत होय नैं पोतारी समतुला गुमाय नांखै। आसक्ति री रूप धारण करै, इण कारण दुनिया री जीवा जूंण वास्तै आफत रूप वण जावै । इणीज भांत जे कोई भूल्यौ वटाऊड़ौ नदीरी ढावां देखनैं उठै पोतारी तिरस बुझावण नैं आवै पण आगै नदी सफा सूखी मिलै तो उण वटाउड़ा री किसीक हालत व्है ? इसी नदी पण जीवा जूंण रे कांई कांम री ?

भावारथ ओ है के जिण भांत नदी दो ढावां रे वीच में एक सरीखी वैवती थकी अलेखूं प्राणियां री जीवणदाता वण सकै, उणीज भांत मांनखा री जीवण गंगा पण तांना अर तटस्थता रा दोनूं किनारां विचालै वैवती रैवै तो कई जीवां रे वास्तै जीवणदाता वण सकै। नीं तर मोह अर ममता वधवा सूं जीवण गंगा रो निरमल जल पण आफत रो कारण वण जावै। अथवा वो जल सफा सूख इज जावै। इण भांत तिरस बुझावण नैं आयौड़ा वटाऊड़ा रै वास्तै वा दुख रो कारण वणै। ए दोनूं हालतां नदी रै ज्यूं जीवण रूपी नदी रै वास्तै पण खरावारी है। आ वात एक दाखला सूं साफ व्है जाएला।

मांनलो के एक मा है। उण रै एकाएक वेटौ है, जो उणनैं घणौ इज व्हालौ है। उणरै हिवड़ा में वेटा रै वास्तै अथाग प्रेम है। पण उण प्रेम रो समतोल किण भांत राखणौ चाहिजै ओ उण नैं भांन नीं है। उण हालत में उण रौ प्रेम नकांमौ है। कारण कै वा प्रेम अर मोह रा भेद नैं नीं समझै। आलस, ऐंदीपणा अर तटस्थता रो फरक नीं जांणै। वा पोतारा वेटा नैं घणा लाड कोड सूं उछेरै। छोकरौ नांजोगा कांम करै पण वा उणनैं नीं वरजै। वो चोरियां करै, वजार में जायनैं पैसा उडावै तासपण उण नैं कांई नीं कैवै। इसी हालत में उणरो ओ प्रेम, प्रेम नीं पण

मोह है, वात्सल्य नीं पण आसक्ति है, नेह नीं पण ममत्व है। इणीज भांत उणरो बेटौ पढण नैं नीं जावै, मोटौ हुयां पछै ई कोई कांम नीं करै, वजर ठोठ अर जड़भरत बण्थोड़ौ रोवतौ फिरै, तो ई वा सहन करै। उण हालत नैं इसा प्रेम नैं किण नांम सूं ओलंखणौ चाहिजै? उठी कांनी एक दूजी मा है। वा पोता रा बेटा नैं वात-वात माथै लड़ै, बिनां कसूर कूटती रैवै। उण हालत में पण आइज बात कैवणी चाहिजै कै उठै पण प्रेम नीं, रूखापणौ है, नेह नीं पण निरदयता है, तटस्थता नीं पण उदासीनता है अर चेतनता नीं पण जड़ता है। मा रै प्रेम रा ए दोनूं दाखला साफ बतावै कै इणां में साचौ प्रेम नीं है। कारण कै प्रेम में तो लगाव अर तटस्थता दोन्यूं रो मेल ह्वैणौ चाहिजै। इण रै वास्तै मन में पूरी सजागता ह्वैणी चाहिजै। पण ऊपरला दाखलां में तो सजागता रो वास्तौई नीं है। इणीज वास्तै एक विचारक कह्यौ है—

प्रेम पंथ पावक री ज्वाला

प्रेम रो मारग आग री डांडी अर खांडारी धार है। उण ऊपर चालतां जरा पण चूक पड़ी कै पछै थाग लागणौ कठण है। पग चूकां पताल है। इण वास्तै प्रेम पंथ रा वटाऊड़ा नैं पूरौ सावचेत रैवणौ पड़ै। कारण कै मांमूली सी भूल पण जोखम में नांखती जेज नीं करै।

प्रेम रो थरमामीटर ओ है कै जठै लगाव अर तटस्थता रा सीमाड़ा लांघ्या नीं जावै, तापमांन पोतारी मरियादा में चालै-उणरौ नांम इज प्रेम है। पण इण में जे जरा पण घट-वध होवै तो उणनैं मोह, माया, ममता, आसक्ति कै वैर समझणौ चाहिजै। भलैई वो प्रेम रो वांनौ धारण करनैं आवै।

साजा सरीर में ६८·६ गरमी ह्वैणी चाहिजै। पण जे इण सूं वधारै गरमी ह्वै तो उण मिनख नैं मांदौ समझणौ चाहिजै। इणीज भांत कम गरमी ह्वैणी पण मांदगी री निसांणी है। नॉरमल गरमी वाळौ सरीर साजौ गिणी जै। थरमामीटर सूं उणरी तुरत परीक्षा ह्वै सकै।

मांनखा रा हिवड़ा में प्रेम री गरमी पण नॉरमल ह्वैणी चाहिजै। आइज साजा पणा री निसांणी है। हिवड़ा में आ गरमी एकदम ठंडी पड़ जावै तो गड़वड़ गिणीजै अर जे एक दम तेज ह्वै जावै तो पण खतरौ खरौ है।

अबै आप आ वात आछी तिरियां समझग्या व्हौला कै प्रेम किण नैं कैवै अर वो किण हालत में निरमल रैवै।

महात्मा बुद्ध रै एक चेला रो नांम भिक्खु उपगुप्त हो। वो एकर मथुरा नगरी रै कनैं कोई वन में एक झाड़का रै नीचै सूतौ हो। रात रो वखत हो अर चन्द्रमा रो निरमल चांनणौ च्यारूं मेर फैल्यौड़ौ हो। उण वखत मथुरा नगरी मैं सूं एक नाचण वाली नरतकी उठै होय नैं निकली। चालतां चालतां अजांण में उणरै पग री ठोकर उपगुप्त रै लागगी जिण सूं वो जागग्यौ। वो वैठौ होय नैं पछतापौ करतौ नरतकी नैं कैवण लागौ—वैंन! ठोकर अजांण में लागी है, इण वास्तै थूं मन में कोई विचार मत करजै। म्हूं थनैं माफ करूं हूँ। नरतकी हाक-वाक होय नैं देखण लागी। चन्द्रमा रा निरमल चांनणा में उपगुप्त रो मुखड़ौ खिल्यौड़ा कमल री गलाई लागतौ हो। वो राजा रो कुंवर हो पण भिक्खु वण्यां पछैई उणरै सरीर रो फ़टरापौ कम नीं हुयौ हो। ब्रह्मचर्य रो अनोखौ तेज उणरै चेरा माथै पल पलाट करै हो। प्रेम रो ओज उणरै सरीर में सूं फ़टनैं उणरी ओप नैं वधारतौ हो। नरतकी ओ सगलौ खाकौ देखनैं छकड़ीगम व्हैगी। वा उपगुप्त नं पूछण लागी—थांरौ ओ फूल जिसौ कोमल सरीर कांई धूड़ में रगदोलण वास्तै वण्यौड़ौ है? थांरी आ भरपूर जवांनी कांई दुखरी भट्टी में वाल नैं वरवाद करण वास्तै वणी है? उभा होय नैं म्हारै सागै चालौ। म्हूं थांसूं प्रेम करूंला। कोमल सेज माथै पोढ़ाय नैं म्हूं थांरै जोवन नैं सारथक वणावूंला। उपगुप्त कह्यौ—वैंन, हाल वो वखत नीं आयौ है। वो वखत आवैला जरै म्हूं थनैं प्रेम रे परगास रा दरसण करावूंला।

नरतकी मन में दुखी होय नैं उठा सूं रवानै व्हैगी। वा जीवण री आंकी-वांकी गलियां में चालती थकी उपगुप्त नैं भूलगी।

घणा वरस वीत्यां पछै एकर भिक्खु उपगुप्त पाछा मथुरा कांनी आया। एक दिन संझ्यारा भिक्षा सूं निवड़नैं वन कांनी जावता हा कै मारग में कोई लुगाई रै कुरलावण री आवाज वांरै कांनां में पड़ी। जाय नैं देख्यौ तो एक लुगाई खाड़ा में पड़ी वेभांन हालत में कुरलावै ही। वा पोता रै जीवण री छैली घड़ियां गिणती ही। उण नैं चेतौ अणाय नैं भिक्खु कह्यौ—"वैंन! म्हूं थारा दुख में मदद देवण नैं आयग्यौ हूँ।" थूं अवै कोई वातरी चिंता मत करजै। नरतकी आंख्यां

उधाड़ नैं वोली—'ओ कुण परमात्मा रो लाल है, जिणैं म्हानैं मौत सूं बचाई ?" उपगुप्त नरतकी नैं ओलख लीवी । आ वाइज नरतकी ही कै जिणैं एक दिन उणनैं प्रेमरी मौज मांणवा वास्तै नूंतौ दीनी हो । आज उणरी हालत कितरी खराव ह्वैगी ही । उणरै शरीर में सूं भयंकर रोगां रे कारण सूगली वदवू आवै ही । आखौ सरीर सड़ग्यौ हो । इण वास्तै उणरै रूप रा लोभी भमरा अवै उणरै नेड़ाई नीं आवता हा । उणरा प्रेमियां इज राजा नैं कैयनैं उणनैं नगर रै वारै खाड़ा में फेंकाय दीनी ही । उपगुप्त विचार कीनौ आ लुगाई पेली मोह अर वासना नैं इज प्रेम समझै ही । आज उणनैं साचा प्रेम करावण रो मौकौ आयौ है । वो मीठी वांणी सूं वोल्यौ "वैंन, म्हूं वोइज आदमी हूं, जिकण थनैं कह्यौ हो कै मौकौ आयां साचा प्रेमरा दरसण करावूंला अर भीड़ पड़यां थारै कनैं पूग जावूंला । संजोग सूं वो मौकौ आज आयग्यौ अर म्हैं म्हारौ वचन निभाय लियौ । अवै थूं म्हारै साथै चाल, म्हूं थारी चाकरी करूंला । थारी दुख दूर करण री कोसिस करूंला ।"

नरतकी भिक्खु रै चरणां में ढिगलौ ह्वैगी अर वुरी तरै सूं रोवण लागी । भिक्खु उणनैं अपणाय लीवी अर उणरी पीड़ा नैं मेट नांखी । वा फगत वासना अर मोह नैं प्रेम समझै ही, पण उणनैं सगला संसार री आत्मावां में प्रेमरा दरसण हुवा । उणैं पवित्र आचरण सूं पोतारी जीवण यात्रा पूरी कीवी जिणसूं उणरौ जीवण सुख सांति सूं बीत्यौ ।

ओ है वासना अर प्रेम रो भेद । जितरौ फरक एक साधारण काचरा टुकड़ा अर हीरा में है; उतरौ इज फरक प्रेम अर वासना जन्य मोह में है । उपन्यास सम्राट प्रेमचंद रा सब्दां में प्रेम अर वासना में उतरौ इज फरक है जितरौ कै काच अर सोना में है । नांम अर सरूप री निजर सूं आज इण दोनूं बिचै भलांई कोई फरक मत गिणीजौ, पण दर असल में फरक घणौ है । गाय रो दूध अर आकड़ा रो दूध नांम अर रूप सूं एक इज है । पण दोनूं रै गुणां में रात दिन रो फरक है । इण दोनूं भांत रा दूध जितरौ इज फरक प्रेम अर मोह में है । गायरो दूध इमरत री पांण ताकतवर है अर आकड़ा रो दूध परतख जहर है । इणीज भांत प्रेम आत्मारी ताकत नैं वधारण वालौ है अर मोह आत्मा रो नास करण वालौ है । लक्ष्मण अर रांवण दोनूं रो लगाव महासती सीताजी कांनी हो । पण लक्ष्मण रो लगाव गाय रा दूध जिसौ निरमल हो अर रांवण रो लगाव

आकड़ा रा दूध री गलाई जहरीलौ हो। इण कारण इज एक जणा नैं जीवण मिलयौ अर दूजौड़ा नैं मौत मिली।

जिण प्रेम में वासना रो पुट ह्वै, जठै प्रेम रा भेख में वासना अर मोह छिप्योड़ा ह्वै, उठै समझणी चाहिजै कै प्रेम है इज कोयनीं। उठै प्रेम रा सांग में वासना रो सड़वौ है।

आजरा नौजवांन फिल्मी प्रेम नैं साचौ प्रेम समझ लेवै। अर कई ना जोगा छोरा छोरियां तो लैला-मजनूं रो नाटक करनैं पोतानैं मोह रा कुंड में होम नांखै। जिकण रो नतीजौ दुखदाई अर खोटो निकलै।

सुद्ध प्रेम में आतमा री झलक रैवै। उण मैं सरीर रै रूप रो मोह नीं टिकै। एक कवि प्रेम रो असली रूप वतावतां कह्यौ है—

> विनगुन जोवन रूप धन, विन स्वारथ हित जानि,
> शुद्ध कामना ते रहित, प्रेम सकल रस खानि।

प्रेम आगला रै सरीर रा गुण-अवगुणां कांनी निजर नीं राखै। रूप, जोवन, धन, स्वारथ कै दूजी कामनावां सागै पण प्रेम रो लेवणी-देवणी ई नीं है। प्रेम इण सगलां सूं घणौ ऊपर है। इण सगलां रो सम्बन्ध सरीर सागै है, पण प्रेम रो संवंध आतमा सागै है। प्रेम अंदरूणी चीज है अर मोह वारली। प्रेम अमर है अर मोह पलक भरियौ। प्रेम वारला फ़टरापा री परवा कदैई नीं करै पण मोह रो तो आधार इज वारलौ फ़टरापौ है। वारला फ़टरापा रै लोभ विनां मोह कायमइ ज नीं रैय सकै। प्रेम दिन दिन वधै पण मोह दिन दिन घटै। प्रेम तरक्की रा मारग माथै आगै वधै अर मोह दिन दिन लारै सिरकै। प्रेम ऊंचौ देखाणियौ है तो मोह नीच धूंणियौ है। प्रेम एक महासागर है तो मोह नैंनौ खावांचियौ है। प्रेम सुद्ध, नेहालू अर अमर ह्वै पण मोह वासना भरियौ, स्वारथी अर कम टिकाऊ ह्वै। प्रेम मन नैं मोटौ वणावै अर मोह उण नैं नैंनौ करै। प्रेम वियोग में वधै अर मोह संजोग में। प्रेम जीवण नैं परमारथी वणावै अर मोह जीवण नैं स्वारथी वणावै। प्रेम में न्याय-अन्याय रो विवेक ह्वै पण मोह में विवेक झांखौ पड़ जावै। प्रेम में देवण री विरती कांम करै अर मोह में लेवणरी। मोह में वदलै री भावना जोर री ह्वै पण प्रेम में इसी कोई भावना नीं ह्वै। मोह में डूवोड़ा प्रांणी माथै जे थोड़ौ घणौई दुख आवै तो वो दूजा माथै ढोलण री कोसिस करैला। पण प्रेमी मिनख

दूजा रा दुखनैं ई पोता रा पिंड माथै लेवण री इच्छा राखैला। वो पोतारा दुखनैं तो हंसती हंसती सहन करैला इज। मोह हमेसां पोतारै हक रो ध्यांन राखै पण प्रेम उणरै फरज कांनी लगन राखै। मोह में फस्योड़ो मिनख पोतारै सुखरो ध्यांन राखै पण प्रेमी मिनख सगला रै सुख में पोता रो सुख मांनै। प्रेम मांनखा नैं अपणात पणो सिखावै पण मोह स्वारथ अर खुसामद सिखावै। यूं ऊपर सूं प्रेम अर मोह एक सरीखा इज दीसै अर दोनूं रो वैवार पण एक सरीखो इज दीसै पण दोनूं में रात दिन रो फरक है। एक चूंनौ है अर दूजो मांखण है। चूंनौ खायां सरीर रो नास ह्वै अर मांखण खायां सरीर री ताकत वधै। इण भांत मोह अर प्रेम रो भेद जाण्यां पछै मांनखो ठोकर नीं खाय सकै। एक तत्वज्ञांनी कह्यौ है के प्रेम करण रो मतलब ओ के पोतारा आणंद नैं दूजा रा आणंद में मिलाय सकै।

मोह रा पड़दा में ढकी जियौड़ी आत्मा नैं प्रेम रो परगास किण विध मिल सकै? आत्मा जिण वखत मोह रा महासागर में चूंवाकियां लगावण लागै, उण वखत विवेक री जोत बुझ जावै। पछै हिवड़ारूपी धरती माथै प्रेम रूपी परगास फैलण रो सवाल इज पैदा नीं ह्वै। सीताजी रै मन में सोनेरी मिरग रो मोह पैदा ह्वियौ इण कारण विवेक रो परागास झांखो पड़ग्यौ। अर ओ इज सीताजी रै हरण रो कारण वण्यौ। रांवण रै वास्तै सीताजी रो मोह दुखदाई निवाड़ियौ। कैवण रो अरथ ओ के मिनख जिण वखत मोहरा फंदा में फंस जावै, उण वखत उणनैं दुख इज दुख पड़ै। आ वात भगवांन महावीर री वांणी में इण भांत उतरी है—

'इणमेव नावबुज्झंति, जे जणा मोहपाउगा'

मोह सूं घेरिजियोड़ो मिनख विवेक नैं भूल जावै। वो दुख नैं नूंतौ देवै। दुनिया में सगला दुखां रो कारण मोह है। प्रेम तो सुखां रो भंडार है। प्रेमी रै वास्तै तो दुखपण सुख में पलटीज जावै। इण बाबत भगवांन महावीर रा वचन ध्यांन राखै जिसा है—

दुक्खं हयं जस्स न होई मोहो'

जिणरो मोह टूट जावै, उणरै दुखरो पण नास ह्वै जावै। जिको मिनख सगला संसार सागै एकात्मता रो भाव राखै अर पोतारी आत्मा नैं प्रेम रा सागर में सिनांन करावै, उणरै दुख नैड़ोई नीं फरुकै। उपनिसदां में आइज वात इण भांत कही है—

तत्र: को मोह क: शोक: एकत्वमनुपश्यतः

म्हूं आपनैं आ कैवतो हो के आप सुद्ध प्रेम नैं ओलखौ अर जीवण में खुसीरी जोत नैं जगावौ । पेला रा सुखनैं पोतारो सुख मांनै इणरो नांम इज प्रेम नीं है । प्रेमी मिनख तो पेलारा दुखनैंई पोतारो दुख समझै अर उण दुख रूपी काटा नैं काढवारी कोसिस करै । कैवण रो मतलव ओ के सगला संसार रा दुख नैं मेटण खातर पोतारा सुख नैं लुटाय नांखै इणरौ अरथ इज साचौ आणंद है । अर जठै आणंद है उठै इज प्रेम है । मांनखा जूंण एक फूल री गलाई है जिकण रै च्यारूं मेर कांटा उग्यौड़ा है । इण कांटां री सेज माथै सूतौड़ा फूल जिसौइज ओ प्रेम रूपी फूल है । जिकौ इण रै खनैं जावै उणनै सुगंध सूं लपटा लोल कर नांखै । पेला रा दुख में डूबौड़ा मन नैं खुसी सूं पांगराय देवै । इण चांमड़ा री जीभ सूं प्रेम रा वखांण होवणा कठण है । इणनैं परखण वास्तै तो हिवड़ारी आंख्यां चाहिजै । हिवड़ा सूं इज इणरौ असली स्वाद चाख्यौ जाय सकै । इण वास्तै इज नारद भक्ति सूत्र में कह्यौ है—

'अनिर्वचनीयं प्रेमस्वरूपं मूकास्वादनवत्'

प्रेम रा वखांण जवांन सूं हरगिज नीं ह्वै सकै । ओ तो गूंगा वालौ गुड़ है । इण रौ तो फगत अनुभव इज कियौ जाय सकै । मूंडा सूं बोल नैं इणरा वखान नीं करीजै ।

पांणी में तिरतौ मिनख पांणी रै माथै ह्वै जितरै इज बोल सकै, पांणी में चूंमा की मार्‌यां पछै तो वो कांई वोल सकैला । इणीज भांत प्रेम रूपी सरोवर में डूब्यां पछै मिनख रो वोलणौ वंद ह्वै जावै । उणरै मूंडा सूं एक आखरई नीं फूट सकै । हां वो, प्रेम रो आचरण जरूर कर सकै ।"

अंग्रेजी नाटककार सेक्सपियर एक ठौड़ कह्यौ है के "जो पोतारा प्रेम नैं सगलां नैं ई बतावतौ फिरै, उणरौ प्रेम हलकी जात रो ह्विया करै ।

जठै सुद्ध प्रेम ह्वै उठै इज आणंद ह्वै । अर उण ठौड़ इज पोतानैं होम नांखण री विरती पणह्वै ।

कर्मयोगी कृष्ण सांतिदूत वणनैं जिण वखत दुर्योधन री सभा में पूगा और सांति री मांगणी कीवी तो दुर्योधन सफा नटग्यौ । इण री कारण ओ के उणरा मन में प्रेम नीं हो । मोह सूं ढक्यौड़ा

हिरदा में स्वारथ रो वास व्हिया करै। उण ठौड़ जीवण में भ्रणकार पैदान नीं व्है। दुर्योधन री मीठी-मीठी वातां सूं इज भगवांन कृष्ण समभ्रग्या के अठै प्रेम रो लवलेस ई नीं है। उणां विचार कियौ के म्हनैं तो विदुरजी रै घरै जावणौ चाहिजै जठै सादगी प्रेम अर सुद्धता री त्रिवेणी वैवै है। कृष्ण भ्रट उठनैं विदुरजी रै घरां पूगा। उण वखत विदुरजी कठैई वारै गयौड़ा हा अर वांरी पत्नि घरै हीं। उणें कृष्ण री चोखी खातरी कीवी। बैठण नैं आसण दीनौ। उण वखत आश्रम में दूजी तो कोई खावण-पीवण री चीज नीं ही पण थोड़ा घणा केला जरूर हा। वे केला काचा है अथवा पाका, चोखा है के खराव, आदेखण वास्तै विदुर पत्नि केला लेय नैं चाखण लागी। इण कांम में वा इतरी मगन व्हैगी के उणनैं ओ भांन ई नीं रियौ के वा पांवणा नैं केला देवै है के वांरी छाल देवै है। वा तो प्रेम मगन होय नैं मीठा-मीठा केला गपागप खावती गई अर छाल छाल कृष्ण नैं पकड़ावती गई। विदुर पत्नि री आ तल्लीनता अर प्रेमपरायणता देखनैं कृष्ण एक आखर ई नी वोल्या, चूंकारौ ई नीं कियौ, चुपचाप छाल चावता रह्या अर पेट धरौ करनैं संतोक मांन लियौ।

इसौ व्है अण वोलिया प्रेम रो आणंद। जिण वखत मिनख प्रेम रा आणंद नैं भोगवै, उण वखत वो जचै जिसी आफत नैं ई भूल सकै। कारण के प्रेम तो एक दुख दाईखुसी रो नांम है। इण सगला संसार रो गाड़ौ प्रेम माथै इज चालै है।

सबरी रा हिवड़ा में प्रेम रो अखूट सागर हिलौला लेवतो हो। आश्रम रा पवित्र वातावरण में वा पल-पुस नैं मोटी हुई ही। इण वास्तै प्रांणी मात्र सागै प्रेम रो वरताव राखण रा संस्कार उणनैं बचपण सूं इज मिल्या हा। सबरी मोटी हुई तो उणरै विवाह री तैयारी होवण लागी। सबरी रे बाप जांनियां री खुराक वास्तै वाड़ौ भरनैं जिनावर भेला किया। सवरी इण बात नैं कियां सहन करती। रातरी वखत जिनावरां रो तांवाड़णौ सुणनैं उणरी ऊंघ उडगी। वा एक दम वाड़ै पूगी अर फलसौ खोल दियौ। हल फलियौड़ा जिनावर जीव लैयनैं नाठा। सबरी रो मन पण सांसारिक माया मोह सूं ऊबग्यौ हो। वा तो संसार रा कल्यांण में पोतारो कल्यांण मांनती ही सो वा पोतै ई घर वार छोड़नैं रातो रात वन कांन रवानै व्हैगी। दिनूंगै घरवालां उठनैं

देख्यौ तो सवरी री पथारी खाली पड़ी ही अर वाड़ौ ऊघाड़ौ पड़्यौ हो। उणांनैं घणी ई चिंता हुई पण कांई करता। ह्वैणारी वात ह्वै चुकी ही।

वन में जायनैं सवरी कुदरत रा वंधण हीण वातावरण में रैवण लागी। उठै कुदरत रो खुल्लौ आंगणौ, रिसि मुनियां रा रूपाला आश्रम, आश्रमां में रमता फूटरा फररा टावर अर किलोलां करता पंखरू देखनैं उणैं पण आश्रमां में जावण रो अर सतसंग करण रो विचार कियौ। पण आप जांणौ के कसौटी लगायां बिना असली नकली रो कांई ठा पड़ै! सवरी आश्रमां में आवण जावण लागी तो उणरै प्रेम रे ई कसौटी लागण लागी। रिसिमुनि उणनैं भील कन्या अर नीच कौमरी समझ नैं दुत्कारण लाग्या। पण साचा प्रेम में जात-पांत, धर्म-संप्रदाय के देस-रेस री कीमत नीं आंकीजै। प्रेम जात-पांत कै देसकाल रा बंधणां सूं आघौ ह्विया करै। सबरी रा प्रेम रै पाकौ रंग लाग्यौड़ौ हो। इण कारण वा अपमांन अर दुख सूं कंटालीजण वाली नीं ही। उणैं प्रेम नैं कायम वणावण वास्तै दूजौ रस्तौ काढ़ियौ। जिण मारग होय नैं रिसि-मुनि स्नांन करणनैं के फल-फूल लावण नैं जावता उणैं वो मारग वेगौ भागफाटी रा उठनैं बुहारणौ सरु कियौ। इण कांम में उणनैं इतरौ आणंद आवतौ के वा अठी उठी ध्यांन दियां बिना वा मौज सूं सफाई करती रैवती। मारग बुहार्‌यौ झाड्यौ देखनैं रिसिमुनि समझण लाग्या कै ओ म्हांरी तपस्या रो फल है। शृंगी नांम रा एक पुरांणा रिसि पण उठै रैवता। उणां विचार कियौ के रोज ओ मारग कुंण साफ करै है! इणरौ पतौ लगावणौ चाहिजै। दूजौड़ै दिन शृंगी रिसि भाग फाट्यां पे'ली उठीनैं गया तो उणां सबरी नैं मारग बुहारतां देखी। उणां सगला मुनिया नैं वुलायनैं कह्यौ—"देखौ, आ देवकन्या नित रोज आंपणौ मारग बुहारनैं जावै। आंपांनैं इणरौ उपकार मांनणौ चाहिजै।" पण शृंगी रिसि सिवा वा कन्या कोई नैं चोखी नीं लागी। कारण के वा काली कडोपी भीलकन्या ही। वे सगलाई उल्टा उण माथै नाराज ह्विया। वे कैवण लाग्या—"आ छोकरी कितरी नालायक है, इणैं आंपणौ मारग अपवित्र कर नांख्यौ।"

शृंगी रिसि आश्रम रै बारै झूंपड़ी वांधनैं रैवण लाग्या अर सवरी नैं वेटी समांन मांन नैं उण नैं ज्ञांन देवण लाग्या। धीरे धीरे उण वयो वृद्ध रिसि रो अंतकाल आवै पूगौ। सवरी रोवती थकी कैवण लागी—

'हे महामुनि, अबै म्हारै जिसां नांकूच नैं आतम ज्ञांन कुंण देवैला ? रिसि उणनैं धीरज बंधावता बोल्या—"बेटी अबै थनैं कोई ज्ञांन री जरूरत इज नीं है। थारै हिरदा में प्रेम रो दरियौ हिलोला मारै है। उण रै आगै सगलौ ज्ञांन थोथौ है। भगवांन रांम, लक्ष्मण अर सीता सागै वनवास रा दिनां में फिरता-फिरता थारी झूंपड़ी तांई आवैला, थांरा पांवणा बणैला, उण दिन थारौ प्रेम पूरण ह्वै जावैला।" आ बात सुणतां इज सबरी रै हरख रो कोई पार नीं रह्यौ। उणरौ मन रूपी मोरियौ थेई-थेई करनै नाचण लाग्यौ। भगवांन रांम इण मारग कद आवैला ? आ सोच-सोच नैं उणनैं एकूकौ दिन एक एक बरस रै समांन लागण लाग्यौ। रांम जिसा लांठा पांवणा री खातरी वास्तै सबरी कन्नैं कांई हो ? मोटर, बंगला के छप्पन भोग तो उठै हा इज कोइ नीं। उणरै कन्नैं तो वांरी खातरी वास्तै फगत एक इज चीज ही अर वा ही उण जंगला रा रसीला बोरा। नित रोज कांम-काज सूं के उणनैं नवरास मिलती तो वा वन में जायनैं बोर वींण नैं लावती। रिसिमुनि पण भगवांन रांम रै पधारण री बाट जोवता हा। पण भगवांन चतुराई सूं के आडंबर सूं रिझिभै जिसा नींहा वे तौ हिरदारी साची भावना नैं ओलखणा वाला हा। आडंबर अर चालाकी सू बांनै नफरत ही। वे उठी नैं पधार्‌या तो सीधा सबरी री झूंपड़ी में पूगा। रिसि मुनि वांरी वाट जोवता इज रैयग्या। वांरी सगली तैयारी फाऊ गई। मुनियां नैं मन में घणौ खोटो लागौ पण रांम किणरी परवा करै ? भगवांन रांम रा पधारण सूं सवरी नैं इतरी खुसी हुई कै जांणै आंधा नैं आंख्यां मिलगी। रांम नैं देखनैं वा प्रेमगैली ह्वैगी। रांमजी रो आव आदर किण भांत करणौ—वा गतागम में पड़गी। उणनैं कोई ध्यांन इज नीं बाधतौ हो। छेवट सावचेत होयनैं सबरी रांम अर लक्ष्मण वास्तै एक गूदड़ी बिछाई। प्रेम सूं गूंथ्यौड़ी इण गूदड़ी में जे आणंद हो वो मखमल री गादी में पण नीं हो। राम री मेहमांनदारी वास्तै जिकौ वोर उणैं भेला कर राख्या हा, वे बोर सबरी लेयनैं आई। उणैं मन में कियौ के इण बोरां में सूं जे कोई खाटा हुवा तो ? उणैं बोर चाख चाख नैं रांम अर लक्ष्मण नैं देवणा मांड्या। खाटा बोर तो पोतै खाय जावती अर मीठा बोर रांम नैं देवती जाती। सबरी रा निस्वारथ भाव सूं दीनौड़ा ऐंठवाड़ा बोर पण रांम नैं मीठा गट्ट लाग्या। इसा मीठा तो महलां में रांध्यौड़ा पकवांन पण नीं लागै। सीता अर लक्ष्मण पण

रांम रै देखा देखी उण इमरती बोरां रो आणंद लीनौ। आवात सोलूं आना सही है जठै साचौ प्रेम व्है, उठै सूका पाका टुकड़ां रै आगै पकवांन ई फीका लागै।

घणी ताल वाट जोयनैं छेवट काया होयनैं रिसि-मुनि वड़बड़ाट करता अर रांमरी निंदा करता उठा सूं रवानै व्हिया। वे स्नांन करण खातर सरोवर माथै पूगा तो आगै कांई देखै कै सरोवर रो पांणी रातौ चोल लोही री पांण व्है ग्यौ है। पांणी में अलेखूं जीवड़ा कल-वलता हा। ओ तमासौ देखनैं उणां में सूं एक रिसि बोल्यौ—"आंपानैं शृंगी रिसि अर सवरी जिसी पवित्र आत्मा री निंदा रो पाप लागौ है। इण कारण इज ओ पांणी खराब हुयौ है।" सगला मुनि मन में घणौ पछतावौ करता रांम कन्नैं पाछा आया। रांम बोल्या—सवरी रो जीवण पवित्र है। इणरौ पग जे सरोवर रा पांणी रै अड़ै तो पांणी पाछौ ठीक व्है सकै। सगला मुनियां माफी मांगी अर तलावरो पांणी ठीक करण री अरज कीवी। सवरी नरमाई सूं बोली—"मुनिराजां, म्हूं तो एक खोटा नसीब वाली मांमूली अवला हूं। आप लोगांरी किरपा सूं इज म्हैं बे आखर सीख्या है। रांम रै चरणां रो प्रेम पण म्हनैं आपरी मेहरबांनी सूं इज मिलयौ है। म्हूं आपरा तलाव नैं म्हारा पग सूं अपवित्र कियां करूं।" सवरी रा ए वचन सुणनैं रिसियां उणरी घणी आजीजी कीवी। छेवट रांमजी रा हुकम सूं सवरी तलाव में पग दीनौ अर पग देतां पांणी पे'ली हो जिसौ रो जिसौ व्है ग्यौ। सवरी रै प्रेमरी पूरै पूरी कसौटी व्हैगी।

सुद्ध प्रेम री खासियत आहीज है के वो पारका दोसां कांनी तो निजर ई नीं नांखै, पण पारका गुणां नैं लेवण री कोसिस जरूर करै। पतंगिया जिसौ नैंनौ जीव प्रेम रै खातर पोतारा पंड नैं आग में होम नांखै। दीवा कांनी जावती वखत ओ मन में बिल्कुल विचार नीं करै के उठै गयां सूं म्हारौ नास व्है जाएला। इणरौ कारण ओ के साचौ प्रेम व्है उठै अवगुण निजर नीं आवै।

भमरौ इतरौ ताकतवांन व्है के वो लकड़ा नैंई चीर नाखै। पण वोइज भमरौ प्रेम में इतरौ गेलौ व्है जावै के कमल री कंवली पांखड़ियां में बंधिज्यौड़ौ रैवै। वो पांखड़ियां नैं चीर नैं नीं बारै निकलै अरनीं कमल नैं छोड़ नैं कठैई जावै। इण कारण एक कवि कह्यौ है—

बंधनानि खलु संति बहूनि प्रेमरज्जुकृत बंधनमन्यत् ।
दारुभेद निपुणोऽपि षडङ्‌घ्रि निष्क्रियो भवति पंकजकोषे ।।

दुनिया में भांत-भांत रा बंधण है, पण इण सगलां में प्रेम रूपी डोर रो बंधण सबसूं टणकौ है, अनोखौ है। इण बंधण सूं इज लकड़ी नैं चीरण वालौ भमरौ फूलरी कवली पांखड़ियां में बंधीज जावै।

जिण ठौड़ प्रेम रो असर ह्वै उण जगै मिनख पोतारो तन, मन अर हिवड़ौ सगला निछावर कर नांखै।



२

ढाई आखर प्रेमरा

कालै जिकण वात री चरचा आप रै सांमनैं की वी ही, वा थोड़ीक अधूरी रैयगी। वा इज वात आज पूरी करणी है। एक आयूंणै विद्वान कह्यौ है के 'प्रेम गुलाव रा फूल जिसो है।' इण सवद रो आकार छोटौ ह्वै तां थकांई ओ कोई मांमूली सवद नीं है। कवीरजी जिंदगी नैं ओलखणिया हा। वांनैं दुनिया रो ऊंडौ अनुभव हो। उणां दुनिया में निराई कितावी कीड़ा देख्या। वांरी आछी तिरियां परीक्षा लीवी पण प्रेम रो कठैई लवलेस ई नीं मिल्यौ। वे कितावी भणियौड़ा घणाई हा, वातां री झालां भरता हा, बुद्धिमांन पण हा छतां पण वांरा हिरदा घणा ओछा हा। इण कारण कवीरजी नैं कैवणौ पड्यौ के—

पोथी पढ़-पढ़ जग मुवा पंडित हुआ न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम के पढ़े सो पंडित होय॥

थोड़ौ ऊंडौ उतर नैं देख्यौ जावै तो आज रे पंडिताऊ जुग रा वैज्ञानिकां रो पण ओइज हाल है। उणा विज्ञांन री अनेकां पोथ्यां पढ़ लीवी है। वां रो बुद्धिवल इतरौ वधग्यौ है के वे चन्द्रलोक माथै जावण री तैयारी में है। वे मुओड़ा मिनख नैं पाछौ सरजीवण करण री कोसिस में है। वे रोग, मूडापा अर मौत नैं पण जीतणी चावै। इतरौ ह्वै तां छतांई वांरा हिरदा अर मन ओछा ह्वैता जावै है। ए मिनख पणानैं अर प्रेम नैं कायम राखण वास्तै कोई ध्यांन नीं देवै। इण वास्तै कवीरजी इसा पंडितां अर वैज्ञानिकां रै वास्तै बात बरोबर कही है। कारण के आज वां रौ लगाव प्रेम करतां भौतिक चीजां अर अस्त्र सस्त्रां कांनी घणौ है। इण कारण इज एंसाइक्लोपिडिया ब्रिटेनिका रा

पेलड़ा संस्करण में जठै प्रेम सबद वास्तै छः पेज भरियौड़ा है अर अणु वास्तै फगत तीन लकीरां लिखियौड़ी है, उठै उणरा नवा संस्करण में अणु वास्तै पेज रा पेज भरियौड़ा है अर प्रेम सब्द रो कठै ई नांमई नीं है। पंचशील माथै इतरौ जोर देवतां थकांई विस्व-प्रेम रा तो दरसण इज दुर्लभ है । इण ग्रंथ में मायडभोम रो प्रेम (Love of mother land) मैंणत सूं प्रेम (Love of labour जनता सूं प्रेम (Love of people) अर विज्ञान सूं प्रेम (Love of Science) सगलाई सगलाई लिख्यौड़ा है पण मांनखा सूं प्रेम के दुनिया सूं प्रेम रो कोई नांम निसांण ई नीं है। इण कारण इज मोटा मोटा ग्रंथ मौजूद ह्वै तां थकांई अस्त्र सस्त्र वधारवा री होड़ सी लागौड़ी है। इण आथूंणा विद्वानां रै दिमाग मे विस्व प्रेम री वात इज नीं बैठे पण भारत में तो जुगां जुंगा पे'ली अठारा रिसि मुनियां विस्वमैत्री, विस्वबंधुत्व, अद्वैत अर 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' रा उपदेस दीना है। विनोबाजी रो जय जगत रो सूत्र भारत वासियां साचा रूप सूं हिरदा में बिठाय लीनौ है। भारतवासी सगला संसार सागै भाई पौ राखणौ चावै। भारत ज्ञांन विज्ञांन रा मांमला में इतरौ आगै ह्वै तां छतांई अणुअस्त्रां रै सख्त खिलाफ है। पण इण रै सागै इतरौ तो कैवणौ इज पड़ैला के विज्ञांन रा संपर्क सूं प्रेम में सिरधा कम ह्वै ती जावै है, यूं प्रेम रै गीतांरा धूंकार उडै, प्रेमरी प्रसंसा करतां जीभ नीं थाकै, प्रेम माथै भासणां री झड़ी लागै पण सगलौ मांमलौ लोक दिखाऊ। दिन दिन भारतवासियां री सिरधा फौज माथै, मिलटरी माथै, अस्त्र-सस्त्रां माथै वधती जावै है। इणरै सागै सागै पैसा कांनी पण प्रेम वधारा माथै है। यु आपां भारतवासी जुद्ध के अस्त्रसस्त्रां रा नुकसांण सूं अजांण कोयनीं। लारला दो महाजुद्धां री बरवादी निजरां आगै हुई है। रांमायण अर महाभारत रो इतिहास पण सगलाई जांणां हां। मध्य जुग रा राजावांरा आपसी टंटां रो फल पण आंपां भौगवै चुका हां। जातिवाद प्रांतवाद के भासावाद रै नांम सूं आज पण आंप णै मुल्क में झगड़ा ह्वै अर आंपणा सगा हाथा सूं प्रेम रो खून ह्वै। इतरौ ह्वै तां छतां पण आ अचूंभा री बात है के आपांणी आंख्यां क्यूं नीं उघड़ती।

पाडोस रा मुल्कां में जिकौ सांग-विलौणा नित रोज होवै, आंपा सूं छांना कोयनीं। पाकिस्तांन अमेरिका सूं अस्त्र सस्त्र मोल लीना है। अर देस री पूरी आवक ६०-७० प्रतिसत भाग इण कांम खातर खरच

कीनौ है अर करै है। उणरौ नतीजौ पण आंपणी निजरां आगै है। आ सस्त्रां री ताकत पाकिस्तांन रै वास्तै भस्मासुर वणगी है। उठै फौज रै हाथ में राजकरण जावण रो कारण ओहीज है। ए वातां देख्यां पछै तो आंप नै चेतौ ह्वैणौ चाहिजै। कांई सस्त्रां री ताकत रै पांण दुनिया में सांति कायम ह्वै सकै? हरगिज नीं। संसार में फगत प्रेम इज एक इसी चीज है कै जिकण रै आधार माथै सांति कायम रैय सकै। वाकी सगली वातां थोथी है। इतरी सगली वातां जाण्यां पछैई भारतवासी फौजां, लस्करां कै हथियारां कांनी निजर राखै तो पछै वात खतम ह्वैगी। पछै प्रेम री सक्ति माथै भरोसौ कठै रह्यौ। इण रो नतीजौ ओ निकल्यौ है कै आज भारत में मिनखपणा रो, नैतिकता रो देवालौ निकलग्यौ है। महात्माजी भारत नैं आजादी हथियारां री ताकत सूं दिराई कै प्रेम री सगती सूं? प्रेम रै पांण आयौड़ी सुतंतरता आंपां भोगवां हां, पण प्रेम माथै आंपां नैं सिरधा कोयनीं। गांधीजी तो आंपांनै साफ साफ वताय नैं गया के वंदूक री गोली करतां प्रेम री गोली ऊंडौ घाव करै। जिण वखत नोआखली में सांप्रदायिकता री आग लागौड़ी ही, हिन्दू-मुसलमांन एक दूजानै देख्या नीं छोड़ता हा, उण वखत भारतीय संस्कृति री आ जागती जोत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी उठै पूगा, प्रेम रो हथियार पकड्यां वे साफ निडर हा। वे मुसलमांनां रा घरां में वेधड़क पूग जावता। एक एक स्वयं सेवकां वांनैं थोड़ा घणा हथियार सागै राखण री सलाह दीवी तो वे घणा नाराज ह्विया। वे वोल्या—"थां में हालतांई अक्कल नीं आई। थां नैं प्रेम करतां वंदूक अर पिस्तौल माथै वधारै भरोसौ है।" उणां सागै संरक्षक राखणा इज वंद कर दिया। कई वखत उणां पर हमलौ हुवै जिसा संजोग पण आया, छतांपण उणां तो सस्त्र पाटी रै हाथ नीं लगायौ सो नीज लगायौ।

कांई आप प्रेम रा अमर देवता भगवांन महावीर री कथा नीं सांभली? अनारज देस में कई भयंकर कवाड़ा होवता, जिकौ उणां प्रेम रैं पांण वंध करांया। वां नै प्रेम री अमोघ सगती माथै पूरौ भरौसौ हो। उणां नै जे सस्त्रां री सगती माथै विस्वास ह्वैतौ तो वे राज पाट क्यूं छोड़ता। वे फौज पलटण अर सस्त्रां री मदद सूं मांनखा नैं जीत सकै हा। पण वो मारग नीं पकड़ नैं उणां तो प्रेम रा प्रताप सूं इज मांनखा रा हिवड़ा नैं जीत्यौ।

दुनिया में जे सस्त्र सगती अर लस्करी ताकत इज सब सूं प्रबल ह्वै ती तो कलिंग रा जुद्ध पछै असोक रो मन क्यूं पलटतौ। असोक रो ओ मन पालटौ भारतवासियां नैं ढोल बजाय नैं बतावै के लस्करी ताकत करतां प्रेम री ताकत ऊंची है। प्रेमरी सगती इज असोक नैं सांति रो मारग बतायौ।

पण आज रो भारत तो इण सगला महापुरुसां रा वचनां नैं भूलनैं लस्करी ताकत कांनी ध्यांन देवण लागौ है। आज भारतवासियां रै जबांन माथै तो प्रेम रा सबद है पण वांरा हिरदा में सस्त्र पाटी रो संगीत गूंजै है। दिन दिन आ धारणा वधती जावै है के अस्त्र सस्त्रां री ताकत सूं इज दुस्मण वस में ह्वै सकै है। पण आ एक मोटी भूल है। इण भांत री सिरधा धोखौ देवण वाली है।

इण मुद्दा माथै ओ पडुत्तर दियौ जाय सकै कै सस्त्रां री ताकत रा नतीजा तो म्है निजरां देख्या हैं अर प्रेम रै प्रताप री तो फगत वातां इज सुणी है। सांपरत देखण रो मौकौ नीं आयौ। इण वास्तै आंपणी सिरधा प्रेम करतां राज सगती अर सस्त्र सगती पर वधारै है। पण संसार जो थरपत नियम है, उणां में फरक नीं पड़ै। सिक्षा सूं, निर्दयता सूं के वैर विरोध सूं सांति कायम राखणी असंभव है। आ कोसिस तो लोही रा दाग मिटावण नैं लोही सूं धोवण रै समांन है। हिरदा नैं धोवणौ ह्वै तो वो फगत प्रेम रा जल सूं इज धोवीज सकै। प्रेम सूं दुस्मण पण काबू में ह्वै सकै अर प्रेम सूं इज एक पापी पण पुण्यात्मा बण सकें। संसार रो जे सुधार करणौ है तो उणरौ मूल मंत्र प्रेम इज है। हिंसा नैं मिटावण वालौ पण प्रेम है। प्रेम इज कुदरत री निर्दयता नैं मिटाय सकै अर प्रेम इज विस्व प्रेम री अमर वेल रोप सकै। पापी नैं पुण्यात्मा, दुर्जन नैं सज्जन तथा निर्दयी नैं दयालु बणावण वालौ प्रेम इज है। प्रेम रा परगास सूं इज कठोरता रो अंधारौ मिट सकै। राजसत्ता अर सस्त्र सगती तो पौतै अंधकार जिसा है। वे बापड़ा कांई परगास कर सकै ? थे जो पोतारा हिरदा में परगास चावता ह्वौ तो मन, वचन अर काया री त्रितारी नैं जोड़ नैं आतम वीणा नैं बजावण री कोसिस करौ तो जरूर उणमें सूं प्रेम रो सुरीलो झणकार निकलैला। उण रै बल सूं थे जिनावरपणा नैं ई काबू में कर सकौ।

आज संसार रा कई लोकतंत्री मुल्कां में राजसगती रै बदलै प्रेम

सगती कांम में आयरी है । उठै कैदियां अर गुनैगारां सागै प्रेम रो वरताव कियौ जावै अर प्रेम सूं इज वांनै सुधारवा री कोसिस की जावै । इण कांम में उण मुल्कां नैं खासी सफलता पण मिली है । जेल में कैदियां रो मनोवैज्ञांनिक अध्ययन कियौ जावै अर वानैं प्रेम सूं सुधारवा वास्तै नवा नवा प्रयोग पण किया जावै । इसा प्रयोगां रा नतीजा देखनैं राजसगती अर सस्त्र सगती पर सूं दिन दिन विस्वास उठ्तौ जावै है ।

सिक्षा सूं सरीर माथै असर भलांई पड़ौ पण आतमा माथै नीं पड़ सकै । अर जठा तांई इण सरीर री मालिक आतमा माथै कोई असर नीं पड़ै, इन्द्रियां रा मालिक मन माथै कोई असर नीं पड़ै उठातां ई सिक्षा रै जोर सूं शरीर माथै कोई असर पड़णौ पण कठण हैं ।

महापापी परदेसी राजा नैं केसी श्रमण प्रेम रा वल सूं इज ठिकांणै लाया हा अर उण री जीवणरूपी नदी प्रेम रो जल वैवतौ कीनौ हो । प्रेम रा पुजारी ईसामसीह प्रेम रा जोर सूं इज मोटा मोटा पापियां नैं साचै मारग घाल सक्या हा । यूं घणौ आघौ जावण री जरूरत ई कोयनीं । आंपणीं निजरां सांमै गुजरात रा मूक सेवक श्री रविसंकर महाराज मौजूद है । जिणां मोटा-मोटा वारोटियां नैं प्रेम सूं समझाय नैं घरै विठाय दिया ।

जेकस जितरौ धनवांन हो उतरौ इज अत्याचारी पण हो, जिण वखत वो टेक्स (कर) वसूल करण नैं निकलतौ लोगड़ा उण रा डर सूं जंगल में जाय नैं छिप जावता । उण री मालकी में कई पीठा चालता जठै अत्याचार री आंधी चालती । एकर उणरै नगर में फिरता फिरता महात्मा ईसा पूगग्या । नगर रा दुखियां वांरै आवण री खवर सुणी तो पांणी रा रेला री गलाई उठै जावण लाग्या । तमासौ देखण खातर जेकस पण एक झाड़का माथै चढनैं उणांरी री बाट जोवण लाग्यौ । पण ईसू उठीनैं आया तो उणनैं वड़ा प्रेम सू वतलायौ । उणां कह्यौ—"जेकस ! झाड़का माथै सूं नीचौ उतर, म्हूं थारौ मेहमांन वणूंला ।" मिनखां ओ खाकौ देख्यौ तो वे ईसू री निंदाकरण लाग्या । पण ईसू नैं निंदा-स्तुति री कांई परवा । वे तो सीधा जेकस रै घरां पूगा । उणरी पांवणा सार मंजूर कीवी अर पछै वड़ा प्रेम सूं उणरै सागै वातचीत कीवी । ईसू रा नेह सूं जेकस रो हिरदौ पिघलग्यौ । जिकण जेकस पर कोई असर

नीं पड़ती हो वो पांणी सूं ई पतलौ ह्वै ग्यौ। वो ईसू रा प्रेम जल में तरबंब होयनैं बोल्यौ—"प्रभू! म्हूं म्हारौ आधौ धन गरीबां री सेवा खातर खरच करणौ चावूं। अर जिण लोगां खना सूं म्हें अनीति सूं धन लियौ है, वांनैं म्हूं चौगणौ पाछौ देवणौ चावूं।"

ओ एक इसौ दाखलौ है जिकौ बतावै कै किण भांत एक पापी रो हिरदौ बदल नैं उण नैं पुण्यात्मा बणायौ जाय सकै। प्रेम पोते ज आत्म-श्रद्धालु ह्विया करै। उण नैं मिनखपणा पर पूरौ भरोसौ ह्वै। सन् १९५१ रो किस्सौ है के तैलंगाना जिला में जमींदारां रो अत्याचार वधियौड़ौ हो। उठारी प्रजा वां रै खिलाफ ह्वैगी ही, अर करीब च्यार हजार जमींदारां रो खूंन कर नांख्यौ हो। खूंनियां रै लारै साम्यवादियां रो हाथ हो। कारण के साम्यवाद रो दारमदार इज खूंन खच्चर अर तोफांन माथै ह्वै। पण इतरौ खराबौ ह्वियां पछैई कोई नतीजौ नीं निकल्यौ। ओ सगलौ रासौ देखनैं संत विनोबा रो मन घणौ दुखी ह्वियौ। उणां विचार कियौ के कांई इण खूंनियां रा मन प्रेम सूं वदलिया नीं जाय सकै। उण दिनां वां रौ मुकाम उण इलाका में इज पांचमपोली नांम री जगै माथै हो। उठै उणां जमींदारां री एक सभा में वांनैं पोतारो कर्त्तव्य बतायौ। प्रजा सागै प्रेम रो बरताव राखण री सलाह दीवी। साम्यवादियां सागै पण बातचीत कीवी अर इण सगली कोसिस सूं उंण घड़ी उंण सभा में इज बैठ्यौ एक जमींदार रामचंद्र रेड्डी उभौ ह्वियौ अर उंणै पोतारी जमीन मंसूं अस्सी बीघा जमीन गरीब अर बिना जमीन रा करसां नैं देवण रो ऐलान कीनौ। इण भांत भूदांन री पवित्र गंगा परगट ह्वी। वा गंगा आज वधती वधती भूदांन सूं ग्रांमदांन तांई पूगगी है। उठारा जमींदारां किसांनां सागै जुल्म करणा बंद कर दिया अर इण भांत उठै प्रेम अर भाईचारा री गंगा बैवण लागी।

आज रा जमांना में आप नगरां में पधारौ तो उठै आपनै लक्ष्मी रो रेलौ वैवतां मिलैला, मोटा मोटा मेल मालिया, बंगला नैं मोटरां पण मोकली मिलैला पण प्रेम रो रणकार स्यात इज कठैई सुणण नैं मिलै। मोटा घरां में पांवणसार करतां मिठाई खावण नैं भलाई मिल जावौ पण उण में प्रेम रो मिठास मिलणौ कठण है। इण वास्तै इज विनोबाजी एकर कह्यौ हो के नगरां में घर तो कन्नैं कन्नैं ह्वै, पण उणां में वास करणिया मिनखां रा मन घणा आघा आघा ह्वै। इण भांत

नेहरी धारा दिन-दिन सूखती दीसै। इसा घरां में पांवणा वणनैं जावण वालां नै संतोष कीकर मिल सकै ? मोटा मोटा महलां में प्रेमाल मिनख भाग भरोसै इज कठैई मिलै। इण सूं उल्टौ गांमड़ां में झूंपड़ा खासा आघा आघा व्है पण उण में रैवण वाला मिनखां रा मन घणा नेड़ा नेड़ा व्है। इण झूपड़ां में पांवणौ वणनैं जावण वाला मिनख नैं खावण नैं भलांई सूखौ सोगरौ इज मिलौ, पण वो सोगरौ उण करसां रे नेह सूं चोपड़ियौड़ो व्है। उठै नीं तो रेडियौ रो झणकार मिलैला अरनीं सिनेमा रो रणकार, पण उठै प्रेम री वोणा जरूर वाजती संभली जैला। आवण वालौ पांवणो झूंपड़ां में सूं नेह मधुरता लेयनैं जावैला। उणरा मन में निरासा नीं, पण संतोष व्हैला।

प्रेम में खास वात आहीज है के वो दूजा नैं कांई लियां—दियां विनाई पोता रो वणाय लेवै। दाखला रै रूप में आप कोई मिनख नैं नोकर राखौ। उणनैं पगार भरपूर देवौ, दूजी सगवड़ां पण मोकलीं देवौ। पण उणनैं प्रेम नीं देवौ अर उणनैं मांडांणी कांम में रगड़ौ तो आप उणनैं पोतारौ नीं वणाय सको। पण जे उणरै सागै आप प्रेम रो वरताव राखौ उणरौ मन जीत लेवौ तो पछै आप उण सूं जचै जिको ई कांम लेय सकौ हो। वो हंसतौ हंसतौ अवखा सूं अवखौ काम कर लेवैला।

प्रेम री जोत मंदी पड़वा सूं अर स्वारथ री आग वधवा सूं इज आज रा समाज में मालिकां अर मजूरां में, वाप अर वेटा में, सासू अर वहूमें, देरांणी अर जेठांणी में महाभारत मच्यौड़ो है। मालिकां री इच्छा आ रैवै के मजूरां सूं घणां सूं घणौ कांम लियौ जावै। मजूरां रे वच्चां में मांदगी व्है तो उणरी मालिकां नैं कांई चिंता। मजूरां री तवियत साजी नीं व्है के वे आधा भूखा व्है तो इणरी मालिकां नैं कांई परवा ? मालिक तो आहीज समझै के मजूर अर मसीन दोनूं एक समांन इज है। मसीन नैं काम में लेवतां वखत कई वातां रो ध्यांन राखणी पड़ै। उणमें तेल पूरणी पड़ै, उणनैं ठंडी करणी पड़ै अर उणनैं साफपण राखणी पड़ै। पण मजूर के नौकर सूं कांम लेवती वखत उणरौ कोई ध्यांन नीं राख्यौ जावै। नीं उणरै सागै प्रेम रो वरताव कियौ जावै नीं उण सूं कोई अपणात पणौ राख्यौ जावै अरनीं उण रै सुख-दुख रो ध्यांन पण राख्यौ जावै। इण कारणां सूं इज धीरै धीरै आगै जाय नैं कई टंटा पैदा व्है।

आज समाज रूपी मसीन खल वीकल ह्वैगी है। उणरा कल पुरजा बिखर गया है। जठै देखौ उठै वैर, विरोध अर झगड़ा निजर आवै। इणरौ मूल कारण ओ है के समाजरूप मशीन में नेहरूपी 'ल्युब्रिकेटिंग' तेल री कमी है।

आज संसार रा मुल्कां बिचै कई तरै रा टंटा चलै, भांत-भांत री मनमुटाव री बातां चलै। अर कठेई कठेई तो इसी वातां बड़ौ जोर पकड़ लेवै। इसा मौका पर नेह सिंचन री जरूरत है। संसार रा सगला झगड़ा नैं निबटाबण वास्तै प्रेम एक रांमबांण दवा है।

आज तो सामाजिक, धार्मिक अथवा राजनैतिक कोई पण जगै देखलौ स्वार्थ री हवा चाल री है। स्वार्थ अर घृणा मिल नैं प्रेम रो आसण खोसलियौ है। कोई पण कांम में मिनख पोतारौ स्वार्थ, आव-आदर, सुख-साधन अर धन रो लाभ रो पे'ली देखैला। प्रेम नैं कर्त्तव्य समझनैं कांम करण वाला मिनख आज विरला इज लाधैला।

आज रा मिनख नैं जे कठैई वाहावाही मिलती ह्वैला उठै वो तुरत आगीवांण बण जावैला। पण जठै इण चीज री कमी देखैला उठै नैड़ौ ई नीं फरुकै।

कोई पण सासू जे पोतारी बहू नैं प्रेम दियां बिना थोथा दबांण में राखणी चावै तो बात बैठै कोयनीं। हां जे सासू कन्नै पैसा ह्विया अर बहू नैं लेवण रो स्वार्थ ह्वियौ तो चाकरी करौ तो भलांई। नीं तो पाटियौ बैठणौ कठण है। पण जिकी सासू पोतारी बहू नैं पेटरी बेटी रे समांन राखै तो बहू पण उणनैं सगी मा रै उनमांन इज गिणैला। सासू अर बहू रै बिचालै जठै इसा मा-बेटी रा मधुर संबंध ह्वैला, उठै टंटा-झगड़ा रो सवाल ई पैदा नीं ह्वै सकै। पण इण वास्तै उभय पक्षां नैं स्वार्थ त्याग करण री जरूरत है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त इण बातनै इण भांत समझाई है—

दोनों ओर प्रेम पलता है।
सखि पतंग भी जलता है, हा! दीपक भी जलता है।
सीस हिलाकर दीपक कहता, बंधु वृथा ही तू क्यों दहता?
पर पतंग पड़ कर ही रहता
कितनी विह्वलता है
दोनों ओर प्रेम पलता है।

महात्मा टॉलस्टाय रा सब्दां में—यूं कैवणौ के थे सारी उमर एक मिनख सूं इज प्रेम करौला—इणरौ अर्थ ओके थे चावौ जितरी देर तांई मैंणबत्ती सुलगती रैवैला।

जे आपनैं संसार में प्रतिष्ठा लेवणी है, लोगां सूं प्रेम लेवणौ है तो थांरा हिरदा में प्रेम रो अखंड भरणौ बैवण दो। सद्गुणां, उदारता अर स्वार्थ त्याग री सुगंधि फैलावौ। फ्रंकलिन रा सब्दां में—जे थांनैं दुनिया रो व्हालौ बणणौ व्है तो दुनिया सूं प्रेम करो। आप जीवण में कोई पण कांम करौ छतांपण सब जगै पारकांरा, समाज रा, देसरा अर जगत रा कल्यांण रो ध्यांन राखौ। खुद रा सोसण नैं सहन करतां थकां पारका रो पोसण करौ। पोता रा अहम् नैं स्व में केन्द्रित नीं करनैं संसार में फैलावौ। जठै कठैई जावौ सिरजण रो काम करो, विनास रो नीं। नेह रा पवित्र अर सुद्ध जल सूं कुटुंब में, समाज में, अथवा राष्ट्र में फैल्यौड़ी घृणा, स्वार्थ अर वैर-विरोध री कालख नैं धोय नांखौ। जिकौ धणी पे'ला पारका रे सुख रो ख्याल राखै अर पछै पोता रो हित देखै, वो इज संसार में साचौ प्रेमी बण सकै। इसा मिनख इज पारका दुख नैं पोतारै माथै लेय लेवै। वे जचै जिसी ई आफतां सहन कर सकै। एक कवि कह्यौ है—

जो हैं प्रेमी वे कुदरत की बलाओं से नहीं डरते।
जो हैं आरफ जफाकल वे जफाओं से नहीं डरते।
वे मुसीबत के मुकाबिल भी सीधे तैर जाते हैं।
वे आधी रात भी दरिया की छाती चीर जाते हैं।

गोस्वामी तुलसीदासजी रे गृहस्थ जीवण रो एक प्रसंग इण भांत है। वे पोतारी पत्नि रा मोह में पागल व्है तां छतांई वां रै जीवण रो वलांक सुद्ध प्रेम कांनी हो। एकर, वां री पत्नि रत्नावली आपरा भाई सागै पीहर गई परी तो गोस्वामीजी घणा उदास व्हैग्या। वे छेवट रैयनीं सक्या अर आधी रात रा पत्नि नैं मिलण नैं रवानै व्हिया। मार्ग में नदी पूरा जोर सूं वैवती ही पण तुलसीदासजी उण में उतरग्या अर पांणी में वैवती एक मुडदा लास रे टेकै-टेकै पार पूगग्या। आगै सासरा रो दरवाजौ वंद हो। कनैं इज एक सांप लटकतौ हो। गोस्वामीजी उणनैं डोरड़ी समझ नैं उणरी मदद सूं लटकता थका भींत डाक नैं मांय नैं पूगग्या। तुलसीदासजी री पत्नि खुड़कौ सुणनैं

जागगी अर उणैं औ सगलौ तमासौ देख्यौ तो वा चकड़ीधम रैयगी। पोतारा पति नैं इण भांत मोह में गेलौ बण्यौ देखनैं उण आपरा फरज नैं ओलखतां थकां एक दूहौ कह्यौ—

जैसौ प्रेम हराम में, वैसौ हर में होय।
चला जाय वैकुंठ में, पल्लौ न पकड़े कोय।।

हाड मांस रा इण हरांमी सरीर में जिसौ आपरौ मोह है विसौज प्रेम जे सगला जगत साथै अर भगवांन साथै व्है जावै तो थांरी मुगती व्है जावै।

प्रेम रा सागर महात्मा ईसा क्राइस्ट प्रेम नैं इज भगवांन रो सरूप मांन्यौ है—

Love is God.

कर्मयोगी श्री कृष्ण पण प्रेम री बंसी बजाय नैं समाज नै पोता रो बणायौ हो। कृष्ण रो प्रेम अनासक्ति योग रो एक नमूनौ हो। कैवण रो अर्थ ओ के संसार रा सगला धर्मों में, सास्त्रां में अर साहित में प्रेम नैं बड़ौ ऊँचो स्थांन दीनौ है। भारतीय रिसी मुनियां प्रेम री महत्ता इण भांत बताई है—

प्रेम शक्ति समा शक्तिरपरा न जगत्त्रये।
प्रेमाकर्षण योगेन स्वकीयं जायते जगत्।।

तीनूं लोकां में प्रेम रे समांन दूजी कोई सगती नीं है। प्रेम री पांण इज सगलौ संसार आंपणौ बण सकै। जिकौ सुद्ध प्रेमी व्है, उण रै मन में कोई प्रेम रा न्यारा-न्यारा खांना नीं ह्विया करै। उणरै वास्तै तो **'स्वदेशो भुवनत्रयम्'** त्रिभुवन ही वांरौ देस है। इसौ मिनख समै, स्थांन, भासा, कुटुंब तथा आंत सूं बंधी जियौड़ौ नीं रैवै। प्रेम निरंकुस व्है। प्रेम रा सींमाड़ा में बंधण कठैई नीं नड़ै। उणरा नैंना नैंना टुकड़ा नीं व्है सकै। प्रेम तो अखंड है, एक है। प्रेम रा टुकड़ा किया जावै तो उणरी आत्मा इज नस्ट व्है जावै। उठै पछै वैर विरोध अर स्वार्थ रा कीड़ा कल बलणा मांडै। प्रेम तो एक अखंड मिनखपणा नैं मांनै, प्रांणी मात्र में एकता रो अनुभव करै। महात्मा बुद्ध रा सब्दां में—

"प्रेम इज सुरग रो मार्ग है। ओ मिनख पणा रो दूजौ नांम है। सगला जीवां सागै प्रेम भाव राखणौ, इण रो नांम इज साचौ मिनख पणौ है।"

प्रेम तो बेहती नदी रा निर्मल जल जिसौ है। उण जल में खाडा खोचरा में रोकण सूं वो खराब ह्वै जावै। उण में सूं दुर्गंध आवण लागै अर उणरौ सरूप इज बदल जावै। पछै वो मोह, तिरस्कार के वैर-विरोध रो रूप धारण कर लेवै। आजकाल मिनखां नैं हिन्दुस्तान-पाकिस्तान री गलाई प्रेम रा पण टुकड़ा करण रो सौक लागौ है। कारण के भासा प्रेम, प्रांत प्रेम, गांम प्रेम, नगर प्रेम, संप्रदाय प्रेम, जाति प्रेम अर देस प्रेम ए सगला प्रेम रा टुकड़ा इज तो है। ओ सगलौ खंडित प्रेम है अर खंडित प्रेम मुड़दा जिसौ है। उण में प्रेम री संजीवणता नीं लाध सकै। उठै वैर-विरोध रा कीड़ा लाधैला। खंडित प्रेम में सूं तिरस्कार री दुर्गंध आवै अर वो मिनखपणा रा टुकड़ा-टुकड़ा कर नांखै। जिण मिनखां रो संप्रदाय रे प्रति प्रेम ह्वैला वे पोता रा संप्रदाय नैं इज चोखौ बतावैला । पोता रै संप्रदाय रा खोटा सूं खोटा मिनख नैं वे आघौ बांधैला अर पराया संप्रदाय रा चोखा सूं चोखा मिनख नैं वे खोटौ बतावैला। इणीज भांत एक राजा रो पोता रा देस रे प्रति प्रेम पण ह्वै। वो दूजा देसां नैं दुस्मण मांन लेवै अर वां सूं लड़ण नैं तैयार ह्वै जावै। चोरां अर डाकुवां रो प्रेम पण पोतारा घर प्रत्ये इज ह्वै, पारकां रे वास्तै नीं ह्वै। मिनख जे पारका रा घर नैं पोता रे घर जितरौ इज प्रेम करणौ सीख जावै तो पछै पूछणौ ई कांई। संसार रा सगला दुख इज मिट जावै। सुरग धरती माथै उतर जावै। आ वात अथवा ओ सत्य राष्ट्र, धर्म, संप्रदाय अर जाति रे वास्तै पण एक सरीखौ लागू पड़ै। पण भारतवासियां रे माथां में तो ए खराबियां ठूंस र नैं भरयौड़ी है। इणां नैं छोडवारी तो वात इज नीं है। पण इतरी वात याद राखजौ के इण खंडित प्रेम रा संस्कारां नैं नीं हटाया तोड़ण रौ नतीजौ भोगण वास्तै पण तैयार रहणो पड़ैला। भारत रे इतिहास रो पांनौ पानौ इण संकुचित प्रेम रे कड़वास री करुण गाथा वतावै है।

संकुचित प्रेम स्वार्थ प्रधांन है अर विसाल प्रेम परमार्थ प्रधांन है। संकुचित प्रेम रे वसीभूत भाई भाई रो लोही चूसण नैं तैयार ह्वै जावै। कोई पण समझदार मिनख इण नैं प्रेम नीं कैवैला।

आप रै जीवण में प्रेम रो घेरौ ज्यूं ज्यूं मोटौ ह्वै तो जावैला त्यूं

त्यूं आपनैं साचौ आणंद मिलैला। आप रै गांम रो प्रेम सहर कांनी, सहर सूं प्रांत तांई, प्रांत सूं देस तांई अर देस सूं दुनिया तांई पूरा जावैला उण वखत आप रै जीवण में साची खुसी आवैला।

इण वास्तै प्रेम री अखंड धारा नैं वैवती देवणी चाहिजै। इण सूं धीरै धीरै सगलौ संसार आंपणै अपणात पणा रे घेरा में आय जावैला अर आंपां सगला संसार रा ह्वै सकांला।



३

जीवन-जोत जगमगै

भारत री संस्कृति त्याग प्रधांन है। त्याग इज इणरी प्रांण है अर त्याग इज इणरी आत्मा है। जठै त्याग अर वैराग री पूजा व्है ती व्है, उणरी आदर सत्कार होवतौ व्है, उठै इज भारतीय संस्कृति समझणी चाहिजै। पण जठै भोग अर रोग री प्रधांनता व्है, विसय वासना री प्रबलता व्है, ईर्खा री आग लागौड़ी व्है अर वैर-विरोध रो दावानल धधकतौ व्है, क्रोध री आंधी चालती व्है अर दरप रो सरप फूंफाड़ा मारतौ व्है, माया अर लोभ रो भूतैलौ आंटा घालतौ व्है, उण ठौड़ भारतीय संस्कृति नीं व्है सकै।

भारतीय संस्कृतिरा आगीवांणो विसय-वासना री निंदा कीवी है। वीनैं जीवण रो विकार मांन्यौ है। सोनौ चमकतौ व्है तो उणरौ पलकौ पड़ै। पण जे वो कादा में खरड़ियौड़ौ व्है तो उणरौ पलकौ नीं पड़ै। पण ज्यूं ज्यूं उंण माथै सूं कादौ आघौ व्है, वो चमकण लागै। आत्मा रूपी सोनौ पण अनंत काल सूं विकारां रा कादा में खरड़िज्यौड़ौ है। वासना रा मेल सूं कालौ पड़ियौड़ौ है। उणनैं जे चमकदार बणावणौ है तो विकारां नैं धोवणा पड़ैला। वासनावां नैं आघी नांखणी पड़ैला अर संस्कारां नैं जगाड़णा पड़ैला। संस्कारां नैं जगावण रो मतलब है ब्रह्मचर्य में मगन व्है जाणौ। कारण के ब्रह्मचर्य री आग में तप नैं इज आत्मा रूपी सोनौ सुद्ध वण सकै। आत्मा सागै अनंत काल सूं लाग्यौड़ा कर्म फल वल नैं राख व्है जावैला। ओ साधना रो दरवाजौ है। इण सूं मन पवित्र वणै अर कर्म करवा री सगती वधै। इण कारण इज वेदां, आगमां अर त्रिपिटकां में ब्रह्मचर्य री मेहमा वखांणी है। भगवांन महावीर पोतारा एक प्रवचन में कह्यौ हो—"जिण भांत ग्रहां, नखतरां

अर तारावां में चन्द्रमा आगीवांण है, सिरै है, उणीज भांत विनय, सील अर तप वगैरै गुणां में ब्रह्मचर्य खास है।

विणय सील तवनियम गुण समूहं, तं बंभं भगवंतं
गहगणानक्खत्त तारागणाणं, वा जहा उडुपती

—प्रश्न व्याकरण (२-४)

महात्मा बुद्ध पण एकर पोतारा चेलां नैं संवोधतां कह्यौ हो—थे थांरा मन नैं कांमगुणां में आसक्त मत करीजौ

'मा ते कामगुणे रमस्सु चित्तं'

वैदिक संस्कृति रा मोटा मोटा विद्वानां साफ साफ कह्यौ है—

'ब्रह्मचर्य रूपी तप रा बल सूं इज देवतावां मौत नैं जीती है।"

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत।

इण भांत भारत रा रिसि मुनियां अर श्रमण विद्वानां एक सुर सूं ब्रह्मचर्य री मेहमा गाई है अर विकारां री निंदा कीवी है। ब्रह्मचर्य री पालणा सूं सरीर मजबूत वणै, आत्मा ताकतवर वणै अर विचार सुद्ध रैवै। पण विकार अर वासनावां सूं सरीर रो ओज-तेज हटै, आत्मा निरबल वणै अर विचार ओछा वणै। ब्रह्मचर्य जीवण नैं चमकदार बणावै अर विकार उणनैं बरबाद कर नांखै।

रात अंधारी है अर आभै में काली कांठल चढ़ियौड़ी है, गाज रो अरड़ाट उड़ै अर बीजली पलापल करती भबूकै। इसा वखत में दो वटाउड़ा हिमालय परवत री एक घाटी में होयनैं जावै है। वांनै कठैई फदाकां मारता हिरण्या निजरै आवै तो कठैई रंग रंगीला पंखेरु दीखै, कठैई खरगा री सिसकारी सुणीजै तो कठैई हाथी सिंघाड़ता सुणीजै। कठैई सियालियां री वोली सुणीजै तो कठैई सिंघ री भयंकर गर्जना सुणीजै। एक वटाऊ डरनै थर-थर धूजण लागै तो दूजौड़ौ निडर हुवौड़ौ आगै वधै। पे'लौ साथी दूजौड़ा नैं पूछण लागौ—"भाई, थांरे कन्नै इसी कांई चीज है के जिणरै कारण थांनैं डरनीं लागै।" दुजोड़ै पडुत्तर दियौ— म्हारै हाथरी इण लकड़ी नैं देखौ कितरी तो रूपाली अर कितरी मजबूत। केड़ौ फूटरौ अर खांमचाई सूं इण माथै रंग कीनौड़ौ है। देखे जिणरौ ई मन राजी ह्वै जाए। इसी फूटरी अर मजबूत लकड़ी जिकण रै हाथ में ह्वै, उणनैं डर किण बातरो ?" पे'लौ आदमी वोल्यौ—"भाई थांरी वात तो साची है पण देखौ तो सरी, थांरी इण लकड़ी

माथै मैल रा तो थर जमियौड़ा है। वा ऊपर सूं चमकौ भलांई, मांयनै इणरै पोलमपोल है। छतांपण थांनै इण लकड़ी माथै गुमेज है आ अचूंभारी बात है। अबार जे कोई जीव जनावर सांमनै आय जावै अर इण लकड़ी रो कांम पड़ै तो इणरी पोल तुरत खुल जावै।" दूजौड़ा साथी नैं ए वातां आछी नीं लागी। उणनैं तो पोतारी लकड़ी माथै पूरौ भरोसौ हो। उणनैं पक्कौ विस्वास हो के कांम पड़ियां लकड़ी उणनैं दगौनीं देवै। आंपांनैं इण दूजौड़ा वटाऊ री वातां माथै हंसणौ आवैला। आंपां सगलाई इण संसार सागर में वटाऊ रे उनमांन हां। अत्तर अर पाऊडर काम में लेवण वाला मिनख दूजौड़ा वटाऊ रे जिसा इज है। वां मैं विकार, वासना अर अनाचार रो मैल चैठौड़ौ है। इसा मिनख में सूं सार तत्व तो निकलग्यो है अर नकली रूप सूं भबकौ राखनैं दुनिया नैं धोखा में राखणी चावै। इसा मिनख कदैई सुरग में नीं जाय सकै।

जैन धर्म रे अनुसार मोक्ष में जावण वास्तै सरीर रो फूटरापौ जरूरी नीं है। सरीर तो भलांई फूटरौ ह्वौ के कदरूपौ ह्वौ। अष्टावक्र रे ज्यूं वांकौ टूंकौ ह्वौ के सनतकुमार रे ज्यूं फूटरौ ह्वौ, गोल मटोल ह्वौ के लांबा लड़ाक ह्वौ—मोक्ष तो गुण ह्वै तो मिल सकै है। सरीर भलांई किसौई ह्वौ, इण सूं मोक्ष वास्तै कोई अड़चण नीं पड़ै। पण जिणरौ सरीर कमजोर ह्वै, उणनैं मोक्ष नीं मिल सकै। वेद में कह्यौ है—

'नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः'

जिणरो सरीर निर्बल ह्वै, जिणमें सगती नीं ह्वै, उणनैं आत्मा रा दरसण नीं ह्वै सकै। आत्म देव रा दरसण करवा वास्तै विकारां नै जीतणा जरूरी है, इन्द्रियां माथै काबू राखणौ जरूरी है अर राग द्वेस नैं ओछा करणा जरूरी है।

ब्रह्मचर्य जीवण री एक मोटी साधना है। अमेरिकन रिसि थोरो कह्यौ है– "ब्रह्मचर्य जीवण रूपी झाड़रो फूल है अर पवित्रता, पुरसारथ वगैरै उणरा फल है।" वेद व्यासजी रा सबदां में—"ब्रह्मचर्य इमरत है। जिकौ मिनख ब्रह्मचर्य रूपी इमरत नैं चाखै वो अमर ह्वै जावे। उणरौ नांम संसार रा इतिहास में अमिट ह्वै जावै। उणरौ जीवण लाखां बरस तांई दुनिया नैं परगास देवै अर करोड़ां मिनखां नैं मारगै घालै।"

इतिहास इण बात रो गवाह है के जिण महात्मावां ब्रह्मचर्य रो पल्लौ पकड़ियौ, वे सगलाई दुनिया में नांम करनैं गया।

इग्यारै लाख वरस बीत्यां पछैई आज दिन तांई लोग हाल तांई सीताजी नैं याद करै, इणरौ कारण कांई ? असोक वाटिका में सीताजी वैठ्या है अर तीनूं लोक रो राजा रांवण सांमनैं हाथ जोड्यां उभौ है। वो सीता रो मन जीतवा खातर भांत भांत री लटापोरियां करै पण सीताजी उणरौ तिरस्कार करै। अपमांन करै अर लोभ नैं जूती माथै मारै। वे रांवण री नागी तरवार देखनैं पण नीं डरिया। आप वताय सकौ के सीताजी में इसी किसी सगती ही के जिणरी पांण वे रांवण जिसा महाबली रो सांमनौ कर सक्या। सीताजी कन्नैं कोई तोप वंदूक के तलवार नीं ही। वांरै कन्नैं तो फगत एक चीज ही अर वा ही ब्रह्मचर्य रो तेज। इणतेज रे आगै दूजा सगला तेज फीका पड़ जावै अर सगली ताकतां हार जावै।

महारांणी सत्यवती भीस्म पितामह नैं कह्यौ—"भीष्म ! थे म्हारै खातर सगली उमर ब्रह्मचर्य व्रत पालवा री प्रतिज्ञा लीवी ही। पण आजम्हूं थांनैं हुकमदेवूं के कुल नैं कायम राखवा वास्तै थांनै विवाह करणौ पड़ैला।" व्यासजी पण सत्यवती री बात रो टेकौ राख्यौ। सत्यवती फेरूं बोली—"भीस्म, सूरवीरां री संतान पण सूरवीर व्हिया करै, आज मुल्कनैं सूरवीरां री पूरी जरूरत है, इण वास्तै मुल्करे खातर थांनै विवाह करणौ पड़ैला।" भीस्म विचार करनैं बोल्या— इन्द्र राजा पोतारी सत्ता नैं छोड़ सकै, जमराज न्याव नैं तोड़ सकै, आग ठंडक देय सकै अर चन्द्रमा आग बरसाय सकै पण भीस्म आपरी प्रतिज्ञा हरगिज नीं तोड़ सकै। म्हूं विवाह करूं तो एक दो वीरां नैं जनम देराय सकूं पण म्हारौ ब्रह्मचर्य भारत रा कितरा वीरां नैं प्रेरणा देवैला ? ब्रह्मचर्य रे ताकत री पांण सूं इज ओ वीर महाभारत रा जुद्ध मैं अठारै दिनां तांई वांणां री सेज माथै सूतौ रह्यौ। आखौ सरीर बांणां सूं वींधीजग्यौ पण मूंडा माथै सल ई नीं पड़ियौ। वे जीवण री मोटी मोटी समस्यावां रा उकेल काढता हा अर धर्मराज रे सवालां रो पडुत्तर देवता हा। ओ है ब्रह्मचर्य रे तेज रो एक अनोखौ दाखलौ।

भारतीय संस्कृति री गम्भीर वांणी अलेखूं बरसां सूं बताय री है के 'हे मिनख, थनै जो ओ मिनखजमारौ मिलियौ है वो अज्ञांन री अंधारी गलियां में भटकवा वास्तै नीं मिलियौ है, भोग विलास री सूगली खाड़ी

में लोटवा वास्तै नीं मिलियौ है, सांसारिक सुखां खातर आथड़वा वास्तै नीं मिलियौ है अर वासना रो गुलाम वण नैं इण जीवण नैं वरवाद करण वास्तै पण नीं मिलियौ है। जीवण रो खास ध्येय है विकार अर वासनावां नैं जीतणी ? त्याग अर वैराग री निरमल जोत जगावणी। जिकी आत्मा इणभेद नैं जाणलेवै वा जोतिसरूप वण नैं संसार नैं मारग घाल सकै।

जैन साहित रा जगमगता नखतर विजयकुंवर री बात आप सगलाई जांणौ हो। आ कोई इतिहास री कल्पना कोयनीं, आ तो साची वात है। इण कुंवर रो जीवण समंदर री गलाई अथाग है। हजारां वरसां सूं उण जीवण री चरचा करी जावै पण दरियारी गलाई उणरी कोई थाग नीं लागौ अर नीं लागैला।

जिणरै जीवण में ब्रह्मचर्य रो तेज है, सदाचार रो वल है अर त्याग री जोत है, वो इज जीवणआगीवांणवणसकै। इसौ जोवणइज इतिहास नैं कोई नवौ मार्ग वतावै। देवतावां रो राजा इन्द्र पण इसा मिनखां रे आगै पोतारौ माथौ झुकावै। 'नमो वंभयारिस्स' कैयनैं उणनैं नमस्कार करै। संसार री सगलीं ताकतां ब्रह्मचर्य रा वखांण करै। इण कारण इज भारतीय संस्कृति रा आगीवांणां साधना माथै पूरौ जोर दीनौ है। पण जिकण देसमें आध्यात्मिकता रो अखूट भंडार रह्यौ है, जठै अरिष्टनेमि, भीस्म पितामह, सती सीता अर सावित्री जिसा रतन पैदा ह्विया उठै इज आज चरित्र रो देवालौ निकलणौ सरु ह्वैगौ है। आ हालत देखनैं मन में वड़ौ दुख ह्वै। भगवांन महावीर, महात्मा बुद्ध अर कर्मयोगी श्रीकृष्ण रा उपदेसां सूं आ धरती पवित्र ह्वियौड़ी है। आंपणौ देस धर्म प्रधांन गिणीजै अर संसार रा दूजा देसांनैं मारग वतावै। उण देस में इज आज सिनेमा देख-देख नैं लोगां रा विचार वड़ा ओछा ह्वैग्या है, भोग विलास री अठै होलियां सुलग री है तो पछै भगवांन इज मालिक है। आज अठारा मिनख पोतारी मरजादा नैं पण धीरै-धीरै छोड़ता जावै है। नैंना-नैंना टाबरियां नैं देखौ तो वे सिनेमा रा सूगला गीत गावता मिलैला। नीं तो वे पोतारै मा वापां री परवा करै अर न बूढा वडेरांरी। इण भांत मुल्क रो नैतिक पतन चालू है रापटरोल दिन दिन तरक्की माथै है। तपेदिक रै ज्यूं ए रोग रा कीटाणु मुल्क रा सरीर में फैलता जावै है। इणां नैं रोकणरी, अथवा मिटावण री जिम्मेवारी मोट्या रां ऊपर है। पण इणरै वास्तै पे'लौ पे'ल तो

मोट्यारां नैं पोता रै जीवण रो महातम समझणी पड़ैला अर सागै-सागै नैतिकता री कीमत पण आंकणी पड़ैला। मोट्यारां नैं एक वात आछी तिरियां समझलेवणी चाहिजै के ओ जीवण, आ मांनखा जूंण भोगां री आग में भस्म करवा वास्तै नीं हैं, आ जवानी अर मोट्यार पणारो तोफांन समाज अर मुल्क नैं वरवाद करण वास्तै नीं है। इणरी तो कीमत घणी ऊंची है, इणरौ मोल घणौ मूंघौ है।

आप इंगलैंड रा नांमी कवि कीटस् रो नांम सुण्यौ व्हैला। उणां वांरी एक कविता में भोग विलास रैं अनिस्टां रो चित्रांम दीनौ है। वे एक इसा वीर सैनिक सूं वात करै जिको कोई जमांना में भाखर भांगण री हिम्मत राखतौ पण आज बूढौ व्हैग्यौ है अर जिकणरी इंद्रियां सगली निवली पड़गी है। वे उणनैं पूछै कै ए वहादुर सैनिक ! थारै दुख कांई है ? थारौ मूंडौ पीलौ कीकर पड़ग्यौ है ? इण सरवर री तीर माथै, जठै वरफ घणी पड़वा सूं सगली घास ई वलगी है अर कठैई चिड़ी रो जायौ ई निजरै नीं आवै, थूं एकलौ कीकर फिरै है ?

What can all these.
Khight at arms,
Alone and paleby hoitering ?
The Sedge is writhered from the lake,
and no birds Sing ....'

पड़ुत्तर में वो फौजी आदमी बोल्यौ—एकर घणा वरसां पे' ली म्हूं अठै इण घास रा मैदांन फिरतौ हो के म्ह नैं एक रूपाली लुगाई मिली। उणैं हाव-भाव सूं अर नेणां रा वांणां सूं म्हनैं मोह लियौ। वा म्हनैं पोतारैं घरै लैयगी। उठै जायनैं म्हैं देख्यौ के उणरै घर में मोटा-मोटा राजा, महाराजा, लिछमी रा लाड़का अर कई फौजी अफसर बैठा है। पण वांरी सगलांरी बड़ी खराब हालत ही। उणां सब जणां म्हनैं घणौ ई समझायौ के थूं अठासूं नाठ जा, नीं तो थारी पण म्हांरै जिसी हालत होय नैं रैवैला। पण म्हूं नीं मान्यौ। अर छेवट वांरा बोल साचा निकलिया। इण कारण इज आजम्हूं इण भयंकर जगै एकलौ रखडूं हूँ।

And this is why I sofourh here
A lohe and paleby loitering,

Though the sedge is withered from the lake and no birds sing............

भोग विलास रा फंदा में गला तांई फस्यौड़ा मोट्यार रौ कवि जबरौ चित्रांम दीनौ है। जिकौ मिनख वासनावां रो गुलांम वण जावै, इंद्रियांरो दास वण जावै अर जीवण रो मारग चूक जावै। उणां री सांवरियौ इज मालिक है। इण फौजी आदमी री पण इसीज हालत हुई ही।

आ जांणौ के इण भारत री धरती माथै दो नगर वड़ा नांमी गिणीजै। पे' लौ द्वारका अर दूजौ लंका। कोई जमांनौ इसौ हो संसार री सगली माया द्वारका में भेली व्हैं गी ही। जादवां री रिध सिध रो कोई पार नीं हो। पूरी द्वारका नगरी सोना री वण्यौड़ी ही। सगला संसार में द्वारका री आंण-दुहाई फिरती ही। जादव कुल रा मोट्यारां में जठा सूधी कुरवांनी अर निस्वारथ पणा री भावना रही, अन्याय, अत्याचार, अनाचार अर भ्रस्टाचार सूं नफरत रही, उठा तांई वांरौ वैभव कायम रह्यौ। उठा तांई द्वारका नगरी री सोभा पण कायम रही। पण दिन लाग्यां जादव कुल रा मोट्यार भोगी वणग्या, पोतारी जात नैं भूलग्या, नैंना मोटारी मरजादा तूटगी, सोनैंरी मै' लां री छिया में मिनखपणौ ढकीजग्यौ, उण वखत वांरौ वैभव पण खूटतां जेज नीं लागी। सोनैंरी नगरी एक छिन में धूड़ में रुलती निजरां आई।

आपनैं इण वातरी पण आछी तिरियां जांण है कै जण सूंधी रागस पोतारी मरजादा में रह्या। लोक-कल्यांण री भावना राखतां थकां त्याग री मैंमा नैं जांणी, उठा सूंधी सोनैंरी लंका वधतीजगी। सगली दुनियारौ वैभव रागसां रा चरणां में आलैरवा लाग्यौ। पण जरै वे सोना रा अभिमांन में पोतारी औकात नैं भूलग्या, अन्याय अर अत्याचार माथै उतरग्या तो वांरै वैभव अर टणकाई खूटतां जेज नीं लागो। देखतां-देखतां सोनारी लंका राख वणगी।

दुनिया तो कैवै के जादवां नै द्वैपायन रिसी खलास कीना अर रागसां रो खेंगाल रांम काढ्यौ। पण म्हूँ तो कैवूं कै नीं तौ द्वैपायन रिसी वांनै खलास कीना कै नीं रांम वांरौ खेंगाल काढ्यौ। वांरौ तो गालियौ भरियौ वांरी अनीति अर वांरै अन्याया सूं। मिनख पोतारी हिम्मत सूं इज जीवै अर पोतारै कवाड़ां सूं इज मरै। कह्यौ है कै—

रांम किसी कौ मारै नीं अर नीं हत्यारौ रांम ।
ए तो आपौ आप मर जाएला करकर खोटा कांम ।।

कारण कै अन्याय नास रो मूल है—

अन्याय से जात है, राज तेज अर वंस ।
तीनूं घर ताला लग्या, रांवण, कौरव कंस ।।

इणीज भांत कोई पण मुल्क जे आगै वधै तो पोतारी ताक़त पर वधै अर नीति माथै चालनैं वधै । अर वो वाधैपौ उठा लग इज कायम रैवै कै जठा लगा वो नीति नीं छोड़ै । एकर रोम रा प्रसिद्ध इतिहासकार गीबन नैं किणैई पूछ्यौ कै रोम इतरौ आगै कीकर वध्यौ ? गीबन जवाब दियौ—"नीति अर सादगी सूं ।" उणैं थोड़ौ अटकतां अटकतां फेर पूछ्यौ कै रोम रो पतन कीकर हुयौ ? गीबन पड़ुत्तर दियौ—"भोग विलास में पड़नैं ।" गीबन रा ए आखर सोलूं आना सही है । जिण मुल्क री प्रजा सदाचारी ह्वै, उठारौ समाज जरूर आगै वधै अर वो मुल्क पण ऊंचौ चढ़ै । पण जिण बखत कोई प्रजा, समाज कै मुल्क भोग विलास में पड़ जावै तो पछै उणरौ नास ह्वै तांई जेज नीं लागै । थोड़ा दिनां में इज दुनिया उणनैं भूल जावै । फगत भूल इज नीं जावै पण उणरौ नांम ई नीं लेवणौ चावै । हजारां-लाखां बरस बीतग्या पण आज दिन तांई कोई बाप पोतारै बेटा रौ नांम रांवण नीं दीनौ । यूं रांवण कोई कम नीं हो । वो एक मोटौ राजा हो । जंगी मै'ल-मालियां में रैवण वालौ अर विमांणां में मुसाफरी करण वालौ हो । सागर उणरा पग पखालतौ अर मिनख तो कांई, देवता तक उणरै आगै लटका करता । इसौ लांठौ राजा ह्वै तां थकांई कोई पण बाप पोतारै बेटारौ नांम रांवण नीं दियौ । इणरौ कारण कांई ? विचार कियां आपनैं पतौ लागैला कै रांवण खनैं यूं तो सम्पदा अखूट ही, पण जीवण रूपी सम्पदा रो दैवालौ निकलग्यौ हो' सोना रा मै'ल-मालिया तो मोकला ई हा, पण सदाचार रूपी मै'ल-मालिया धूड़ भैला ह्वै चुक्या हा । समुन्दर ऊपर तो उणरौ राज चालतौ हो पण मन रा विकारां पर बिल्कुल काबू नीं हो । इण कारणां सूं इज कोई पण बाप पोतारी संतान रो नांम रांवण नीं राखणो चावै । फगत रांवण इज नीं, पण उणरै कुटुम्ब रै मिनखां रौ कोई पण नांम लोगां नैं चोखौ नीं लागै । इण वास्तै इज कोई पण पोतारै बेटा रौ नांम कुम्भकर्ण कै विभिसण नीं राखै, कोई पण आपरै बेटी रो नांम मंदोदरी कै सूर्पणखा नीं राखै ।

वात रौ सार ओ कै कोई पण मिनख नैं भलांई चावै जितरी ई इज्जत मिल जावौ, उणरै वैभव रो दरियाव भलांई छोलां लेवण लाग जावौ, बुद्धि रो परगास भलांई पलापल करण लाग जावौ, पण जे मन में पवित्रता नीं ह्वै, विचारां में उच्चता नीं ह्वै अर इंद्रियां ऊपर संयम नीं ह्वै तो सुख अर सांतिरा तो दरसण दुरलभ इज है।

जिण मिनख रो मन भोग विलास में लाग्यौ रैवै, वासना री गलियां में रखड़तौ रैवै अर विकारां रै ह्वाला में वैवतो रैवै, वो मिनख आत्मिक तो कांई पण सांसारिक वातां में ई आगैनीं वध सकै। वैवारिकता में ई उणरी कोई पूछ नीं ह्वै। महाभारत रा जुद्ध में अभिमन्यु किण भांत मरियौ वा आपनैं जांण है? कैवै है कै अभिमन्यु रो उत्तरा सागै विवाह हुयां नैं मोकला दिन ह्विया हा, पण थांरौ मिलाप नीं हुयौ हो। जिकण दिन अभिमन्यु नैं जुद्ध में जावणौ हो उण सागै दिन इज वो उत्तरा नैं मिल्यौ हो। अभिमन्यु री हार रो खास कारण ओइज हो।

स्वांमी रामतीरथ वांरा एक प्रवचन में कह्यौ हो कै मोहम्मद गौरी नैं पृथ्वीराज चह्वाण वारै वेला हरायौ। इणरौ कारण ओ हो कै जिण वखत उणनैं जुद्ध में जावणौ होवतौ वो पूरौ संजम पालतौ। पण तेरमी वेला वो वासना रा जाल में फंसग्यौ। उणैं गेला रै ज्यूं संयोगिता नैं कह्यौ—"संयोगिता! आज म्हनैं काठी कमरां वांधणी है।" पण वापड़ा वासना रा गुलांम काठी कमरां कियां वांध सकै? पृथ्वीराज नैं छेवट हारणौ पड्यौ अर इण भांत भारत गुलांम वणग्यो। वाटरलू रा जुद्ध में नेपौलियन री हार हुई, इणरौ कारण पण ओइज हो। पोतारी इंद्रियां माथै पूरो संजम राखवा सूं अर वासना वां पर काबू राखण सूं इज वो मुल्क रो माझी सेनापति वण्यौ हो। पण छेवट उणनैं नीचौ गिरणौ पड्यौ। इणरो कारण ओ कै एक गांमड़ा में वो एक नाई रै घरै रैवतौ। नावण कीं चंचल ही। नेपौलियन रो सरूप देखनैं वा उंण पर फिदा ह्वैगी। उणैं नखरा करनैं नेपोलियन नैं रीझावणौ चाह्यौ। पण नेपौलियन नैं पोतारी पढ़ाई सूं जरापण नवरास नीं मिलतौ हो। नावण कीं देखती जरैई नेपौलियन पढाई में मगन लाधतौ।

मुल्क रौ माझी सेनापति वण्यां पछै नेपौलियन एकर फेरूं उंण गांमड़ा में पूगौ। नावण की दुकांन रा ओटला माथै वैठी ही। घोड़ौ थांव नैं नेपौलियन उणनैं पूछ्यौ—थारै सागै नेपौलियन वोनापार्ट नांम

रो एक मोट्यार कोई वखत रैवतौ हो, थनैं याद है ? लुगावड़ी रीसां बलती बोली इसा नीरस ठूंठ नैं म्हूं याद ई नीं करणी चावूं । उणं कोई दिन म्हारै सागै हंसनैं वात ई नीं कीवी । वो कोई मिनख हो ? वो तो गूंगौ बोलौ ढोर हो ढोर !

नेपौलियन हा.. हा....! कर नैं हसण लाग्यौ । वो वोल्यौ—"थारौ कवैणौ सोलूं आना सही है । नेपौलियन जे थारा जाल में फंसग्यौ ह्वैतो तो आज मुल्क रौ माझी सेनापति नीं वण सकतौ । संजम अर नियम रा जोर सूं इज वो आगै वध सक्यौ है ।" पण वो इज नेपौलियन पोतारी छेली उमर में वासनावां रौ गुलांम बणग्यौ अर इण कारण इज छेवट उणरी हार हुई ।

तुलसीकृत रांमायण रो एक प्रसंग याद आवै । वीर मेघनाद नैं मैदान में उतरियौ देखनैं रांम सेना में खलवलाट माचगी । उंणरौ सांमनौ करणरी कोई री हिम्मत नीं पड़ी । रांम वोल्या—"जिण धणी वारै वरस तांई पूरा संजम सूं ब्रह्मचर्य री पालणा करी ह्वै वोइज धणी इणरौ सांमनौ कर सकै ।" आ वात सुणतां पाण लक्षमण मैदांन में उतरियौ । उणरै ब्रह्मचर्य रा तेज सांमां मेघनांद री ताकत झांखी पड़गी। वो बलि रा वकरा री गलाई एकर जोर सूं वर कियौ अर खतम ह्वैग्यौ । इणीज भांत रो एक प्रसंग महाभारत में पण आवै । जिण बखत अर्जुण चित्ररथ गंधर्व नैं हरायौ । उण वखत चित्ररथ वोल्यौ—

ब्रह्मचर्यं परोधर्मः स चापि नियतस्त्वयि ।
यस्मात्तस्मादहं पार्थ ! रणेऽस्मिन् विजितस्त्वया ।

हे अर्जुण ! ब्रह्मचर्य इज साचौ धर्म है । इण साचा धर्म री संजम सूं थैं पालणा कीवी है अर इण कारण इज म्हारी हार हुई है ।

इण भांत आपां निसंक होय नैं कैय सकां कै सगली तपस्यावां में ब्रह्मचर्य सबसूं मोटी तपस्या है । जिकौ नसीबवांन इण तप री पालणा करै, उणरौ तो बेड़ौ पार लाग जावै' मांनखां जूंण रौ असली तेज कठै, ओज कठै । उणांनैं रंग, पाउडर, लवंडर पोत नैं मूंडौ रातौ करणौ पड़ै । ओ तो थाप देयनैं रातौ मूंडौ राखणौ है । वांनैं आंपरा मूंडां माथै असली चमक लावणी है; ललाट माथै असली तेज लावणौ है तो वांनै ब्रह्मचर्य री पालणा करणी पड़ैला । इण व्रत री पालणा सूं इज जीवण रो हीर प्रगट ह्वैला ।

卐

४

कर्त्तव्यनिस्ठा

संसार में कर्त्तव्य अथवा फर्ज एक मोटी चीज है। समाज, धर्म अर मुल्क सगला कर्त्तव्य रा थांबा माथै उभा है। जे धर्म गुरु, समाज रा आगीवांण कै मुल्क रा नेता पोत पोता रै फर्ज री पालणा नीं करै तो संसार में हाहाकार फूट जावै। सगलां रा ई पोता-पोता रा फर्ज है अर वांरी ठीक तरै सूं पालणा करवा सूं इज संसार में सांति कायम रैवै। साधु संतां, रिसि मुनियां अर समाज रा आगीवांणां नैं पोता रै फर्ज री पालणा करणी तो घणीज जरूरी है। धर्म, मुल्क अर समाज रै प्रति साधु संतां रा पण कई फर्ज होवै। इण री पालणा में जरा पण आलस नीं ह्वै णी चाहिजै। समभलो कै साधु संत समाज सूं न्यारा है। यूं ह्वै तां छतां। पण वांरी समाज रै प्रति अर मुल्क रै प्रति कर्त्तव्य तो है इज कमल रो फूल कादा वाला पांणी में जनम लेवै। इसा सूगला पांणी में पण सुगंध आवै, इणरो कारण कमल है। संसार में रैवतां थकां ई संसार सूं आघो रैवणो आ सिक्षा आंपां नैं कमल सूं मिलै। इण जगत में कई मोटा मोटा महात्मा व्हिया है। उंणां आंपां नैं ओइज वोध पाठ दीनो है। अर उंण महात्मा वां पण पोता रै फर्ज री पूरी पालणा कीवी है, जरै इज वे मोटा गिणीज्या है। जिको जितरो मोटो वाजै उंणै उतरो इज पोतारै फर्ज नैं ओलखियौ है। पोता रा फर्ज नैं भूल नैं उण सूं वेपरवाही राखनैं कोई पण मिनख संसार में आगै नीं वध सकै। इण कारण मांनखा वास्तै फर्ज अथवा कर्त्तव्य सगलां सूं जरूरी चीज है। सगला संसार री सुव्यवस्था रो आधार कर्त्तव्यनिष्ठा ऊपर है। आ स्रिस्टी आंपां नैं रात दिन ओ इज उपदेस देवै। दुनिया में जितरी ई कुदरती चीजां है, वे सगली पोत-पोता री फर्ज पूरी तरै सूं

निभावै अर पलक-पलक माथै आंपांनैं पण इणरी सिक्षा देवै। सूरज, चंद्रमा, ग्रह, नखतर, फल, फूल, झाडपांन, पवन अर पांणी सगलाई आप आपरा फर्ज में लाग्यौड़ा है। माता टावर नैं जनम देवै अर टावर रै वास्तै इज सगला सुखां नैं छोड़नैं पोतारै कर्त्तव्य री पालणा करै। इण कांम में उंणनै सुरग ई फीकौ लागै। भाखर रा भाठां में गुलाब रो फूल खिलै। च्यारूं मेर उणरी सुगंध फैल जावै। उठी हौयनैं जावण वाला वटाऊड़ा उणरौ अणछक आणंद लूटै। छेवट वो फूल कुलमीज नैं धरती माथै खिर जावै। उणैं पोतारौ फरज वजाय दियौ। इण नैं फर्ज री मूक पालणा कैवणी चाहिजै। विचार करां तो इण सूं आंपांनैं कितरी प्रेरणा मिलै। आखी रांमायण कर्त्तव्य पालणा रै दाखलां सूं भरयौड़ी है। बाप रौ बेटा रै प्रति अर बेटा रौ बाप रै प्रति, भाई रो भाई रै प्रति, धणीरौ लुगाई रै प्रति अर लुगाई रो धणी रै प्रति, सासु रौ बहू रै प्रति अर वहू रौ सास रै प्रति, राजा रौ प्रजारै प्रति अर प्रजा रौ राजा रै प्रति, रिसि मुनियां रौ समाज रै प्रति अर समाज रौ रिसि मुनियां रै प्रति, मित्रां रौ मित्रां रै प्रति, संतान रो मा बाप रै प्रति अर मा बाप रौ संतान रै प्रति कांई फर्ज होवणौ चाहिजै, रांमायण में आ बात पग पग माथै बतायौड़ी है। रांमायण रौ पांनौं-पांनौ कर्त्तव्य रा रंग सूं भर्‌यौड़ौ है। ओ ग्रंथ कर्त्तव्य पालणा रो जीवतौ जागतौ चित्रांम है। इण में जीवण री सगली गूंसलियां नैं कर्त्तव्य रा हाथां सूं खोलण री तरकीब बताई है। जिकण मुल्क, समाज, जाति अथवा कुटुंब में फर्ज बजावण री भावना ह्वै उण जगै आठ सिधियां अर नवनिधियां रौ वासौ ह्वै। जिण कुटुंब रा मिनख पोत-पोतारौ फर्ज आछी तरियां निभावता ह्वै, उठै अवस करनैं लिछमी रौ वासौ ह्वै। कर्त्तव्य री मरियादा नैं नीं लोपी जावै उठै सरस्वती री पण किरपा रैवै। उंण घर में सांति रौ वासौ ह्वै अर जोगवाई पण हाजर रैवै। जिकण मुल्क में कर्त्तव्य पालण री भावना ह्वै वो मुल्क अवस करनैं आगै वधै। सगला संसार में उंण मुल्क री जै-जैकार ह्वै।

हरेक घर कर्त्तव्य पालण सीखावण वाली पे'ली पोसाल है। अठा सूं इज कर्त्तव्य पालण री सिक्षा रो श्री गणेस ह्वै। कुटुंब पछै जात, गांम, समाज, धर्म अर राष्ट्र रै प्रति कांई कर्त्तव्य है इणरी शिक्षा देवणी चाहिजै। इण सूं इज मांनखा रौ जीवण सुखी बण सकै। कर्त्तव्य रा तांणा सूं इज मांनखा रौ जीवण रूपी कपड़ौ आछी तरियां विणीज

सकै। ओ सगली संसार कर्त्तव्य री डोर सूं वांधोड़ी है। जिकौ मिनख इण डोर नैं तोड़ नैं नाठ जावै वो जिनावर वाजै। जिनावर जिण वखत डोर तोड़ण लागै, उणरै सोट उड़ै अर छेवट हार नैं खूंटा माथै आवणौ पड़ै। ठीक इणीज भांत जिकौ मिनख कर्त्तव्य री डोर तोड़ नैं नाठण रा सरंजाम करै, उणरी कमर माथै कुदरत री लकड़ी पड़िया विनां हरगिज नीं रैवै। समाज अर रास्ट्र दोन्यूं उणनैं सिक्षा देवै। सरकार उंणनैं उठाय नैं जेल में नांख देवै। खरी वात आ है कै कर्त्तव्य पालण में कमी राखणी, मिनखपणा में कमी राखणी है।

कर्त्तव्य है वो जीवणरूप मांनसरोवर रो हंस है। उंणरै रैवण रौ ठिकांणौ मांनसरोवर इज है। इसौ मिनख इज विवेक रा रूपाला मोती चुग नैं पोतारौ जीवण आणंद सूं विताय सकै। जे एक वखत ई कर्त्तव्य रूपी हंस मांन सरोवर सूं उड जावै तो उठै वैर विरोध रो अखाड़ौ वण जावै। इण वास्तै हंस नैं मांनसरोवर सूं उडवा इज नीं देवणौ चाहिजै।

टावर रै दांत आवण लागै उंण वखत मा उंणनैं दवाई पावै, जिणा सूं दांत सोरा निकलै। इणीज भांत मांनखा नैं कर्त्तव्य री गुटकी पण कुदरत सूं इज मिलै। पण गुटकी लेवतां वखत कोई टावर उल्टी कर नांखै अर कोई कोई कड़वी देखनैं थूक नांखै। उंण हालत में ओ समझ लेवणौ चाहिजै कै उणरौ विकास ठीक ढंग सूं नीं ह्वै सकै। इसौ मिनख समाज अर मुल्क रै वास्तै दुखदाई निवड़ै।

कर्त्तव्य मानखा जीवण रौ इमरत है। जिकौ मिनख इणरी पालणा करै वो उण मिनख नैं अमर वणाय नांखै। रिसि मुनियां कह्यौ है—

उत्तिष्ठत अमृत पुत्राः!

हे इमरत पुत्रो! हे कर्त्तव्य वीरो! जागौ।

जिकौ कर्त्तव्य रूपी इमरत री पांन करैला वो तौ जागै लाइज। वो आगै तरक्की करैला इज। मरियां पछैई वो अमर ह्वै जाएला। दुनिया उंणनैं महापुरुष गिणैला। मिनख नैं साचा मिनख अर साचा मिनख नैं महापुरुस वणावण वालौ कर्त्तव्य इज है। नीं रांमायण में रांम है अर नीं गीता में श्री कृष्ण है। नीं वाईवल में ईसामसीह है अर नीं भगवती सूत्र में भगवांन महावीर है। ए सगलाई महापुरुष पोता पोतारा कर्त्तव्य मंदिर में है। आज आपां देखां के मांनखौ मंदिरां, मस्जिदां, चर्चां, उपासरां, गुरुद्वारां, रांमद्वारां अर धर्मस्थानां में जावै अर उठै पोता रै

इस्ट नैं पूजै । उणां रै आगै नमै अर वांरा गुणगान करै । इणरौ कारण कांई ? साची बात तो आ है कै इण महापुरुसां पोता रा फर्ज नैं आछी तरियां बजायौ अर संसार नैं फर्ज बजावण रो उपदेस दीनौ इण कारण इज वांरी इतरी कीमत है । पण सोचणौ ओ है कै इणांरी पूजा करण वाला मिनख, कोरी पूजा इज करै कै इणां रै ज्यूं पोतारा फर्ज नैं पालै पण है ? म्हारा ख्याल सूं कोई विरलौ इज इसौ ह्वैला जो इण बात माथै ध्यांन देवतो ह्वैला। बाकी तो सगला माथौ नमावणिया है, असली भेद नैं जांणणिया कम इज है । कारण कै कर्त्तव्य री तप्यौड़ी सड़क माथै चालवानैं कोई पण तैयार नीं है । आज मांनखौ सस्तौ अर सरल मारग खोजै । बिना तकलीफ जीवणौ चावै । कर्त्तव्य री पालणा कियां बिना इज जीवण में सफलता मेलवणी चावै । पण सस्तौ सोधवा री आ विरती मांनखा नैं भुलावा में नांखै । एक कैवत है कै सस्तौ रोवै बार-बार अर मूंघौ रोवै एकबार । बैपार में जिकौ बेपारी सस्ता पण रा लोभ में पड़नैं खरीददारी मोकली कर नांखै उणनैं छेवट पछतावणौ पड़ै । पण मूंघी चीजां खरीदण वाला नै पछतावणौ नी पडै । मूंघी चीज टिकाऊ अर मजबूत ह्वै । फगत खरीदतां वखत इतरौ जरूर लागै दांम घणा लागा । इणीज भांत जिकौ मिनख कर्त्तव्य रूपी मूंघी चीज नैं छोड़नैं अकर्त्तव्यरूपी मौज सौक री अर स्वार्थ री चीज कांनी मूंडौ करै, उण नैं छेवट पछतावणौ पड़ै । कारण कै वो एकलौ पड़ जावै अर दुंखी ह्वै जावै । पण जिकौ मिनख कर्त्तव्य रा राजमारग माथै चालै, उणनैं कोई दुख नीं उठावणौ पड़ै । उणनैं निराई संगी साथी पण मिल जावै अर वो आप रा ध्येय कांनी आगै वधतौ रैवै ।

आज रो मांनखौ दरिया नैं लांघ सकै, धरती माथै भपाटा सूं दौड़ सकै अर आकास में पंखेरू री गलाई उड सकै । धरती, आकाश अर समंदर तीनूं माथै उणरौ पूरौ कब्जौ है । इतरौ ह्वैतां छतांपण विज्ञान उणनैं ढंग सूं जीवणौ नीं सिखायौ । मिनख बणनैं किण रूप सूं धरती माथै रैवणौ चाहिजै ओ नीं बतायौ । इण कारण इज वो आज दुखी है । आज उणनैं डूंगर बलती तो साफ दीसै पण पगां बलती कोय दीसैं नीं । भूगोल रा विद्यार्थी नैं पूछ्यौ जावै कै राजस्थांन कठै है । तो वो तुरत नकसा माथै आंगली दैयनैं बताय देवैला । पण जे उंणनै आ बात पूछी जावै कै थारै गांम में गरीबां रा घर कठै है तो फांफा मारण लागैला ।

इतिहास रो विद्यार्थी आ वात तो बताय देला कै महाराणा प्रताप री मौत किसा बरस में हुई पण आ स्यात् इज बताय सकै कै उणरै दादा अथवा पड़दादा री मौत किसा वरस में हुई। कैवण रो मतलव ओ कै बो दूर री वातां तो जांणणी चावै पण नजदीक री बातां कांनी ध्यांन ई नीं देवै। नजदीक री बातां जांणण सूं कांई परीक्षा में नंबर तो मिलण सूं रह्या। नंवर तो छेवट पाठ्य पुस्तकां घोखण सूं मिलैला। पछै नजदीक री वातां याद राखण सूं कांई मतलव ? पण याद राखौ, कै मिनख रौ कांम मिनख सूं पड़ै। इण वास्तै दूजां सागै आंपणौ संबंध मीठौ किण भांत रैय सकै, इण वातरौ पूरौ ध्यांन राखणौ चाहिजै। वस, आ बात जांणवा वास्तै इज कर्त्तव्य रौ ज्ञांन जरूरी है। कर्त्तव्य ज्ञांन विनां कै कर्त्तव्य आचरण विनां मिनख समाज में रैवतां थकांई जिनावर जिसौ है। जिनावर जूंण में जनम लैयनैं पण जो जिनावर पोतारौ फर्ज पालै तो वो मिनख करतांई वत्तौ। अर मांनखा जूंण में रैवनैं ई कर्त्तव्य रो ध्यांन नीं राखै तो जिनावर करतांई खोटौ। महाराणा प्रताप रौ घोड़ौ चेतक पोता रै फर्ज री पालणा करनैं मरियौ तो वो संसार में अमर ह्वैग्यौ। जटायु पंखेरू ह्वैतां थकांई वो महासती सीतांरी रक्षा में रावण रै हाथ सूं कटियौ, तो उणरौ नांम पण संसार में अमर ह्वैग्यौ।

ए सगला धर्मसास्त्र, धर्मग्रंथ अर पोथी पांनड़ा कांई कैवै ? ए सगला मंदिर मस्जिद अर गिरजाघर कांई सिखावै ? ए सगला महापुरसां रा जीवण चरित कांई वतावै ? इण सगली पाठ सालावां, कॉलजा अर विस्वविद्यालयां में कांई सिखायौ जावै ? आ देवतावां री अर रिसि मुनियां री भगती क्यूं करी जावै ? इण सगली वातां रौ एक इज जवाब है कै ए सव कांम आंपानै कर्त्तव्य पालण री सीख दैवै।

एक मिनख जिकौ भणियौ-पढ़ियौ है, पूजा-पाठ करण वालौ है, धर्म सास्त्रां री वातां सूं उणरौ मगज भरियौड़ौ है, पण जे उंणनैं कर्त्तव्य रो ज्ञांन नीं है तो वो जागतौ थको ई ऊंधांण जिसौ है। मिनख ह्वैतां थकांई जिनावर जिसौ है अर आंख्यां ह्वैतां थकांई आंधा जिसौ है। इसा मिनख नैं जीवण म सफलता कियां मिल सकै ? जिकण मिनख पोतारै कर्त्तव्य री पालणा नीं कीवी उणनैं दुनिया मांन कीकर दैय सकै। किरिया करम कीधां सूं कै भगती रौ थोथौ पाखंड कीधां सूं कोई कारज नीं सरै। पोतारै कर्त्तव्य रौ ज्ञांन नीं होवै तो वारलौ आडम्बर सव फालतू है।

'न चित्ता तायए भासा कुओ विज्जाणुसासणं'

जिकौ मिनख पोता रा जीवण में कर्त्तव्यनिस्ट नीं होवै उणरी विद्या कांई कांम री, उणरौ ज्ञांन कांई कांम री ? मांनखा नैं पोतारै कर्त्तव्य रौ ज्ञांन सगलां सूं पे'ली ह्वैणी चाहिजै । इणरै बिना दूजा सब ज्ञांन नकांमा है। कर्त्तव्यनिस्ठा नैं आंपां मा री ओपमा दैय सकां। मारौ प्रेम कदेई ओछौ नीं पड़ै । मा बेटा रै बीच में जचै जितरी खटपट ह्वै, भलांई कपूत बेटौ मा नैं मारण नैं तैयार ह्वै जाओ, पण मा रै हिवड़ा में ममता रौ जिकौ अखूट झरणौ वैवै है, उणमें कोई कमी नीं आय सकै। मांनखा जूंण रै सागै कर्त्तव्यनिस्ठा रौ सगपण ई मा जिसौ इज पवित्र, अखंड अर अटूट है। कर्त्तव्य हीणा मांनखा जूंण री तो कल्पना करणी पण विरथा है। विसौ जीवण मुड़दा जिसौ अर खोलियौ मात्र है।

आपनैं यूं लागतौ ह्वैला कै जिण कर्त्तव्य रै वखांणां रा इतरा धोरा बांध्या जावै है, वो कर्त्तव्य है कांई चीज ? इणरौ अर्थ कांई है ? विद्वांनां इणरी औलखांण कांई बताई है ? खरोखर ओ एक अबखौ सवाल है। घबदेतांणीरौ इणरौ जवाब दिरिज जावै, इसी से ली बातनीं है। गीता में श्री कृष्ण अर्जुन नैं कह्यौ है—

'किं कर्म किं कर्मेति, कवयोऽप्यत्र मोहिता:'

कांई कर्त्तव्य है अर कांई अकर्त्तव्य है, इणरौ फैसलौ मोटा-मोटा विद्वांन पण नीं कर सक्या हैं।

सागण कांम पड्यां पोतारा कर्त्तव्य नैं ओलखणौ घणौ अबखौ कांम है। मोटा-मोटा समझदार मिनख पण इण में गलती कर जावै अर दूजौ मारग पकड़ लेवै। इण भांत जे कर्त्तव्यां री गिणती करण बैठां अथवा जुदा जुदा मिनखां रा कर्त्तव्य तै करण बैठां तो निराई पोथा भरीज जावै। अर पोथा भर्यां पछैई सही फैसलौ नीं ह्वै सकै। एक मिनख रै वास्तै कोई वखत जिकौ कांम कर्त्तव्य है वो इज कांम कोई वखत उणरै वास्तै अकर्त्तव्य ह्वै सकै। कोई मुल्क में कोई वखत जिकौ कर्त्तव्य गिणीजै, समय बीत्यां वो अकर्त्तव्य पण गिणीज सकै। एक मिनख रै वास्तै जिकौ कर्त्तव्य है वो दूजारै वास्तै अकर्त्तव्य पण होय सकै। एकला मिनख रै वास्तै ई कर्त्तव्य अर अकर्त्तव्य रौ फैसलौ ह्वैणौ कठण है तो पछै सगला संसार रै वास्तै कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य रौ फैसलौ तो कियां होय सकै ? दाखला रूप में एक बात है कै एक आदमी पोतारा

कुटुम्ब वास्तै रसोई करै। रसोई करणी उणरौ कर्त्तव्य है। वो सिरधा सूं उंणरी पालणा करै। उणीज वखत जे पाड़ौस में लाय लाग जावै अर बुझावण रौ हाकौ होवै तो उण वखत रसोड़ा रौ कांम छोड़नैं आग बुझावण नैं जावणौ उंणरौ पे'लौ फर्ज है। इणीज भांत कोई कोई वखत मांनखा रै सन्मुख दो-फर्ज एक साथौ का आयनैं उभा ह्वै जावै। उण वखत इण वातरौ फैसलौ करणौ कठण ह्वै जावै कै किसौ फर्ज पे'ली वजावणौ आछौ है। साधारण मिनख उंण वखत डाफा चूक ह्वै जावै पण हिम्मतवांन मिनख तुरत फैसलौ कर लेवै।

कोई सात आठ वरसां पे'लारी बात है फरूखावाद में एक धनवांन आदमी रौ मोट्यार वेटौ मोटर नीचै दवनैं मरग्यौ। मोटर में बैठ्या मुसाफिरां नैं इतरी रीस आई कै उणां ड्राईवर नैं मार-मार नैं अचेत कर नांख्यौ। समाचार मिलतां पांण छोकरा रौ वाप उठै आयौ। उणैं आय नैं देख्यौ तो एक कांनी उणरौ बेटौ मरियौड़ौ पड़ियौ है अर दूजी कांनी ड्राईवर अचेत पड़ियौ है। उणनैं अवै दो फर्ज बजावणा हा। पोतारा वेटा नैं दाग देवणौ हो अर ड्राईवर री पाटा पीड़ पण करावणी ही। पण किसौ कांम पे'ली करणौ अर किसौ कांम पछै करणौ, आ एक विचारणा जोग वात ही। उंण आदमी में जे मिनख पणौ नीं ह्वैतौ तो वो पे'ली पोतारे वेटा नैं दाग देवणरी वात विचारतौ अर पछै ड्राईवर कांनी ध्यांन देवतौ। पण उणरा अंतरमन सूं एक आवाज आई के—'इण अचेत पड़िया ड्राईवर नैं वचावणौ थारौ पे'लौ फर्ज है, सो वो उणनैं मोटर में घाल'र अस्पताल लेग्यौ अर उणरै पाटापीड़ रौ इंतजांम कीनौ। इणरै पछै पोतारा वेटा नैं दाग दीनौ। चार दिन आड़ा पड़ियां लोगां उणनैं पूछ्यौ—'आ थांनैं कांई जची? वेटा री लास पड़ी राखनैं ड्राईवर नैं अस्पताल ले जावणौ म्हांनै तो कोनी जची।' वो बोल्यौ—म्हैं जो कियौ म्हारा मत सूं ठीक इज कियौ। उण वखत म्हारौ जो फर्ज हो म्हैं उणनैं पूरो कियौ। म्हारौ वेटौ तो मरग्यौ हो, पण ड्राईवर हाल जीवतौ हो। इण वास्तै मूओड़ा री साल-संभाल नीं करनैं जीवता री साल संभाल करणी जरूरी ही। ओइज म्हारौ फर्ज हो। म्हूं जाणूं म्हारा इण कांम सूं भगवांन राजी होवेला।

एकर भरत चक्रवर्ती रे आगै एकण सागै तीन फर्ज आयनैं उभा ह्विया। राजा नैं कुंवर जनमिया री वधांमणी मिलै। उणरी उजमणी

करणी ही। दूजी बात उणरी आयुधसाला में चक्ररत्न प्रगट व्हियौ, उणरी पूजा करणी ही । अर तीजी बात भगवान रिषवदेव नैं केवल ज्ञान उपनियौ, इण वास्तै एक धर्मनिस्ठ बेटा रै रूप में उणां री उपदेस सुणवानैं पण जावणौ हो। भरत विचार कियौ—बाप बेटा रो सम्बन्ध तो दुनियादारी रो है अर अनादि काल सूं है। उणरी उजमणी मोड़ी वेगी व्है तो कोई फरक नीं पड़ै। चक्ररत्न री पूजा नीं व्है तो वो वे राजी होय नैं जावैला परो। पण जावैला कठै ? वेटौ अर चक्ररत्न दोन्यूं धर्म रा पुन्न प्रताप सूं इज म्हनैं मिलियां है तो जावैला क्यूं। इण वास्तै धर्म री बात पे'ली ध्यांन में राखणी चाहिजै। ओ विचार करनैं भरत सीधौ भगवांन रिखवदेव रे खनैं पूगौ।

केवण रो मतलब ओ के जिण वखत मिनख रे सांमनैं एकण सागै कई फर्ज आयनैं उभा व्है जावै, उण वखत उण मिनख री परीक्षा री घड़ी आवै। पण अकलवांन मिनख पोतारा पे'ला फर्ज नैं तुरत पिछांण लेवै।

अबै विचारणा जोग बात आ है के फर्ज सेवट है कांई ? मोटा रूप सूं विचार करां तो हरेक मिनख रो वाजव कांम फर्ज री गिणती में आय सकै। पण इण परिभासावां रे घटाटोप में सूं फर्ज रो साचौ अरथ सोध नैं काढणौ घणौ दोरौ है। छतां पण विचार करां तो म्हारै मत सूं मांनखां रे अंतर आत्मा री पे'ली आवाज जिकी बुद्धि रा पड़पंच सूं न्यारी व्है, साचौ फर्ज है। जिकौ मिनख पोतारै अंतर-आत्मा री आवाज माथै चालै अर बुद्धि रा पड़पंच में नीं पड़ै उणनै फर्ज रो साचौ मारग लाध सकै। अंतर आत्मा री आवाज कदैई खोटी नीं व्है। इण वास्तै उणरै माफक चालणौ इज मांनखा रौ असली फर्ज है। दूजा मिनखां सागै आंपां नै एड़ौ बेवार राखणौ चाहिजै के जेड़ा वेवार री आंपां पोतारे वास्तै दूजां सूं उम्मेद राखां।

एक अंग्रेज विद्वांन कह्यौ है—

'As you want for your self, do unto others.'

आंपां दूजां सूं जेड़ा वेवार री उम्मेद राखां, आंपांनै पण दूजां सागै वेड़ौ वेवार इज राखणौ चाहिजै। जे पोता ने सरल अर निस्कपट वेवार चोखौ लागतौ व्है तो दूजां सागै पण सरल अर निस्कपट वेवार राखणौ चाहिजै। जिकी बात आंपां नै चोखी नीं लागै वा दूजां नैं चोखी कीकर

लागैला। कांटा रो तवीड़ौ जेड़ौ पोतानैं खारौ लागै वेड़ौ रो वेड़ौ दूजानैं पण लागै। वस, फर्ज नैं मापण रो असली गज ओईज है, फर्ज नैं तोलण रो असली ताकड़ियौ ओईज है। आत्मा री कसोटी सूं वधारै दूजी कोई कसौटी नीं। इण वास्तै इज भगवांन महावीर कह्यौ है—

'अप्पणा सच्चमेसेज्जा'

थांरी अंतर आत्मा सूं सत्य नैं ओलखौ, फर्ज नैं सोधौ अर आत्मा रा गज सूं सत्य नैं नापौ।

जिण मिनखां पोतारा फर्ज नैं नीं ओलखियौ अर उण सूं उल्टौ कांम कियौ, उणां रो उतंग इज उठग्यौ। इतिहासकार अर कथाकार उणांरा नांम माथै थूकै। कंस अर रावण पोता रा फर्ज नैं ठोकर मारी तो जमांनै उणांनैं ठोकर मार दी। जुग-जुग बीतग्या पण उणां माथै लोगां रो कोप कम नीं ह्वियौ।

मिनख नैं कई वखत पोतारा फर्ज नैं निभावण वास्तै भारी कीमत चुकावणी पड़ै। पण फर्ज पालणिया उणरी कोई परवा नीं करै। कारण के वे फर्ज री कीमत घणी ऊंची मांनैं।

भारतीय इतिहास रो जगमगाट करतोड़ौ तारौ राजा हरिचंद फर्ज री जीवंत मूरत हो। पोतारो फर्ज पालण वास्तै उणैं आपरौ राजपाट, सुख, वैभव, तारामती जिसी सुलक्खणी रांणी अर रोहित जिसा राजकुंवर नैं छोड़ दियौ। पण इणरै उपरांत ई एक दिन एड़ौ आयौ के उणरै फर्ज री अग्नि परीक्षा हुई।

झलोझल आधी रात ही। आभै में विजलियां पलाका मारती ही। गाज रो घरड़ाट उडतौ हो। उण वखत मसांणां में एक लुगाई रै कूकण री आवाज आई। वा कुरलावती थकी बोली—महाराज, अठी पधारौ अर आपरै फरजंद नैं एकर देख लौ। वा अबला छिबरां-छिबरां रोई पण उठै कुण सुणै। उणीज वखत एक कालौ भरंग मिनख आयनैं उभौ ह्वियौ। उणरै हाथ में लांबौ वांसड़ौ हो। वो वोल्यौ—अरे गेली! रोवै क्यूं है? अठै किसौ गज मे'ल है सो कोई थांरी खोज खबर करण नैं आवैला।' तारामती करुण सुर सूं बोली—थांरी छाती में मारौ कालजौ कोनी। इण वास्तै थांनै ठा कोयनीं पड़ै के वेटा रै विजोग रो दुख किसौक ह्वै? म्हारै हिवड़ा रौ टुकड़ौ उघरांणौ जमीं माथै पड़ियौ है अर उणरी लास नैं ढाकण नैं आज म्हारै खनैं खांपण रौ लीरौ ई

कोयनीं। धिन्न रे राज मे'लां में सोना रा पालणा में झूलणवाला सूरजवंस रा राजकुंवर थारा भाग ! पीड़ा सूं आज म्हारो कालजी फाटै है अर म्हूं इण रा बाप राजा हरिचंद नैं आवात कैवूं हूं।' सन्मुख उभौ वो आदमी बोल्यौ—कुण ? थारो नाम तारा है ?' 'अर आप सूरजवंसी राजा हरिचंद ?' तारा पाछौ पूछ्यौ। वादलां में विजली खीवीं अर उणां एक दूजा नैं ओलखिया। वरसां सूं विखौ भोगवता जीव पाछा मिलिया। प्रसंग खरौखर करुण हो। हरिचन्द रो हियौ भरीजग्यौ। उणरी निजर बेटा री लास माथै पड़ी। पण वो अजेज चेत नैं बोल्यौ—"गेली ! म्हूँ अबै सूरजवंसी राजा हरीचंद कोय नीं। म्हूं तो कालिया चंडाल रो दास हूँ। थूं तारामती है, आवात खरीं पण थूं महारांणी कोयनी। बांमण रे हाथ विक्यौड़ी एक दासी है। अबै उण जूंनी बातां नैं भूल जा।" तारा आंख्यां रा आंसूड़ा पूंछती बोली—"नाथ, ओ आपरौ लाड कुंवर धरती सूतौ है, थोड़ौ इण कांनी तो देखौ।" हरिचन्द पूछ्यौ—इणरै कांई व्हियौ ? प्रांणनाथ ओ दिनूंगै ई वगीचा में फ़ूल बीणवा गयौ हो, उठै उणनैं पांन डंग्यौ। रूं-रूं में जेर रमणा सूं इणरौ पंड लीलौ छम पड़ग्यौ है।' तारा लास देखावण नैं थोड़ी आगै आई तो हरिचन्द दो पांवडा लारै सरकग्यौ। बोल्यौ—थारौ केवणौ सही है, पण म्हूँ अबार म्हारै मालिक रा कांम माथै हूँ। मसांण में मुड़दा नैं दाग दियां पे'ली भूंइ भाड़ा रौ एक रुपियौ देवणौ पड़ैला। म्हूँ इणमें कोई छूट नीं कर सकूं। रुपियौ दियां पे'ली दाग नीं पड़ सकै।' तारा बोली—नाथ रोहित आपरौ बेटौ पण है, एकली म्हारौ इज तो कोयनीं। इणरै दाग वास्तै म्हारै खनैं काठ कोयनीं। सांमला दिगला में सूं थोड़ौ घणौ काठ देय देवौ तो किणनैं ठा पड़ै ? राजा एकदम रीसांबलतौ बोल्यौ—तारा, अबार म्हूँ थारौ पति कोयनीं अर नीं रोहित म्हारौ बेटौ है। म्हनैं म्हारै फर्ज री पालणा करणी है।' राजा आगै बोल्यौ—

गर बात तुम्हारी मानूंगा, अपने प्रण से गिर जाऊंगा।
मालिक से बात छिपा लूंगा, ईश्वर से कहाँ छिपाऊंगा॥

तारा थूं म्हारै खन्नैं रुपिया मांगै है गेली ! अठै रुपिया पड़िया है ? थूं थारा मालिक खनैं क्यूं नीं मांगै।' तारा रोवती थकी बोली—नाथ, विचार करो ! जिणरौ हाथ सदा ऊंचौ रह्यौ, वा कोई रे हेटै हाथ कीकर मांड सकै ? मिनख पोतारी इज्जत सागै जीवणौ चावै।

जिण लुगाई रे धणी सत्य खातर पोतारो राजपाट छोड़ दियौ उणरीं धण चांदी रा ठीकरां खातर मिनखां रे धकै हाथ लांबौ करै तो पछै उणनैं धिक्कार है।

राजा बोल्यौ–थारी सगळी वातां खरी है पण अठै मोटौ सवाल फर्ज रो है। म्हारौ पोतारौ हक व्है तो म्हूं उणनैं फोतका बरौबर ई नीं गिणूं, पण ओ तो म्हारै मालिक रो हक है। इण रौ कांई करणौ। मसांण रौ भूंई भाड़ौ चुकांया विना तो लास नैं दाग नीं दिरीजै ला।'
रांणी बोली—म्हारै खन्नैं एक साड़लौ हो, उण में सूं आधौ फाड़नैं म्हैं खांपण वणाय दियौ अर आधौ म्हारै पंडरी लाज ढाकै है। इण उपरांत म्हारै खन्नैं कांई कोयनीं। अवै आप फरमावौ ज्यूं करूं!'
हरिचंद पडुत्तर दियौ–तारा थारै जचै ज्यूं कर पण भूंई भाड़ौ तो देणौ इज पड़ैला।' तारा एक भाड़ रो ओठौ लेयनैं पोतारी साड़ी उतारी अर राजा नैं देवती थकी बोली—नाथ, लो आधी साड़ी इणरी कीमत एक रुपिया जितरी तो होवैला इज।''

इण भांत राजा हरिचंद फर्ज री कसौटी माथै खरौ उतरियौ। अवखा विखा में ई उणरौ मन चलायमांन नीं व्हियो। कवि रो ओ कथण सोलूं आंना सही है के फर्ज पालणिया मिनख रो हिरदौ फ़ूल सूं ई कोमल अर वज्र पांत ई करड़ौ व्है :—

वज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमादपि।

एड़ौ मिनख पोतांरे जीव री ई परवा नीं करै तो दूजी वातां री तो कांई गिनरत राखैला।

एकर पेरिस नगर में हुल्लड़ व्हियौ। मेथ्यु डेंजलर नांम रो एक पत्रकार उण हुल्लड़ री खवरों भेली करणनैं उठै पूगौ। हुल्लड़ करणियां भाठ फैंकणां सरु किया। मिलट्रीवालां वांनै रोकण री मोकली मैंणत कीवी पण हुल्लड़ कावू में नीं आयो। सेवट वांनैं गोलीवार करणौ पड़ियौ। इण में डेंजलर रे ई गौली लागगी। पाटा पीड़ करण नैं डाक्टर आयौ। उणैं पूछियौ आप पण घायल व्हैगा? वो बोल्यौ—म्हूं इतरौ घायल व्हैगौ हूं के म्हारै लिखणौ ई हाथ कोयनीं। डाक्टर बोल्यौ—लिखणौ पड़ियौ घेड़ में, अवै तो आपनैं आरांम करणौ चाहिजै। पत्रकार बोल्यौ—म्हारै वास्तै सगलां सूं सिरै चीज म्हारौ फर्ज है, आरांम नीं है। म्हूं पत्रकार हूं, अर इण वणाव रो सही-सही हवाल भेजणौ म्हारौ

पे'ली फर्ज है। इण वास्तै आ कलम लिरावौ अर पांना माथै लिखौ— सांझ रा तीन बजनैं वीस मिनट माथै मिलट्री गोलीवार कियौ जिण में तीन जणा घायल ह्विया। अर एक जणा रो मरण ह्वियौ। डाक्टर पूछ्यौ—

मौत कुणरी ह्वी ? जवाव मिलयौ—म्हारी !
अर इतरौ बोलतां पांण हंसौ चालतौ हुवौ।

ओ है फर्ज ! पोतारा फर्ज नैं पालवा रौ आणंद ! जिकौ धणी इणरी पालणा करै, उणनैं इज इणरौ आणंद मिलै।

तरवार री धार माथै चालणौ सहल, पण फर्ज रा मारग माथै चालणौ दोरौ। इण अबखा मारग माथै चालणवाला नैं पूरौ सावचेत रेवणौ चाहिजै। 'दसवैकालिक सूत्र' री चूलिका में कह्यौ है—साधक थूं पूरौ ध्यांन राख के थारौ कांई कांई फर्ज है अर उण में सूं थें किसा-किसा पूरा किया है अर किसा-किसा अधूरा पड़िया है ?

किं मे कड़ं किच्च मे किच्च सेसं।
किं सक्कणिज्जं न समायरामि।

संसार में सगलां सूं चोखौ राज किसौ ? इणरी व्याख्या करतां चीन देस रा मोटै विद्वांन कन्फ्यूसस कह्यौ है के जिण राज में राजा, प्रजा, पिता-पुत्र, गुरु-चेला अर अधिकारी पोत-पोतारो फर्ज पालै, वो राज सगलां सूं आछौ है।

सेवट में छेली बात आ है के जे थे थांरा जीवण महान् बणावणौ चावौ, पोतारी आत्मा नैं संस्कारी बणा वणी चावौ, मन नैं काबू राखणौ चावौ अर बुद्धि नैं निरमल राखणी चावौ तो पोत-पोतारा फर्ज नैं ओलखौ अर उणरी पालणा तन मन सूं करौ।

卐

५

जीवण रौ परभात

आंपणै भारत में प्राचीन काल सूं ईज जीवण नैं सुसंस्कारी वणावण री रिवाज चाल्यौ आवै है। अठै जिकौ-जिकौ रिसी, मुनि, साधु-संत अर समाज रा आगीवांणी हुवा, उणां सगलां संस्कारां माथै खूब जोर दियौ है अर टावरपण सूं इज जीवण में संस्कार रो पायौ नांखवारी कोसिस कीवी है। अठा तक के मांनव जूंण रै सरूपांत सूं लगाय नैं छेलीं वड़ी तांई उणां संस्कारांरी एक हार माला चलाई है। स्मृतियां अर ब्राह्मण ग्रंथां में ए सोलै संस्कारां रै नांम सूं ओलखीजै। भारत में वीचलौ वखत कांईक इसौ आयौ के संस्कारां रो चलण थोड़ौ झांखौ पड़ग्यौ, छतांपण हालतांई उणरी छिया मौजूद है। वालक रा गर्भाधान, जन्म, नांम करण, चूड़ाकर्म, उपनयन अर लग्न विगैरै सूं लगाय नैं दूजा उपसंस्कार पण वांरै सागै जोड़ीज गिया है। संस्कारां री इण सगली हार माला रे लारै कांई तथ्य हो अर इण संस्कारां रो कांई महत्व हो, इण वावत म्हूँ थोड़ी चर्चा करूंला। इण संस्कारां में किण वखत अर कांई परिवर्तन करणौ चाहिजै, उणरी पण म्हूँ चर्चा करूंला।

मिनख रा जीवण नैं जे एक तरैसूं न्यारौ करनैं देख्यौ जावै तो जांण पड़ैला के वो संस्कारां रो पिंड मात्र है। मिनख रा जीवण में संस्कार तांणा-पेटा री गलाई गूंथीजियौड़ा है। संस्कारां रा वावेतर में जात-पांत, देस-वेस के धर्म रा वाड़ोटिया कठैई नीं अड़ै। पण आ वात सोलूं आंना खरी के संस्कारां रा वीज वालपणा में इज पड़ै। इण अवस्था सूं इज जीवण री सरुआत व्है। आ जीवण री उगाली आगै जायनैं पूरा जीवण नैं प्रकास देवै।

ज्ञानी-पंडतां रो मत है के जिको संस्कार टाबर नैं बालकपण सूं मिलै वे उमर भर तक कायम रैवै । उणां री छाप मिटै नीं । इण वास्तै जे बालपणा सूं इज चोखा संस्कार जम जावै तो बालक मोटा झाडरी गलाई पांगरतौ इज जावै । पण उणांरी ठौड़ जे कदाच खराब संस्कार जम जावै तो पूरौ जमारौई ऐहल परौ जावै । जिको दुर्गण उण वखत भरीज जावै वे कांई कीधां वारै नीं निकलै । इण वास्तै इज नीतिकारां कह्यौ है—

यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत् ।
कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते ॥

नवौ ठांम घड़ती वखत प्रजापत उण ठांम नै चावै जिसौ रूप रंग के आकार देय सकै है । पण सूक्यां पछै के नीवा में पाकयां पछै उणमें कोई फरक फार नीं ह्वै सकै । इणीज प्रमाणै गर्भाधान पछै अथवा जन्मयां पछै बालक नैं जिसौ रूप देवणी चावां देय सकां हो । इण कारण इज पंडतां री आ बात साव साची है के इण औस्था में पड़ियौड़ा संस्कार कायम रैवै । इण कारण टावरां नै नैतिक कथावां सुणाय नैं वांरी मदद सूं उणां में चोखा संस्कार नांख्या जावै ।

टावर रो दिमाग फूल री गलाई कंवलौ अर टावर रो मन सफेद कागद री पांण निरमल ह्वै । उण ऊपर आंपां चावां जिसा सोनेरी चितरांम कोर सकां । आंपां चावां तो उणां नैं मिनख वणाय सकां अर आंपां चावां तो जिनावर बणाय सकां हां । कारण के कोमल हिरदा में संस्कार जमतां जेज नीं लागै । अर ए संस्कार कायम खाता रा ह्वै । माली कंवला डाला नैं मरजी माफक वाल सकै । एक अणघड़ भाठा नैं सिलावटौ चावै जिसौ रूप देय सकै । करसौ पोतारा खेतर में जिसौ वावै विसौ इज लणै । चोखौ वावै तो चोखौ लणै अर खराब वावै तो खराब लणै । संतांन रूपी खेतर में पण करसा रूपी मा बाप संस्कार रूपी जिसा बीज वावैला, विसाइज फल पावैला । मकांन बांधतां वखत आंपां पूरौ विचार करां के आंपणा केड़ा डिजाइन रो अर कितरौ मोटौ मकांन बांधणौ है । आंपां उणरौ नकसौ पण पेलाथीज तैयार करनैं राखां । पछै ई सौ वरसरो सिलावटौ नैं बारै वरसां रो वर धणी । इणीज भांत बालक रो जीवण रूपी मेहल तैयार कियां पे'ली आंपां नैं पूरौ विचार कर लेणौ चाहिजै । टाबर नैं पाप प्रेमी बणावणौ है के धर्म

प्रेमी ? टावर रे जीवण रो आडांण पेला थीज सोच लेणौ चाहिजै। कोई पण बाप पोतारी संतान नैं पापी तो नीं'ज वणावणी चावै। पण जे सावचेती राख्यां उपरांत अर मैंणत करतां करतां ई जे टाबर पापात्मा जन्मै तो मांन लेवणौ के आंपणै विचार, वांणी अथवा आचरण में कोई खांमी है। जे खांमी नीं ह्वै तो कपूत पाकै इज नीं। श्रुति में पण कह्यौ है **आत्मा वै जायतै पुत्रः** बेटौ मा बाप रा आत्मरूप सूं इज जन्मै है। कैवत है के "कोठा जिसौ कीटौ अर बाप जिसौ बेटौ।" झाड़ ह्वै जिसाइज पाटिया ह्वै। अंग्रेजी में पण एक कैवत है—Such a father, Sueh a Son,

जिण भांत रो तांतण लैयनैं झीणौ के जाड़ौ, काचौ के पाकौ, रंगीन के सफेद चावां जिसौ कपड़ौ वणीज सकै है, उणीज भांत जिणतरै रा मा बाप रा आचार विचार अर प्रकृति ह्वै उणीज भांत रा टाबर पण जन्मै। न्यायशास्त्र में एक सिद्धान्त है—**कारण गुणपूर्वकोहि कार्य गुणौ दृष्टः**—कांम रो गुण कारण रा गुण सूं इज ओल खीजै। जिसौ कारण ह्वैला विसौइज कांम पण ह्वैला। कारण नैं कांम न्यारा कदैई नीं ह्वै सकै। संतांन रूपी क्रिया में पण मा बाप रूपी कारण रा गुण-अवगुण उतर जावै। इण वास्तै इज भला मिनखां रे घर में पण कपूत पाक जावै। उण वखत प्रकृति रो ओ इज नियम लागू ह्वै। जरै आ बात मांन लेवणी चाहिजै के मा बाप रै आचार विचारां में कांईक खांमी है।

आज रा मानससास्त्री पण आइज वात कैवै के जिको रोग मा बाप रे ह्वै, वो इज रोग टावर रे पण ह्वै। मा वाप री जिसी भावना ह्वै विसाइज बालक पण जन्मै। जिको दुर्गुण माईतां में ह्वै वे इज दुर्गुण टाबरां में उतरै।

इण वास्तै टावरां रा जन्म पे'ली माईतां नैं घणौ ध्यांन राखणौ चाहिजै। इण वास्तै इज जीवण रा सोलै संस्कारां में सूं गर्भाधान संस्कार रो स्थांन पे'लौ है। गर्भाधान ह्वै तांई मानैं ओ विचार राखणौ चाहिजै के म्हारौ बालक वीर, धार्मिक, तेजस्वी, चरित्रवांन अर नीति-वांन जन्मै। गर्भ में पड़ियौड़ा बालक ऊपर मारै विचारां रो असर जरूर पड़ै।

विज्ञान रा एक प्रोफेसर एलमर ग्रेट से यूनाइटेड स्टेट री राजधानी

वासिंगटन री एक प्रयोगसाला में न्यारा-न्यारा सुभाव वाला मिनखां रा स्वांस एक काच माथै लीधा। इण मिनखां में कोई रोगी हो, कोई रीसाल हो, कोई ईखी करणियौ हो तो कोई दुराचारी हो। काच माथला स्वासां री जांच पड़ताल सूं ठा पड़ी के वे सांस तरै तरै रा हा। सेवट उण प्रोफेसर नैं कै वणौ पड़ियौ के गर्भ मांय ला वालक पर माता रा जिसा विचार पड़ै, विसाइज स्वांस पण वणै अर इण स्वांसां री छिया पण इसीज पड़ै।

आयुर्वेद में पण गर्भ सास्त्र माथै मोकलौ लिखियोड़ौ है। गर्भवती लुगाई री खुराक अर आचार विचार माथै सांगोपांग विचार कियौड़ौ है। कारण के मा री खुराक अर आचार विचार रो सीधौ असर वालक माथै पड़ै। ज्ञाता सूत्र में जूंना जमाना सूं इज गर्भवती लुगायां री दिनचर्या तै कीनौड़ी है—**तस्स गब्भस्स अणुकंपट्ठयाए** मा पोतारा गर्भ रा पोसण अर रक्षण खातर आहार अर विचारां रे जोगा नियमां रो पालण करती ही। भगवती सूत्र में पण गर्भ वावत लिख्यौड़ौ है—केईक वालक इसा ह्वै के वे मारे सद्‌विचारां अथवा कुविचारां रे कारण जन्मतां पे'लीज मर जावै। वे का तो सुरग में जावै अर का नरक में। मारा विचार चोखा ह्वै तो टाबर पण चोखौ जन्मै। जिण भांत प्रयोग साला में वैज्ञानिक रा विचारां माफक इज प्रयोग करीजै अर पाठ साला में अध्यापक रा विचारां प्रमाणै इज टाबर उछरै, उणीज भांत इण गर्भरूपी प्रयोग साला के पाठ साला में टाबर री घड़ांमणी ह्वै।

गर्भरूपी आ पाठसाला के प्रयोगसाला नव महीनां सुधी चालै। नव महीनां री इण पढाई में जिसा संस्कार नांखणा ह्वै, उणीज भांत रो आहार अर विचार राखणा चाहिजै। भगवती सूत्र में आ बात आछी तरियां समझाय नैं लिखी है—गर्भ मांयला वालक सागै मारा सम्वन्ध अटूट है। मारा आहार सूं इज टावर रो पोसण ह्वै अर उणरा अंग वधै। मा हर फरै आइज टावर री पण हर फर है। मा स्वासा लेवै वाइज वालकरी पण स्वासा है। इण वास्तै गर्भाधान सूं इज बालक रो पूरौ ध्यांन राखणौ चाहिजै। जैन सास्त्रां रा उद्‌भट विद्वान सताव-धांनी पंडित मुनि श्री रतन चंदजी महाराज 'कर्त्तव्य-कौमुदी' नांमरी पोथी में इण वावत इणभांत लिखियौ है—

वाले गर्भगते तदीय जननी चेत्सेवते दीनताम्।
बालो दीनतरो भविष्यति तदा शूरश्च शौर्यं तथा।

य द्वेषा कलहं करोति नितरां सा क्लेशकारी तदा।
तुष्टा स्याद्यदि सा भविष्यति तदा पुत्रः प्रसादान्वितः ॥१॥
धर्मं वांच्छति गर्भिणी यदि तदा पुत्रो भवेद् धार्मिकः।
भोगान् वांच्छति चेत्तदेन्द्रिय सुखासक्तो विलासी भवेत्।
विद्यां वांच्छति चेतदा प्रतिदिनं विद्याभिलाषी भवेत्।
सच्छास्त्रश्रवणं करोति यदि सा पुत्रोऽपि तादृग्भवेत् ॥

टावर गर्भ में ह्वै, उण वखत जे मा रे मन में कायरता के डरपोक पणा री भावना ह्वै तो टावर पण विसौ इज जन्मै। मारे मन में सूर वीरता रा भाव ह्वै तो बालक सूर वीर जन्मै। मा कजियाखोर ह्वै तो टावर पण कजिया खोर ह्वै। मा हसमुखी रैवै तो टावर ई हसमुखौ जन्मै। मा धर्माचरण वाली (अहिंसा, सत्य, सिरधा, सील, अपरिग्रह नैं मांनवावाली) ह्वै तो टाबर पण विसौइज पैदा ह्वै। मा भोग री भूखी ह्वै तो बालक ई कांमी जन्मै। अरजे मा रौ मन पढ़ाई लिखाई में लाग्यौड़ौ ह्वै तो टावर पण विद्वांन वणै। कैवण रो अर्थ ओ इज के जिसी मा ह्वै, जिसा उणरा आचार विचार ह्वै, विसौइज टावर पण जन्मै। गर्भ अवस्था में जिकौ संस्कार पड़ै, वे मिटायां नीं मिटै।

महाभारत में अभिमन्यु री सूरवीरता रो हवाल आवै। अभिमन्यु जिण वखत उणरी माता सोधरां रे गर्भ में हो उण वखत अर्जुण सोधरां नैं चक्रव्यूह तोडवा रो भेद बतायौ। वो भेद सोधरां कांन लगाय नैं सुणियौ अर गर्भ में वैठै अभिमन्यु पण सुण्यौ। ओइज कारण हो के सोलै वरस रो अभिमन्यु कौरवां रो चक्रव्यूह तोड़ सक्यौ अर भीस्म अर द्रोणाचार्य जिस्सा वीरां रा पग धूजाय नैं छोड़िया। इसौ जबरदस्त है गर्भ रूपी पाठसाला रो असर।

सिवाजी महाराज जिण वखत गर्भ में हा उण वखत उणां री मा जीजां वाई महाभारत अर रामायण मांय नैं सूं जुद्ध रो हाल वांचती अर दूजां नैं पण संभलावती। इण कारण सूं इज सिवाजी जिसौ नर रत्न उपनियौ। सोलै वरस री उमर में तो सिंघगढ़ रो किलौ फतेह करनैं मुगल वादसावां रा चक्का जांम कर दिया हा।

नेपोलियन वोनापार्ट जिण वखत गर्भ में हो उण वखत उणरी माता पोतारा पति सागै रण खेत में ही। वा घोड़ा माथै वैठनैं

परेड पण करती । नेपोलियन माथै गर्भ सूं इज ए संस्कार पड़िया, जिण कारण वो कई लड़ाइयां में फतेह कर सकियौ ।

हिरणाकस रो बेटौ प्रह्लाद जिण वखत गर्भ में हो उणरी मा नारद मुनि सूं प्रभुभगती रा उपदेस सुण्या हा । इण कारण सूं इज उणां रे घर में प्रह्लाद जिसौ भगत अवतरियौ ।

मिस्टर जे० सी० वेयर वांरी पोथी—'मातृ भावना' में लिख्यौ है—एक लुगाई रे बालपणा में इज गर्भ ठैरग्यौ । उणरी साथणियां उणनैं आंगली आगी करनैं चिड़ावण लागी । उणनैं घणी सरम आवती सो वा घर में जायनैं रोय वौ करती । उण रा संस्कार टावर माथै इसा पड़िया कै आंगली बतावतां इज रोवण लाग जावतौ ।

एक गर्भवती लुगाई नैं मांस खावण री अर दूजी नैं दारू पीवण री मन में आयगी । पण वे दोन्यूं पोतारी मंसा पूरी नीं कर सकी । इण वास्तै उणांरा जो टाबर जनमिया वे मांसखाऊ अर दारूड़िया बणिया ।

इण सगला हवालां सूं आ बात उजागर हुई के गर्भावस्था रे वखत मा माथै कितरी मोटी जबावदारी है । उणनैं पोतारो आहार-विहार सादो संयम पूर्ण राखणौ चाहिजै । उणनैं आपरा विचार चोखा राखणा चाहिजै ।

आंपणा मुल्क री आ कम नसीबी है के अठै मावां नै गर्भावस्था बाबत कोई सीखांमण मिलै इज नीं । आंपणै अठारी मावां ठोठ है । उणांरा घर धणियां नैं पण पोतारा धंधा-वाड़ी आगै वखत मिलै कोयनीं । इण वास्तै लुगायां नैं इण बाबत कोई प्रकार री सीख भलांमण आगी नेड़ीई नीं मिलै । वस्ती वधारौ तो कुदरत रो नियम है । इण वास्तै टाबर तो अरड़ाट करता जन्मै, पण है फगत धरती माथै भारा मावां ठोठ अर अज्ञांनी इण वास्तै टाबर जन्मै आलसी, नकांमा, ऐंदी, चोरटा, कांमचोर, परावलंबी अर कायर । जिकौ पोतारो पेट ई दोरौ भर सकै उणां सूं दूजांरी तो कांई आसा करणी । उणां नैं हाथ मैंणत करतां सरम आवै । इसा टाबर मोटा होयनैं नौकरियां खातर रखड़ता फिरै अर सेवट कुर्सी रा राछ वणनैं वैठ जावै । नौकरी में रैवैतो उणांरी नीत कांमचोरी, रिस्वतखोरी अर हरांमखोरी में इज रैवै । अर जे वैपार में आवै तो भेल सेल, ओछौतोल, ओछौमाप, चालाकी, दगाखोरी, कालो

वजार अर बेईमांनी नैं लाग्या रैवै । रिस्वतखोरी अर कालौ वजार तो आज साधारण वात ह्वैगी है । विस्वासघात अर ठगाई आज मांमूली चीज़ां गिणीजै । इणभांत मुल्क रो नैतिकपतन मोकलौ ह्वैग्यौ है ।

इण भांत जीवण री सरुआत में संस्कारां री कितरी जरूरत है, वा आपनैं ठा पड़गी ह्वैला । गर्भाधान संस्कार रो मतलव इज ओ है के गर्भ में रह्योड़ा वालक नैं नीतिवांन, धर्मनिस्ठ, चरित्रवांन कर्त्तव्य निस्ठ अर सूरवीर वणावणौ । इण वावत मानै सजाग रै वणौ चाहिजै । पोता रे गर्भ मांयला वालक नैं सज्जन के दुर्जन वणावणौ मा रे डावा हाथ रो खेल है । संतान रा लक्खण पे'ली गर्भ में अर पछै उछरतां वखत निगै आवै । माटीरा कोरा ठांम में जे पे'ली वखत इज घी घाल दियौ जावै तो उणरौ चींगट फूटै जितरै ई नीं जावै । इणीज भांत गर्भ मांयला वालक माथै जिकौ संस्कार पड़ै वे मरै जितरै ई कायम रैवै ।

गर्भाधान संस्कार पछै वालक रो जनम संस्कार अर पछै दूजा संस्कार होवै । इण सगला संस्कारां पर पूरौ ध्यांन देवणौ चाहिजै । आज रो जुग विज्ञांन रो जुग है । इण जमांना में जूंना रीति-रिवाज नीं चालै । इण जुग में तो हरेक वात बुद्धिरी कसौटी माथैं कसीजै । इण वास्तै संस्कारां री मूल भावना नैं निजर में राखनैं कंवला टावरां नैं मारग घालणां चाहिजै । इण में खास फर्ज मा रो है । इण वास्तै इज आ कैवत है के एक मा सौ गुरुवांरी गरज साजै ।

पे'लड़ा जमांना में आर्यावर्त री मातावां इण वात री पूरी सोजी राखती के उणांरा टावरां में चोखा संस्कार पड़ै । अर वे खोटा संस्कारां सूं आघा रैवै । कारण के चोखा के फोरा संस्कार घर सूं इज मिलै । इण वावत म्हनैं एक ऐतिहासिक कथा याद आवै ।

जयसिखर रो वेटौ वनराज चावड़ो महान जोधारथ राजा हुवौ । उणरा पराक्रम सूं आखा राजपूताना में हाहाकार मच्योड़ौ हो । मारवाड़ रा राजावां विचार कियौ के आंपणै अठै पण वनराज जिसौ राजा जनमै तो मुल्क निहाल ह्वै जाए । ओ विचार करनैं उणां एक हुंसियार वारठ नैं बुलायौ अर कह्यौ के वारठजी जचै ज्यूं करौ पण कियां ई करनैं जयसिखर नैं अठै लेयनैं आवौ । उणनैं कोई जोगी कन्या परणाय दांला । जिण सूं वनराज जिसाईज सूरवीर पैदा ह्वैला ।

वारठ मारवाड़ सूं रवांनैं होय नैं धर मजलां धर कूचलां करतौ पाटण री प्रोलां पूगौ। जयसिखर नैं खम्मा घणी अरज करनैं विड़दावली वखांणण लाग्यौ। विड़दावली सुणतांइज जयसिखर रो मन रीझग्यौ। वो बोल्यो– मांगौ बारठ जी, थांरी मंसा ह्वै जिकीई मांगौ।" बारठ बोल्यौ—अंदाता, म्हारी मंसा इज पूरी करणी ह्वै तो आप राज पाट थोड़ा दिनां खातर अधिकारियां नैं सूंप नैं म्हारै सागै मारवाड़ पधारौ। जयसिखर दुविधा में पड़ग्यौ। वो बोल्यौ—बारठजी कांई दूजौ मांगौ-धन, दौलत जागीर। पण बारठ तो नटियौ सो नटियौ ई। सेवट जयसिखर नैं बारठ रे सागै मारवाड़ कांनी रवांनै होवणौ पड़ियौ। उणैं मारग में चारण नैं पूछियौ—बारठजी महाराज! भेद री बात तो बतावौ आप म्हनैं मारवाड़ ले जावौ क्यूं हो? चारण बोल्यौ—जी, म्हांनै वनराज जिसा सूरवीर मारवाड़ में पैदा करणा है, इण कारण आपनैं तकलीफ दीवी है।'

बारठ री बात सुण नैं जयसिखर हस्यौ अर बोल्यौ केड़ीक भोली बात कीवी है। वनराज जिसा सूरवीर पैदा करणा कांई म्हारै एकला रे हाथरी बात है? वनराज री सूरवीरता रो पूरौ जस उणरी सुसंस्कारी मां नैं है। बारठ हाथ जोड़ नैं बोल्यौ—महाराज; मारवाड़ में आप जोग कन्यावां रो काल कोयनीं। एक-एक सूं आगली वैठी है। जयसिखर बोल्यौ– बारठजी कन्यावां तो मोकली ह्वैला आ बात म्हूं मानूं, पण हरेक कन्या सूं ओ कांम भरै पड़ै सकैला म्हनैं विस्वास कोयनीं। म्हैं थांनैं मूंडा सूं मांग्यौ दांन देवण रा वचन दियौड़ा है, इण वास्तै थांरै सागै चालूं हूं, पण मारवाड़ में वनराज री मा जिसी कन्यावां नीं मिल सकै। इण वास्तै चाल्यां सूं थांरौ कांम भरै पड़णौ मुस्कल है। बारठ थोड़ौ ठैरनैं बोल्यौ ऐड़ी पछै वनराज री मा केड़ीक ही। जयसिखर बोल्यौ– वनराज री मा केड़ी ही, म्हूं थांनै अवै कांई बतावूं। म्हूं आपनैं उणरै जीवण रो फगत एक प्रसंग सुणावूं। उणसूं आपनैं ठा पड़ जावैला के वा केड़ीक ही। वनराज जिण वखत छ महीनां रो हो, एकर म्हूं रांणी रा मेहल में गियौ। उठै म्हूं आपरोल में रांणी सूं मसखरी करण लागौ। रांणी रीसां बलती तुरत बोली—थांनै पार का पुरख रे सांम्ही यूं गेलायां करतां सरम नीं आवै? इण सूं उणरै जीवण माथै केड़ा खराब संस्कार पड़ैला अर आगै जावतां इणरौ जीवण नस्ट ह्वै जाएला। म्हैं हसनैं कह्यौ—हाल तो ओ फगत छ महीनां रो

वाल है, ओ कांई समझै ? अवोध वालक ए संस्कार कीकर धारण कर सकैला ? रांणी वोली—आप इण वालक नैं अज्ञांनी मत समझौ। ओ वोल नीं सकै, पण दूजी सगली बातां समझ सकै। इण उपरांत ई थे इणनैं पारकौ पुरख नीं गिणौ।' पण उपरांत ई म्हैं कोई गिनरत नीं करी। उण वखत वनराज आपरौ मूंडौ फेरनैं सूयग्यौ। रांणी वोली—देखलो, आप जिणनैं वालक केवता हा उणें पोतारौ मूंडौ फेर लियौ है। म्हारी एक आखड़ी ही के म्हूं पारका पुरख सांमां उघाड़ी नीं होवूं। पण आप आज म्हारी उण आखड़ी नैं तोड़ नांखी। म्हूं संसार में मूंडा वतावा लायक नीं रही।' इतरौ तो केयनैं रांणी तो जे'र खाय लियौ अर पोतारो जीव दे दियौ। इसी ही वा वीरांगना ! थांरै मारवाड़ में है कोई इसी कन्या ! चारण आवात सुण'र गतागम में पजग्यौ। वो वोल्यौ—महाराज, म्हांरै देस में इसी कन्या मिलणी दोरी है। आप जो फरमावौ के इसी कन्या मिलयां सूं इज वनराज चावड़ा जिसौ वेटौ जन्मै तो आप पाछा पधार सकौ हो। म्हनै माफ कराइजौ। जयसिखर पाछौ पाटण रवानै ह्वग्यौ।

संस्कारवांन मां रो जीवन इसौ ह्वै। आज काल रा मा वाप चावै के म्हांरै हड़ुमांन जिसा वीर वालक जन्मै। पण वे सती अंजना अर पवनकुमार री गलाई संजम अर ब्रह्मचर्य पालसकै कांई ? आज रा नवला, कायर, विलासी अर नां जोगा मा वाप तो खूटोड़ा वालक पैदा करनैं भारत माता माथै भार जरूर वधारै। इण उपरांत कांई नीं करै।

संस्कारां रे नांम माथै वे टावरां नैं कांई नीं देय सकै। उल्टा कायरता अर विलासिता रा कुसंस्कार वांनै जनम गुटकी साथै का इज मिलै। जिण वखत वालक आड़ी झेलै, कांम री वखत फोड़ा घालै अर नीं ऊंधीजै, उण वखत घणखरी मावां केवै के वो देख वावौ आयौ, वो देखा हाऊ आयौ, कांन काप नांखैला, खाय जाएला। छांनां मांनां पड़ियौ रै, नीं तो पकड़ नैं ले जाएला। इण भांत वे टावरां में डरपोकपणा रा संस्कार वां में सरुपांत सूं इज नांख देवै। ए संस्कार मोटा ह्वियां पछैई नीं मिटै। इण उपरांत कई मावां टावरां नैं गालां काठै अर वांरा उत्साह नैं तोड़ नांखै। यूं टावर, टावर है पण पोतारा मांन-अपमांन में वो ई आछी तरियां समझै। आंगै जायनैं उणरौ घणौ खराव असर पड़ै। कईक टावर मोटा होयनैं मा वाप नैं मारकूट करै। उणरै मूल में मा वापां वायौड़ा वीज इज ह्वै, जो

धीरे धीरे जे'री झाड़ बणै। कई मा-बाप टाबरां में सरुपांत सूं इज वासनावां रा खराब संस्कार नांखै। वे टाबर नैं पूछै—बेटा, थारै बिनणी कीसी क लावां। काली के गोरी ? मा बापां नै ओ ध्यांन कोयनीं रैवै के वे किसाक संस्कार नांखैरिया है। कई टाबर मा-बापां रे देखा देखी गालां-रालां बोलणी सीख जावै। कई मावां टाबरां नैं कूतरा-मिनकां नैं मारणा सिखावै अर वां में हिंसक संस्कार नांखै। कई मावां टाबरां में देवी-देवता, भूत-प्रेत, अंर मंत्र-तंत्र माथै अंधश्रद्धा पैदा करे। कई मा बाप इसा खूटौड़ा ह्वै के वे टाबरां रे निजरां आगै इज सूगली हरकतां करै। हिसाब सूं तो गर्भाधान सूं लगाय नैं टाबर बो बौ चूंघै जित रै मा बाप नैं संजम सूं रैवणौ चाहिजै। पण वे संजम पालै नी, इण कारण टाबरां माथै इणरौ घणो खराब असर पड़ै। कई मा बाप पोतैई नसाबाज, रुलियार अर कूड़चा ह्वै, वे टाबरां नैं कांई सिखावै ? कई मा बाप टाबरां नैं कूड़ा, सफा कूड़ा थथोबा देवै। टाबर रोवण लागै जरै उणनैं शांत राखण खातर कैवै के म्हारा बेटा रे लाड़ू लावांला, म्हारी टीपूड़ी नैं पईसा देवांला म्हारा गटगूड़ा रे मोटर लावांला। पण लेवण देवण नैं हर रा नांम। इसा कूड़ा थथांबा रो टाबरियां रा कंवला मन माथै घणो खराब असर पड़ै। टाबर इण सूं तूंड मिजाजी बण जावै। इण वास्तै या तो टाबर नैं कोई चीज देवण रौ कैवणौ नीं अर जे कैवणौ तो जबांन नैं पार पाड़णी चाहिजै। कूड़ा थथोबां सूं टाबर माथै चोखौ असर नीं पड़ै।

इसा मा बाप पण मोकला ई है, जिकौ पोते तो अहिंसा, सत्य, संजम के सदाचार रे सैं ढै ई नीं बैवै। इण बातां सूं ओलखांण ई नीं राखै। पण पोतारा टाबरां नैं धार्मिक क्रियावां रा पाठ गोखावै, नीरस वखांण सुणावै अर इण भांत वांनै संस्कारी वणावण री मैंणत करै। पण संस्कार इतरा सेज अर सस्ता कोयनीं। पण अफसोस री बात आ है के इण जमांना में संस्कारां खातर सस्ता उपाव सोचीजै। मा बाप टाबरां नैं वाल मंदिर, पाठसाला के महाविद्यालय में भर्ती कराय नैं निरांत सूं वैठ जावै। वे जांणै के आंपणी तो जवाबदारी पूरी ह्वैगी। पण ओ उणांरो थोथो भरम है। आजरी पाठसालावां टाबरां नैं चोखा संस्कार देवैला ! रांम-रांम भजौ। आ वात जरूर है के उठै जायनैं टाबर कई नवा-नवा कुलखण, कुलंगायां अर कुटेवां जरूर सीख जावैला। इण जमांना में विद्यालयां सूं चौखा संस्कारां री आसा राखणी, ग्वार में

सूं तेल काढणौ है। आज रा घणखरा मा बाप तो फगत आ चावै के दीकरौ विद्यालय सूं डीग्री लेय नैं पैसा कमावण लायक ह्वै जावै। मा बापां नैं दीकरा रे चरित्र, सच्चाई के इमानदारी सूं कोई लेणौ देणौ नीं है। बस फगत वो तो कमाऊ ह्वैणौ चाहिजै। कमावौ भलाई कोई तरीका सूं। उणांरी तो फगत मंसा एक इज रैवै के उणांरौ बेटौ वेगा सूं वेगौ पैसौ भेलौ करण लागै। इण वास्तै छोकरौ थोड़ौ सीक मोटौ ह्वै के उणरी सगाई कर देवणी, जिण में टीकौ के डोरौ लेयनैं उणनैं वेच देवणौ। आ नीत वांरी रैवै। ओ एक नवौ धंधो सरू ह्वियौ है। इण में नीं तो रकम रोकवारी जरूरत है अर नीं कोई मैंणत करवारी जरूरत है। छोकरी रे वापरी गरज अर उतावल देखनैं उण सूं मोकलौ धन लेवणौ, सगलां सूं सेज धंधौ है। इण भांत मा बाप वजार में पोतारा वेटां नैं ऊंचा सूं ऊंची कीमत में वैचण री कोसिस राखै। पण इण बातां रो वेटा रै मनमाथै घणौ खराव असर पड़ै। इण सूं लड़कां में हरांम रो खावण री नीत वध जावै। जूनां जमांना में तो पोतारो टावर कठैई वारै जाव तौ जरे मा वाप उणनैं आ सीख देवता के दीकरा कोई चीज थांमै तो ई लेवणी नीं। पण आज वात सफा उल्टी ह्वैगी है। ओ मूंघीवाड़ा रो जमांनौ अर आ टावरां री फौज! आज समाज रो पूरौ ढांचौ ई धन दौलत माथै मंडियोड़ौ है। समाज में मिनख री कीमत नी है। धन री कीमत है। धन रे लारै मिनख री कीमत आंकीजै। कोई मिनख में सच्चाई, इमांनदारी, हुंसियारी विगैरै मोकलाई गुण ह्वौ पण धन बिनां सगलाई थोथा है, वेकार है। इण वास्तै जे विचार कियो जावै तो इण सगला वखेड़ा री जड़ ओ समाज है। मा वापां रो इतरो कसूर नीं है जितरौ समाज रो हैं। समाज में सूं जठा तांई थोथी मान तावां, खोटौ मूल्यांकन अर वेढंगी रीत-भांत नीं मिटै उठा तक खराव संस्कार पण नीं मिटै। अर चोखा संस्कारां रो प्रचार नीं वधै।

इण भांत आज सगला समाज में खराव संस्कार फैल्यौड़ा है। जठा सुधी उणां में सुधारौ करवा में नीं आवै उठा तक कोई कुटुंब उणा में सुधारौ कीकर कर सके।

आज समाज में च्यारूं मेर अन्याय, अनीति, असत्य, लांच रिस्वत अर हरांम खोरी रा वारा वरतारा है। कोई मा वाप जे पोतारा टावर में चोखा संस्कार जमावण री कोसिस करै तो समाज वांनैं उखेलनांखै।

विवाह वाजन में मिनख अणूं तौ खरचौ करै अर गांमड़ां में तो ओ रोग वधतौ इज जावै है।

धर्म रा क्षेत्र में पण मोकला इसा खराब रिवाज है के जिकौ टाबरां माथै खराब असर नांखै। इण रिवाजां में फेर फार करणौ जरूरी है। नीं तो नवी पीढ़ी में धार्मिक संस्कार मिट जावैला। एकर की सिरधा खतम ह्वियां पछै वां में पाछा संस्कार नांखणा घणा दोरा है।

राजनैतिक क्षेत्र में तो जांणै आछा संस्कारां रो काल इज पड़ग्यौ है। आंगलियां माथै गिणै जितरा छंटवा छंटवा नेतावां नैं छोड़ नैं जे निजर फेरां तो रांमजी राजी अर झालर वाजी। सगलाई भाईड़ा पोतारा खीसा गरम करनैं रोटै रांग करण में लागौड़ा है। जांणै हेर बूडौ पाछी कुरसी आवैला के नीं आवैला, कांई ठा, सो लूटां जितरौ ई आंपणौ अर आंपणै बापरौ है। मुल्क जावै खाडा में। उगरी वांनैं कोई परवा नीं है। अबै जिकौ अंगां ई ईमांनदार नेता है, वांनैं घणी चिंता है, पण कागला चांफेर काला इज दीसै जरै कांई करै। कूआ में भाग पड़ जावै उणरौ कांई इलाज ह्वै। आतो डेमोक्रेसी (जनतंत्र) कांई जोणै डेमनक्रेसी (दानवतंत्र) आयगी। कोर्ट कचेड़ियां, अर दूजा सगला सरकारी महकमा भ्रस्टाचार अर बेईमानी में गरक ह्वियौड़ा है।

वेपारी खातारी तो बात ई नीं करणी। कालौ बजार, दगाबाजी, भेलसेल, व्याजखोरी अर हरांमखोरी तो उठै मांमूली बातां है।

वकीलात, डाक्टरी अर वैद्यगी जिसा धंधां में तो संस्कारां अर सद्गुणां नैं जांणै देवटौ मिलग्यौ है। आज सेवाभाव रा संस्कार तो कोई वेपार, धंधा, कला के नौकरी में तो रह्याइज कोयनीं। समाज रा कोई खूंणा में सेवारी थोड़ी घणी भावना लाधै तो उठै पण नांमवारी अर प्रतिस्ठा री भूख लारै लाग्यौड़ी रैवै। सेवा पण प्रतिस्ठा मेलववा रो एक साधन वणतौ जावै है।

लारै रह्यौ आध्यात्मिक क्षेत्र, सो वो पण संस्कारां रो केन्द्र रह्यौ नीं। उठै पण सांप्रदायिकता, जातीयता, अंधभगती, पंडपूजा अर पंथवाद जिसा अलेखूं अवगुण मौजूद है। अखंड मिनखपणा रा संस्कारां रो तो जांणै लोप इज ह्वैग्यौ है। मिनखपणा रा संस्कारां में जातिवाद, संप्रदायवाद, प्रांतवाद, भासावाद, रंगवाद के अंध रास्ट्रवाद रो कठैई नांम ई नीं होवै।

जूंना जमाना रा समाज रो घड़तर करण वाला तत्व आज झांखा पड़ग्या है। उण जमांना में जिण वर्ण रा मिनख त्याग, सेवा, सच्चाई अर ईमांनदारी सूं पोतारौ जमारौ वीतावता, उणीज वर्णवाला आज लोभ असत्य, आडंवर, अज्ञांन अर विलास री मूरतां वण्यौड़ा है। उठै तो अवै चोखा संस्कारां रो तल्लौ-मल्लौ ई कोयनीं। उण जमांना में वर्णव्यवस्था जुगां-जुगां तांई चाली उणरो कारण ओ के व्यवस्था सुसंस्कारां रा पायां माथै जन्यौड़ी ही। वे पाया अवै हिलग्या है। आज वर्ण व्यवस्था संस्कारां पर नीं चाल नैं जनम माथै चालै है। पे'ली वर्ण व्यवस्था रे सागै जौ त्याग अर सेवारी भावना ही उणरौ लोप ह्वैग्यौ है। पे'ली **'संस्कारात् द्विज उच्यते'** कैवीजतौ उठै आज **'जन्मतः द्विज उच्यते'** मानीजै। उण जमांना में संस्कारां रो इतरौ महत्व हो के जठा तक कोई आदमी गुरुकुल में रैयनैं विद्या नीं पढतौ अर पोतारी योग्यता नीं वतावतौ, उठा तक वो संस्कारी नीं वाजतौ। जनम सूं तो हरेक मिनख नैं सूद्र मांनता। पछै रुचि देखनैं गुरु कुल में उणनैं उणीज भांत री सिक्षा दिरीजती अर गुरु उणरौ वर्ण मुकर करतो। उणरै पछै द्विज गिणीजतौ। द्विज सवद रो मतलव इज दूजौ जनम है। पण आज वा सगली व्यवस्था गड़वड़ ह्वैगी है। पण इतरौ ह्वैतां छतांपण हालतांई संस्कारां री कीमत तो वारी वा इज है। उणमें कोई कमी नीं आई है।

ओ कायदो है के जिण चीज की जितरी कमी ह्वैं वा चीज उतरीज मूंघी ह्वै। आज रा जमांना में चोखा संस्कारां री घणी कमी है, इण वास्तै इज वांरी कीमत घणी ऊंची है। आज रा जुग नैं संस्कारी रूप धन रो कसौटी जुग कैय सकां।

इतरौ ह्वैतां छतांई आंपां नैं हीणौ दाव नीं देवणौ चाहिजै। इणरै वास्तै कोसिस करणी चाहिजै। घर में वालकां नैं चोखा संस्कार मिलणा चाहिजै। मा वापां सूं आंपां नैं इतरी उम्मीद तो करणीज चाहिजै। चोखा संस्कारां री रांग जे टावर पणा सूं इज नांखदी जावै तो आगै जाय नैं वा पुख्ता वणै।

महारांणी मदालसा रो नांम तो आप सुण्यौ इज ह्वैला। महाभारत में वा एक जोगी मा रे रूप में ओलखीजै। मदालसा पोतारा सात दीकरां नैं पालणा हिंडावतां वखत इज वैरागी वणाय दीना हा। वा टावरां नैं हालरियौ गावती जरै उण वखत इण भांत गावती—

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि
संसारमाया परिवर्जितोऽसि।
संसार स्वप्नं त्यज मोहनिद्रां
मदालसा वाक्यमुवाच पुत्रम् ॥

हे बेटा, थूं सुद्ध है, थूं बुद्ध है थूं निरंजन है, थूं परमात्मा रो पवित्र अंस है। थैं संसार री मोहमाया छोड़ियोड़ी है। ओ संसार एक सपनौ है। इण संसार में थूं परमात्मा रा अंस रा रूप में आयौ है। इण वास्तै थूं इण संसार रूपी सपना नैं छोड़नैं इण मोह रूपी निद्रा नैं त्याग दे।

सरूपांत सूं इज इसा संस्कार मिलण सूं मदालसा रा सातूं बेटा मोटा होय नैं लूंठा त्यागी अर वैरागी बण्या। टाबरां रा बाप राजा नैं घणी चिंता हुई। उणैं पोतारी रांणी नैं कह्यौ—'रांणी थैं सातूंई बेटां नैं त्यागी अर वैरागी बणाय दीना। अबै म्हारा इण राज रो वारिसदार कुण बणैला। राजा बिना राज में रुलियारौ फैल जाएला। इण वास्तै म्हनैं चिंता ह्वै है के सेवट ओ राज संभालैला कुण ?' रांणी हंसती थकी जवाब दियौ—'नाथ! आपनैं इण खातर चिंता नीं करणी चाहिजै। अबकालै म्हारी कूख सूं जिकौ बेटौ जनमैला, उण में म्हूं इसा सागैड़ा संस्कार नांखूला के वो न्याव अर नीति सूं प्रजारी पालणा करैला।' आपनैं या सुणनैं अचंभौ ह्वैला के मदालसा रौ आठमौ बेटौ एक नीतिवांन अर प्रजापालक राजा बण्यौ। मदालसा पालणा में सूतौड़ा बेटा में ए संस्कार नांख दिया हा।

ओ है असली मारो पे'लौ फर्ज। जनम देवण मात्र सूं मारो फर्ज पूरौ नीं ह्वै। टाबरां नैं ढंग सर सिक्षा देवणी अर वां में चोखा संस्कार भरणा ओ मां रो इज फर्ज है। मानैं इण फरज रो पालण करणौ इज चाहिजै। मारवाड़ री वीरांगनावां टाबरां नैं किण भांत हालरियो गावती थकी वीरता रा संस्कार नांखती, उणरौ नमूनौ इण भांत है—

बालौ पालणां बाहर आयौ, माता वैण सुणावै यूं
म्हारी कूंख सिराहिजै रे बाला, म्हूं थनैं सखरी घूंटी दूं।
गोदी सूतौ बालो चूंघै, माता वैण सुणावै यूं
धोला दूध में कायरता रो, कालौ दाग लगाइजे ना।
सोवन पालणै बालो झूलै, झोलत-झोलत बोली यूं
उतरी वार हिलाइजै रे धरती, जितरा म्हूं थनैं झोला दूं।

आजरा जुग में इण भांत संस्कारां री चिंता करण वाली मातावां कितरीक है। मा वां जे गेहणा-कपड़ां रो मोह ओछौ करनैं, बालकां रे संस्कारां कांनी ध्यांन देवती ह्वै तो ओ कांम कोई अवखौ नीं है। हालरिया अर भजनों रे सागै टावरां में आछा संस्कार नांखणा मा रे हाथ री वात है। मावां कांई नीं कर सकै ? महासती मदनरेखा पोतारा टावरां में आछा संस्कार नांखवा खातर कितरौ त्याग कीधौ, कितरौ विखौ भोगवियौ। मदनरेखा रो नांम आपणा मुलक रा इतिहास में अमर है। महासती सीताजी पोतारा वेटां लव-कुस नैं आश्रम में उछैर नैं मोटा किया। पण उणां में जो संस्कार नांख्यौ वांनै देख'र संसार अचूंभै रैयग्यौ।

इण कांम में मावां रे आगै पण कई अडचणां आवै। पण वांनै पोतारे मन में त्याग री भावना राखणी चाहिजै। दुखां ने सैंन करण वास्तै थोड़ी हिम्मत चाहिजै। कारण के आ पोतारे धर्म री पालणा है। इण वास्तै अड़चणां नैं आवकारियां सिवाय दूजौ कोई मारग इज नीं है। टावरां में संस्कार नांखतां वखत मा वापां में सांम्हां पे'ली अड़चण जिकौ आवै वा आ है के मिनख में तीन तरैरा संस्कार प्रवल ह्वै। एक पेला भव रा, दूजा मा वापां अर कुटुम्व रा अर तीजा समाज रा। पेला भव रा अर समाज रा संस्कारां नैं मिटावणा घणा दोरा है। पण घर रो वातावरण जे चोखौ ह्वै तो ओ कांम इतरौ दोरौ नीं है। पण मा वापां नैं त्याग, सेवा अर संयम री मूरत वणनैं टावरां सांमी एक दाखलौ उभौ करणौ पड़ैला। इण कांम में जे गफलत राखी तो मांमलौ गड़वड़ ह्वै जाएला। इण वास्तै पूरी सावचेती राखणी चाहिजै। धीरप सूं कांम लेवणौ पड़ैला। समाज में जिकौ कुसंस्कार वलियौड़ा है वांरै लारै पड़णौ पड़ैला। इण भांत चालवा सूं इज—देवगुरु जणणी संकासा—देवतावां अर गुरुवांनी मा जिसी वण सकै। एक कवि मां नै चेतांमणी देवतां कह्यौ है—

जणणी जणै तो भगत जण, कै दाता कै सूर।
नीं तो रेहीजै वांझणी, मती गुमावौ नूर॥

मावां खातर कितरी मोटी वात वताई है। मा वाप जे इण भांत आछा संस्कारां रो 'दांनयज्ञ' करण नैं तैयार ह्वै तो कुदरत पण जरूर वांरी मदद करै। धर्म गुरु पण वांरा त्याग अर तपस्या नैं टेकौ देवै। पण इण वात री सरुआत घर सूं ह्वैला।

आछा संस्कारां री पालणा इण भांत सरु ह्वैणी चाहिजै—(१) संकल्प, (२) टेव (३) सुभाव अर (४) संस्कार। सबसूं पे'ली तो मा बापां नैं पोतारै मन में ओ डिढ संकल्प करणौ पड़ैला के आंपांनैं टाबरां में आछा संस्कार नांखणा है। इण वास्तै त्याग, तपस्या, धीरज अर संजम सूं कांम लेवणौ पड़ैला। डिढ़ संकलप बिनां कोई पण कांम पार नीं पड़ै। इण वास्तै सबसूं पे'ली तो आ प्रतिज्ञा लेवणी पड़ैला के म्हैं संकलप सूं डिगांला नीं। इणरै पछै मा बापां नै पोतारी इसी टेवां पाड़णी पड़ैला के जिणां नैं देखनैं टाबरां माथै चोखौ असर पड़ै। मा बापां री कोई टेव सूं जे टाबरां ऊपर खराब असर पड़ती दीसै तो उणां नैं वा टेव छोड़ देवणी पड़ैला। टाबर मतैई चोखी टेवां सीखै इण वात री पण पूरी तौर सूं निंगेदस्ती राखणी पड़ैला। जे आजु-बाजु रा वातावरण सूं टाबरां माथै खराब असर पड़तौ ह्वै तो वातावरण बदलवा वास्तै कोई दूजी ठौड़ जावणौ पड़ैला। धार्मिक स्थानां के सभावां में टाबर नैं लेजावणौ पड़ैला।

इण भांत चोखी टेवां पड़ियां पछै बालकां रो सुभाव मतैई आछा संस्कारां कांनी वलवा लाग जावैला। पछै तो मा बापां री आधो दैंण ओछी ह्वै जावैला। टाबरां रे सुभाव रो घड़तर एक वार ठीक ह्वै जाए तो वां में चोखा संस्कार मतैई आय जावैला। मा बापां रो जीवण पण त्याग अर तपस्या सूं पूरण ह्वै जाएला पण सजाग तो रैवणौ पड़ैला इज।

इण भांत जे टाबर पणा सूं इज आछा संस्कार पड़ै तो वे आखी उमर कायम रैवै। आछा संस्कार पाडणा कोई टाबरां वाला रांम किया कोयनी। उण वास्तै भोग देवणौ पड़ै। त्याग, संजम अर धीरज बिनां सगली वातां थोथी है।

यूं देखां तो संस्कार पलटवा वास्तै कांई धणौ जोर नीं घड़ै। फगत द्रिस्टीकोण बदलणौ पड़ै। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान न्यारा नीं हुवा जित रै इण धरती माथै सरीखी मालकी ही। उण जमीन में आज ई कोई फेरफार नीं हुवौ। जमीन तो ही जिसी री जिसी इज है अर ही जठै री जठै इज है। फगत मिनख री भावना में फरक पड़ियौ है।

पाकिस्तान वाला कैवै के पाकिस्तान म्हांरौ मुल्क है अर हिन्दुस्थान वाला कैवै के हिन्दुस्थांन म्हांरी बापीकी है। इणरौ कारण ओ के

मांनखा रे जीवण में फेरफार हुऔ है। इण भांत संस्कारां में फेरफार लावण सारू जीवण में फेरफार लावणौ पड़ै। पण जो जीवण में फेर-फार नीं आवै अर फगत धरती, धर्म, जात-पांत के देस में फेरफार कियौ जावै तो उणां रो एक लगार ई असर नीं पड़ै। मांनखा री जो अंदरूणी विरती है, उण में जो फेरफार नीं आवै उठा तक जीवण में ई कोई भांत रो फरकनीं पड़ै। अर जीवण में फेरफार नीं व्है जितरै संस्कारां में ई कोई फरक नी पड़ै।

कोई मिनख नैं जे कह्यौ व्है के खेतर में सूं कपास वीण नैं पेरले तो आ वात कियां वण सकै? इण कपास सूं सूतर कातीजै, सूतर रो कपड़ौ वणीजै अर कपड़ां रो पेरण के कोट सीवीजै, जरै इज वो पेरवा में कांमै आवै। इण कपड़ा रे ज्यूं जीवण में पण आछा संस्कार पड़ियां पछै इज जीवण उपयोगी वण सकै। संस्कारां विनां री मांनखा जूंण सफा नकांमी है। इसी जीवा जूंण सूं नीं पोता रो कल्यांण व्है अर नीं संसार रो। मांनख जीवण रा मोटा आगी वांण भगवान महावीर कह्यौ है—

'असंखयं जीविय मा पमायए'

हे हुँसियार मिनखां, जठा तांई थारौ जीवण विना संस्कारां रो व्है, उठा तांई आलस मत करजौ। संस्कारी जीवण री चोटी लग तो कोई वीतरागीज पूग सकै, पण कोई वैरागी के सद्गृहस्थी रो जीवण पण आछा संस्कारां सूं भरपूर व्है।

मिनख रो जीवण संस्कारी वणै जरै त्याग, वैराग, धर्मपालण अर आध्यात्मिकता पण जीवण में आवै। इण सूं जीवण इसौ वणै के वो पोतारौ अर दूजां रो पण भलौ कर सकै।

एक चित्रांम वणावणियौ चित्रांम वणावै जरै पे'लौ पे'ल फगत लकीरां इज खांचै। इण लकीरां कांनी कोई ध्यांन नीं देवै। कारण के खाली लकीरां कोई नैं प्रेरणा नीं दे सकै। पण वो इज चित्रांम जद रंग अर रेखावां सूं पूरण होयनैं मिनखां रै निजरां आगै आवै तो लोग उणनैं देखण खातर टूटा पड़ै।

इणीज भांत खेतर में उभौड़ौ धांन मिनख रे खावण लायक नीं व्है। उणनैं वाढणौ पड़ै, लाटां में लेजाय नैं गा'णौ करणौ पड़ै, उपणणौ पड़ै, आछा धांन नै पीसणौ पड़ै अर इणरै पछै उणरी रोटी

बणावणी पड़ै । जरै वो धांन मिनख रे खावा लायक बणै । कैवण रो मतलब ओ के इतरा संस्कारां पछै धांन खावा लायक व्है ।

इणीज भांत कोई मकांन रा फगत भींतड़ा उभा किया जावै । नीं तो उण में चूनौ सिमेंट हुऔ व्है, नीं बारियां दरवाजा लागा व्है अरनीं दादरौ— अंगासी बणिया व्है । तो इसौ मकांन कांई कांम रो ? मकांन तो सगला संस्कार पूरा हुवां पछै इज कांम रो व्है सकै ।

इणीज भांत फगत साढा तीन हाथ री मांनखा देही धारण कीनां सूं कांई नीं व्है । उण मांनखा देही में जठा तांई चोखी टेवां, आछौ सुभाव अर चोखा संस्कार नीं व्हैला उठातांई वा कोई कांमरी नीं ।

मोटौ हुवां पछै पण कोई मिनख चावै के म्हूं आछी टेवां अर चोखा सुभाव सूं संस्कारी बणूं तो वो लाग राख्यां सूं बण सकै है ।

इतरौ विचार कियां पछै अबै आप आछी तरियां समझग्या व्हैला के मांनखा रे वास्तै आछा संस्कार कितरा जरूरी है । जीवण में आछा संस्कार नीं होवण सूं कितरा गोटाला व्है, कितरौ रुलियारौ माचै, आ बात पण आप भली भांत समझग्या व्हौला । आछा संस्कारां बिना मिनख जमारौ इज रेल है । यांरे बिना नीं तो जीवण में साचौ झणकार पैदा व्है अर नीं जीवण में साचौ प्रकास आवै । भाग फाटै, पछै इज तो दिन री उगाली व्है । आछा संस्कारां रो जीवण में झांझरकौ हुयां बिना उण में धर्म, रास्ट्र, संस्कृति अर सभ्यता रो सूरज उगै आ बात असक्य नीं तो अबखी जरूर है ।

इण वास्तै आंपां नै पोतारे जीवण रो पूरौ ध्यांन राखणौ चाहिजै । उण में आछा संस्कार नांखणा चाहिजै । जिण भांत एक धोबी पे'ली कपड़ा धोवै, पछै उणां में कड़प दे अर सेवट उस्तरी करै । उणीज भांत पे'ली आंपां नैं आंपणा जीवण नैं सुद्ध करणौ चाहिजै, पछै आछी टेवांरी पांण देवणी चाहिजै अर सेवट उण माथै आछा संस्कारां री उस्तरी करणी चाहिजै । पछै देखौ आंपणौ जीवण कितरौ प्रकासमांन, कितरौ परोपकारी अर कितरौ कल्यांणकारी बण जावै ।

卐

६

मन रौ मरम

भारत री भोम अनादि काल सूं आध्यात्मिक विद्या री लीला स्थली रही है। आंपणा रिसी मुनियां रो अध्यात्म प्रेम संसार में सावौ है। अध्यात्म विद्या रा जितरा गुण अठारा मिनखां गाया है, उतरा दूजा कोई देस रा मिनखां नीं गाया। ओइज कारण है के इण भौतिक जुग में जनमियौड़ौ अठारौ मिनख पण संजम, तप अर आराधना रा अवखा मारग माथै चालण रो मन करै। जरै मन रूपी मतंग, विसय रूपी वन में निसंक मालवा रो मन करै उण वखत उणरै माथा माथै ज्ञांन रूपी अंकुस मेल नैं उणनैं रोकै। जद कांन फूटरी-फूटरी अपसरावां रा मीठा गीत सुणवा खातर उतावला व्है तो विवेक वांनैं रोकै। जद आंख्यां नाच जोवा अर सिनेमा देखवा फांफा मारै तो विचार उणनैं कन्ट्रोल में राखै। जद नाक फूलां अर अंत्तर री सुगंध वास्तै वरड़का वावै तो विवेक सूं उणनैं दूजै मारग घालै। जद सरीर कवली कवली चीजां नैं परस करण सारू उतावल करै तो ज्ञांन सूं उणनैं वस में राखै। इन्द्रियां जिण वखत विकार कांनी दौड़ै तो वांनै रोकनैं राखणौ सेहज कांम नीं है। इण वांगा नैं जठा तांई दूजा कांनी नीं वाली जै जीवन में आगै नीं वधीजै। आछौ संकलप आगै वधवा रो पे'लौ पगोथियौ है अर सुद्ध अध्यवसाय मोक्ष रो कारण है।

इण संसार में मांनखा रो मन एक अजव कोइड़ौ है। इणनैं भारत रा रिसी मुनियां खूव आछी तरियां ओलखियौ है।

मन है कांई? वो है किसोक स्थूल के सूक्ष्म? सरीर में किण ठौड़ है? इण सगली वातां माथै उणां घणौ ऊंडौ विचार कियौ है।

मन अणु है छतांपण उण में विद्युत सक्ति है। मन सूक्ष्म तत्व है, वां आंख सूं निजरै नीं आय सकै।

भगवती सूत्र में एक महत्व रौ सवाल आवै। गणधर गौतम भगवांन महावीर नैं पूछै के—भंते! आत्मा अर मन ए दोनूं एक चीज इज है न्यारी न्यारी चीजां है?

भगवांन पड़ुत्तर देवै—गौतम! आत्मा न्यारी है अर मन न्यारौ है। आत्मा अर मन दोनूं एक कोयनीं। मन ई बे भांतरो है- एक द्रव्य अर बीजौ भाव। द्रव्य मन अंतःकरण बाजै अर संसार रा हरेक जीव में व्है। भाव मन पौद्गलिक व्है, वो हरेक जीव में नीं व्है। स्वेतांबर मत रे हिसाब सूं ओ मन पूरा सरीर में व्है। अर दिगंबर मत रे हिसाब सूं हिरदा में व्है।

एक आचारज मन री व्याख्या करतां कह्यौ है—**संकल्प विकल्पात्मकं मनः**—जिण में संकलप-विकलप री अतपत व्है वो मन है।

मन आत्मा रूपी राजा रो मंत्री है। मन मलीन व्है जद आत्मा पण मलीन व्है जावै। मन री चलवल सूं कर्म रूपी सत्रु अंतरात्मा में पूगै अर आत्मा नैं संसृति रा जाडा वन में फेरै। जिण वखत मन-मंत्री में पवित्र प्रेरणा, सद्भावना, अर चोखौ अध्यवसाय व्है उण वखत आत्मा कालख नैं छोड़ै अर सुद्ध बणै।

कोई मिनख पूरा संसार नैं जीत लेवै पण पोतारा मन नैं नीं जीत सकै तो उणरी आ जीत खोटी जीत है। ख़री बात तो आ है के वा जीत नीं व्है नैं फगत जीत रो भरम है। मिरग जल री गलाई वो साचौ लागै पण भरमना है।

जिकण धणी पोतारा मन में जीत लियौ उणैं सगला संसार नैं इ जीत लियौ। एक आचारज कह्यौ है—

'मनोविजेता जगतो विजेता'

जैन संस्कृति तो बारली जीत नैं गिणै इज कोयनीं। जैन संस्कृति तो जोर देय नैं वारंवार कैवे के संसार नैं जीतणौ सेहज है पण पोतारा पंड नैं जीतणौ घणौ दोरौ है। सिकंदर, नेपोलियन अर हिटलर संसार नैं जीत्यौ आ वात खरी पण वे पोतारा मन नैं नीं जीत सक्या। पोतारी निबलाइयां अर खोटी विरतियां नैं नीं पड़प सकिया इण कारण वे साचा

विजेता नीं गिणी जै । वे मन रा दास हा । पांवडै पांवडै ठोकरां खावणी वांरे करम में लिख्योड़ी ही । इण वास्तै इज भगवांन महावीर कह्यौ है—'साधकां, सवसूं पे'ली यांरी खोटी विरतियां नैं जीतो' ठीक आइज वात भगवांन श्रीक्रिसण अर महात्मा बुद्ध पण कही है । भगवांन महावीर रा सवदां में—

अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो ।
अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सि लोए परत्थए ।

मिनख नैं पोतारो दमन करणो चाहिजै । आ वात खरोखर दोरी है । पोतारो दमन करणार मिनख इणलोक अर परलोक दोनूं में सुखी रैवै ।

रिसी मुनियां मन नैं वगर पांखां रो पंखेरू कह्यौ है । विना पांखं ई वो कितरौ अलगौ उड़ सकै । आंपां अठै वैठा हां, पण मन कठैई रो कठैई भमतौ फिरै । आंपां हाथ सूं माला फेरवां पण मन तो कठैई रो कठैई भटका मारतौ फिरै ।

मन पूरौ चंचल है । मन री चंचलता देख नै मोटा मोटा सूरवीर घवरीज जावै । इणां रे पगां में आंटियां आवणी मांडै अर वे थग थग करण लागै ।

एकर संत संस्कृति रा प्रतिनिधि केसीस्रमण गौतम गणधर नैं पूछ्यौ हो— हे गौतम, ओ मन रूपी घोड़ो घणौ अचपलौ अर डरावणौ है । थे इणरै माथै वैठा हो पण थे पड़ौ कोयनीं क्यूं ? थे इण नैं कब्जै किण भांत राखौ हो, इणरौ उपाय तो वतावौ ।

धनुर्धारी वीर अर्जुन रो नांम सुणतां इज भला भला टणक चंदां रा कालजा कांपण लागता । पण वो इज अर्जुन मन री चंचलता रे कारण महाभारत रा जुद्ध में हारग्यौ । वो पोतारा मन नैं कावू में नीं राख सक्यौ । उणैं भगवांन क्रिसण नैं मन नैं कावू में राखवारो उपाय पूछ्यौ—हे क्रिसण, ओ मन अणूंतौ अचपलौ है, पवन रे माफक वेगवांन है । इण नैं कावू में किण भांत राखणौ ?

चंचलं हि मनः कृष्ण, प्रमाथि बलवद् दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ।

माया रा मोह पास में वंध्योड़ौ मन पाप रा मारग माथै चालै । ज्यूं भाखर रा टूंक सूं नदी रो झरणौ धरती कांनी अरड़ाट करतौ

आवै उण भांत मन री गति है। उण नैं रोकण रा भगवांन स्रीक्रिस्ण दो तरीका बताया—एक वैराग रो अर दूजौ अभ्यास रो। गणधर गौतम केसी स्रमण नैं कह्यौ—प्रमाद कांनी ढलता मन रूपी घोड़ा नैं ग्यांन रौ लगांम सूं रोको।

मन में ताकत है पण आत्मा में उण सूं ई बेसी बल है। आत्मा चावै तो अभ्यास, वैराग अर ग्यांन सूं मन नैं कुमारग कांनी सूं खांच नैं सुमारग कांनी लेजा सकै है। खोटा विचार छोड़ नैं चोखा विचारां रो चिंतन करणौ ओ इज कल्यांण रो साचौ मारग है। ओ इज मन रो उर्ध्वीकरण बाजै। ग्यांनी मन प्रगति रे पंथ माथै आगै वधै अर अग्यांनी मन पतन कांनी मुहार राखै।



७

ईमांनदारी री जोत

आंपणी भारत आध्यात्मिक मुल्क गिणी जै। अठै हजारां—लाखां मिनखां आध्यात्मिकता री धूणी धूकाई है, आध्यात्मिकता रा उपदेस दिया है अर आध्यात्मिकता रा गीत गाया है दरसण सास्त्र, धर्म सास्त्र अर न्यायसास्त्र, ए सगलाई सास्त्र इण वास्ते इज वण्यौड़ा है के वे मिनख नैं पोतरा धैं कांनी ले जावै। संगला सास्त्रां मे मांनखा रो चरित्र उण रे जीवण रो पायो गिणी जै। जो मिनख रे जीवण में चरित्र रूपी पायो इज नीं व्है तो पछै धार्मिक क्रियावां, लांवा-लांवा पूजा-पाठ, धार्मिक ग्रंथां रो अध्ययन, लच्छादार भासण अर प्रवचन सव बेकार है। विनां रांग रा मकांन जिसा है।

कोई पण मिनख मकांन बांधै जरै सब सूं पे'ली उणरी रांग भरै। मोटी-मोटी हवेलियां री रांगां पण घणी ऊंडी खोदी जै। जे रांग पक्की नीं व्है तो उण मकांन नैं खतरो इज रैवै। इण वास्तै जे मिनख पणा रो मकांन मजबूत बणावणो व्है तो इमानदारी री रांग ऊंडी नांखणी चाहिजै। नीं तर वादां रा भूतैला, लोभ अर मोहरी वावल, तिरसणा रो तोफांन, अर धरती कंप रूपी भय उण नैं धुड़ा नांखैला, माटी में मिलाय देला।

यूरोप में माइकल ऐंजिलो नांम रो एक प्रख्यात कलावंत व्हियो है। ऐंजिलो री ख्याति यूरोप रा खूंणा खूंणा में फैल्यौड़ी ही। इण कारण एक बीजो कलावंत उण सूं ईसकी करण लागो। उणै कह्यो—म्हूं कितराई वरसां सूं चितरांम बणा वूं हूँ, पण मिनख ऐंजिलो नैं क्यूं चावै। उणरा वखांण क्यूं करै? इण वास्तै म्हूँ एक इसो

चितरांम बणावूंला के ऐंजिलो री कीरत झांखी पड़ जा वैला। ओ विचार करनैं उणें एक लुगाई रो चितरांम कोरणौ मांडियौ। इण वास्ते वो मुलक, मुलकां में फिरतौ फिरियो। उणें भांत भांती लुगायां रा उणियारा, हलण-चलण, ओढ पेर अर वांरो अंग-अंग खरी मीट सूं जोयौ अर पछै एक सांगोपांग चितरांम पूरी मैंणत सूं बणायौ। चितरांम नैं ऊंचौ भींत माथै लटकाय दियौ, जिण सूं वो बैठक में बैठ्यौ ई देख सके। इण भांत चितरांम नैं ऊंचौ टेरनैं वो देखण लाग्यौ के उण में कोई कमी तो नीं रैयगी? ध्यांन सूं देख्यां पछै उणनैं लखायौ के चितरांम में थोड़ी कमी रैयगी है। पण मोकली माथा फोड़ी कियां पछै ई ओ पतो नीं लाग सक्यौ के कमी कांई है? एक बार माइकेल ऐंजिलो उठी ह्वै नैं निकलियौ। उणरी निजर उण चितरांम माथै पड़ी। उणैं देख्यौ के चितरांम खरेखर फूटरौ बण्यौड़ौ है पण थोड़ी सीक खांमी है। वा खांमी पण उणनैं निजर आयगी। उणैं मिनखां नैं पूछ नैं उण चितरांम नैं बणावण रो पतो ठिकांणौ जांण लियौ अर उणरै घरां जाय पूगौ। उणैं कह्यौ—'भाई! थारौ बणायोड़ौ चितरांम खरोखर सरावण जोग है, पण उणमें थोड़ी सीक खांमी रैयगी है।' पे'लौ कलावंत बोल्यौ—हां भाई, थारी बात साची है। खांमी तो म्हनैं पोता नैं ई लागै है, पण वा खांमी है कांई? आ समझ में नहीं आवै है।' माइकेल बोल्यौ थारौ ब्रुस म्हनैं दे। जिकी खांमी है वा म्हूं पूरी कर नांखूला।' पे'लौ कलाकार सावचेत करतौ थकौ बोल्यौ—भाईड़ा, ओ चितरांम बणावण में म्हनैं पूरी मैंणत पड़ी है, इसी नीं ह्वै के थूं चितरांम नैं खराब कर नांखै।' माइकेल बोल्यौ थारौ चितरांम म्हूं हरगिज नीं विगाडूं, थूं ओ भरोसो राखजै।' पे'ले कलावंत माईकेल नैं ब्रुस सूंपियौ। अर माईकेल ब्रुस लेयनैं चितरांम में आंख्यां रे मांयनैं दो काला टीबका दिया। ओ कांम अधूरौ रह्योड़ौ हो अर आइज उणमें खांमी ही। इण कारण इज चितरांम कांइक झांखौ लागतो हो। टीबका लागतां इज चितरांम जांणै अबै मूंडै बोले'क अबै मूंडै बोलै, इसौ ह्वैग्यौ। चितरांम रो रूप इज बदलग्यौ। पे'लड़ै कलाकार उणरौ नांम पूछ्यौ जवाब मिलियौ- 'माइकेल!' उणैं माइकेल सूं माफी मांगी।

इणीज भांत जिकौ जीवण रा साचा कलाकार ह्वै, वे पोता रा जीवण में कांई खांमी है, इण वात नैं तुरत जांण लेवै। अर जठा तांई

वा खांमी मिटै नीं वे नेहचा सूं नीं वैठै। उण चितरांम में फगत दो काली टिबकियां री खांमी ही। इण खांमी सूं चितरांम भांखा लागतो हो। इणीज भांत जीवण रो चितरांम वणावती वखत उणमें जे प्रामाणिकता अर सच्चाई नीं आवै तो पूरा जीवण चितरांम रो रंग फीक पड़ जावै।

भारत रो साचौ धन माल चरित्रनिर्मांण है। भारत रा नांमचीन संसां, मुनियां, तीर्थंकरां, तत्ववेत्ताओं, अर सास्त्रकारां सवसूं घणौ जोर चरित्रनिर्मांण माथै दीनौ है। पण जे आंपां चरित्रनिर्मांण कांनी ध्यांन नीं देवां अर अनीति, अन्याय, वेईमानी अर दगाखोरी कांनी वलण राखां तो इणरौ मतलव ओह्वियौ के आंपां उण महापुरखां रे पर पूठी घाव घालां हां। वांरा कल्यांणकारी उपदेसां नैं ठोकर मारां अर वांरे प्रति वनावटी सिरधा राखां। इण भांत आंपां पोते आंपणीज आत्मा नैं धोखो देवां। अर उण महा मानवां री वदनांमी करां, वा वधारे।

एक विद्यार्थी पाठसाला में भणीजवा जावै। पण उठै जाय नैं ठालौ वैठौ रैवै अर मन लगाय नैं नीं भणीजै। आखौ दिन अठी उठी रोवतौ अर रखड़तौ फिरै। सेवट परीक्षा रो वखत आवै जरै नापास ह्वै।

इसो विद्यार्थी पोता रो नुकसांण तो करै इज है पण उणरा मा वापां नैं ई धोखौ पूगावै। उणरा गुरुवां नैं पण वदनांम करै। कारण के मिनख तो इण में दोस गुरुवां रो इज गिणै।

खरोखर इणीज भांत आज भारत री प्रजा रिसियां, मुनियां अर तत्ववेत्ताओं री भगत तो गिणी जै, पण वांरा उपदेसां रे सेडै ई नीं वैवै। जीवण सूं वांरों तल्लौ मल्लौ ई नीं राखै। पछै वदनांमी रा भागीदार वां महापुरखां नैं वणाया जावै तो ओ कठारौ न्याव है। भारत री प्रजा परदेसां री नकल करनैं वखत नैं वरवाद करै। इण सूं परदेसियां री निजरां में पण हलकी गिणी जै।

आज इण वीसवीं सदी में मांनखा में से सच्चाई री जोत प्रगटावण री पूरी जरूरत है। कारण के सच्चाई रो दीवौ तो जांणे भारत भोम में राज इज ह्वै ग्यौ है। भारत रो तत्व ग्नांन अर भारत री संस्कृति भलांई ऊँचा आसण माथै वैठी ह्वै पण सच्चाई री दौड़ में वो आथमणा मुल्कां री वरौवरी नीं कर सकै। अठै ठौड़-ठौड़ धर्म रा वजार मंडियौड़ा

है। बात-बात में धार्मिक क्रियाकांडां रा दरसण ह्वैला। खावण पीवण के बाबत पण मोकला भेदभाव मिलैला। पण जिकौ साचौ धर्म ईमांन है, मिनखपणौ है. उण रौ इण धरती ऊपर सूं लोप ह्वियौड़ौ है। आज जीवण रा हरेक क्षेत्र में ईमांनदारी रो काल पड़ियौड़ौ है। कांई समाज, राजकाज, धर्म, कला अर कांई ज्ञांन विज्ञांन सगली ठौड़ सूं इमांनदारी जांणै प्रलोप इज ह्वैरी है। इसौ लागै जांणै उणें पोतारौ आसण भारत में सूं उठाय नें दूजा मुल्कां में लगाय दियौ है।

फाहियान अर मेगस्थनीज जिसा जात्रुवां वांरी जात्रा में रो हाल लिखतां लिख्यौ है—के भारत भोम रा मिनख इतरा सरल अर ईमांनदार है के वे पोतारा घरां रे अर दुकांनां रै ताला ई कोय देवै नीं। हीरा, मोती अर जवेरातां री दुकांनां पण उघाड़ी पड़ी रैवै। पण कठैई चोरी—सकारी नीं ह्वै। वैपार में पण पूरी प्रामाणिकता बरती जावै।' उण परदेसी जात्रुवां री ए वातां साचीज ह्वैला पण आज भारत भोम माथै निजर नांखौ तो अंधारौ इज निगै आवै। कविवर रविन्द्रनाथ ठाकुर चीन अर जापान जात्रा करणनैं गया, जणा उठारा लोकां वांनै कह्यौ—'आपरौ देस भारत कितरौ पवित्र है! उठै चोरी तो ह्वै इज नीं। कोई पेला रो हक्क मारै नीं। थांरौ देस खरौखर नसीब वालौ है।' ए वातां सुणनैं कविवर रो माथौ सरमसूं लुलग्यौ। उणां आंसूभीनी आंख्यां सूं कह्यौ—'भारत रै प्रति थांरी जिकी धारणा है, वा पुरांणी है। आज रौ भारत विसौ नीं रह्यौ। आज तो सगलाई दुर्गुण भारत भोम में मौजूद है।'

इण सूं बेरौ पड़ै के भारत रा मिनखां री परमात्मा पर सूं सिरधा उठती जावै। जे वांनै परमात्मा पर डिढ सिरधा ह्वै तो वे बेईमांनी रो आचरण नीं राखै। भारतवासियां नैं इतरोई भरोसो नीं रह्यौ के जे दांनत सफा राखां तो भगवांन भूखा कदैई नीं राखै। नीत सफा रैवै तो चांच दीनी जिकौ चूगौ पण देवेला। ईमांनदारी मांनव जीवण री रक्षण करवा वाली है। फगत सरीर रा रक्षण नैं इज आंपां नैं रक्षण नीं मांनणौ चाहिजै। अंग्रेजां भारत में मिनखां रा सरीर रक्षण खातर कितरा सुख-साधन जोड़िया, नौकरियां में छुट्टियां रौ वधारौ कीनौ। पण उण सूं अठारा मिनखां रो आत्म पतन अर आंतरिक सोसण कितरौ ह्वियौ, उणरी कोई कीमत है? इणरौ विचार कोईक करै? भारत रा मिनखां तो भगवांन नैं भूलनैं गौरांग प्रभु अंग्रेजां माथै इज सिरधा

राखण लागग्या। जिण सूं उणां में वेईमांनी, अनीति, कांमचोरी, आलस अर लांच रिस्वत जिसा दुर्गुण भरीजग्या। आज भारत में अंग्रेज कोय नीं है पण वांरै रोपियोड़ौ वेईमांनी रूपी झाड़कौ खूब ऊंडी जड़ां घालनें घेर घुमेर उभौ है। पण मांनखा नें आ वात याद राखणी चाहिजै के—

'जिसके जीवन में ईमान, उसका रक्षक है भगवान।' जीवण में ईमांनदारी आवै जद भगवांन रै प्रति प्रेम पण वधवा लागै। इण सूं उणरी तवियत पण चोखी रैवै। उणरी आत्मा पण निर्मल वणै। इण वावत एक ताजौ दाखलौ इण भांत है—

अेमदावाद रा एक लत्ता में एक साग भाजी रो वैपारी रैवतौ। जात रौ काछियौ। उणरौ साग भाजी रौ वेपार अटौरियां में चालतौ हो। उणरा गिराकां सागै उणरौ वैवार वड़ी प्रेम रौ हो। वो रोज पूजा पाठ करतौ। वो तीरथ-जात्रा पण करतौ। पण उणमें फगत एक इज ओगण हो के वो वैपार में हर दम कूड वोलतौ। धूड़ सिवाय घड़ौ नीं अर कूड़ सिवाय वैपार नीं। आ उणरी धारणा ही। वो हरदम कूड़ वोलतौ अर वेईमांनी वरततौ। उणरै हिरदा में आ वात आछी तरियां वैठगी ही के वैपार में विना कूड़ कांम चालै इज नीं। कई वरसां तांई तो इण भांत उणरी गाड़ी गुड़कतीग्यी। साग भाजी वेचतां वखत वो ताकड़िया में कांणम राखतौ। गिराक देखता केवांनें माल नमतौ मिलै है अर भाव पण वाजव है। पण सही वात आ ही के माल ओछौ अर भाव में पण मूंघौ गिराकां रै पल्ले घलीजतौ। इण भांत काछियौ कूड़ रै पांण कसब कमावतौ।

उण काछिया रै पाड़ोस में एक डॉक्टर रैवतौ। ओ डॉक्टर काछिया रौ साथी हो। ऐलोपेथी री पदवी ह्वै तां छतांई इण डॉक्टर नें आयुर्वेद अर प्राकृतिक चिकित्सा माथै पूरी सिरधा ही। दवारी सीसी अर इंजेक्सन रो तवीड़ौ मारनें पैसा पटकावा री उणरी कदैई नीत नीं रही। रोगी नैं निरोग वणावण रै सागै वो उणनैं नीतिवांन, ईमांनदार अर सदाचारी वणावण री पण पूरी कोसिस करतौ। इण डॉक्टर री पक्की धारणा ही के वेईमांनी, अनीति अर अनाचार रै कारण इज मांदगी आवै।

एक दिन वात सूं वात निकली जद उणै काछिया नैं पूछियौ—थे

हरदम मांदा कीकर रैवौ ? इणरौ कारण कांई है ? काछियौ आठूं पो'र बेचैन अर उदास रैवतौ। पण उणनैं कोई कारण ध्यांन में नीं आवतौ। आज डॉक्टर उणरै मरमरी बात कही तो वो बोल्यौ के डॉक्टर सा'ब आप इज बतावौ के म्हूं हर दम मांदौ क्यूं रैवूं ?' डॉक्टर मुलकतौ थकौ बोल्यौ—'भाई, म्हूं तो आइज मांनूं के मिनख रै जीवण में जितरी सुद्धता ह्वै, जीवण में वो उतरौई निरोग रैवै।" गांधी जी रांमनांम री रटण सूं रोग मेटण री बात कैवता, वा बात खरी है। पण मिनख रै जीवण में पवित्रता अर ईमांनदारी ह्वै तो इज रांमनांम पण कार आवै। नीं तो नीं। म्हूँ तो आ जाणूं के थांरै जीवण में कठैई न कठैई असुद्धाई ह्वैणीज चाहिजै। इण कारण सूं इज थे हरदम मांदा रैवौ।' डॉक्टर री बात सांभल नैं काछिया में रांम वापरियौ। उणैं डॉक्टर रै आगै पोतारौ गुन्हौ कबूल करतां कह्यौ म्हारै जीवण में फगत इतरीज असुद्धाई है के म्हूं माप तोल में गड़बड़ करूं। इतरा दिन म्हारी आ धारणा ही के कूड़ बोलियां बिना अर ओछौ माप तोल राखियां बिना वैपार में पार नीं पड़ै। पण आज म्हारी आंख्यां ऊघड़ी के इणखोट रै कारण इज मांदगी म्हारै लारै लागौड़ी है। म्हूँ आज सूं इज इण खोट रै लारै कांटा वाल दूंला।

उण दिन सूं काछियौ ईमांनदारी सूं धंधौ करण लागौ। वो बाजबी भाव सूं वैपार करतौ अर गिराक नैं पूरौ तोल नैं देवतौ। सरुपांत में गिराक उणरा ढंग नैं समझिया कोयनीं सो गिराक टूटण लागा। पण काछियौ गाढ राख नैं रांमजी माथै पूरौ भरोसौ राखियौ। सेवट छ्ऐक महीनां पूठी उणरै वैपार में एकदम तेजी आई। दुकांन रै आगै गिराकां री भीड़ मचवा लागी। काछिया रौ मन हलकौ ह्वियौ अर उणरी तबियत पण ठीक रैवण लागी। उणैं नसा पता छोड़ दीना अर एक दम सादौ जीवण अपणाय लियौ। उणैं आपरौ खरचौ खातौई ओछौ कर लियौ अर एक दिन उणरै मन में मर्यादित नफारी बात पण बैठगी। उणैं नक्की कर लियौ के म्हारै वास्तै रोज रौ तीन रुपियां रो नफौ ठेलमौ। रोज तीन रुपिया मिल जावै तो मोकला। इण सूं वधारै नफौ आंपणै नीं चाहिजै। धीरै धीरै वो आडोस पाडोस में मिनखां री सेवा चाकरी पण करवा लागौ। इण भांत काछियौ भाई नकली भगत सूं असली भगत वणग्यौ। उणरौ सरीर पण सफा निरोगौ ह्वैगौ अर वो पोतारौ कांम आणंद सूं करण लागौ।

इमांनदारी री नैंनी मोटौ प्रसंग ई मांनखा रा जीवण नैं जगमगाय देवै। जिण वखत मिनख रा मन में ईमांनदारी रा आंकोर फूटै जद नकांमी वातां ठेका देय जावै। पछै तो कुदरत पण उणरौ साथ देवै।

वैवारिक जीवण में ईमांनदारी री कितरी कीमत है, आ वात सगलाई जाणै। जिकौ आदमी ईमांनदार ह्वै, उणरी आतमा हर वखत सजाग रैवै। उणनैं हरदम ओ भौ रैवै के कठैई म्हारा हाथ सूं वेईमांनी नीं ह्वै जावै। इण सूं उणरौ जीवण सजाग वणै अर मिनख उणनैं सिरधारी निजर सूं देखण लागै।

आध्यात्मिक क्षेत्र में पण ईमांनदारी रौ महत्व कमती नीं है। जिण मिनख में ईमांनदारी ह्वै वो इज मिनख आत्मवत् सर्वभूतेषु' रौ सिद्धांत पोतारा जीवण में उतार सकै। इण सूं उणरी आतमा अर परमात्मा रै कांनी वफादारी लागणी उघाड़ में आवै। ईमांनदारी सूं वो पोतारा जीवण नैं पवित्र वणावै। दूजां माथै पण उणरौ असर पड़ै। इण भांत वो आड़लौ-पाड़लौ सगलौ वातावरण ई पवित्र कर नांखै। मिनख पणारौ वो लूंठौ पुजारी बण जावै। जिण भांत एक दीवारी जोत सूं सौ दीवा चासीज सकै, उणीज भांत एक मिनख री ईमांनदारी रूपी जोत सूं कई मिनखां रै हिवड़ारी जोत में परगास पुगाइज सकै है। इण वास्तै आज सव सूं जरूरी चीज है ईमांनदारी री जोत नैं पलजलती राखणी। जिण सूं मांनवता रो परगास फैले अर दांनवता रौ अन्धकार मिटै।

इण वास्तै इण जमांना में आज सगली जगा कांई धार्मिक, कांई राजनैतिक, कांई सांस्कृतिक कांई वैवारिक अर कांई कौटुंबिक सव ठौड़ ईमांनदारी री पूरी जरूरत है। जे ईमांनदारी री जोत जगती रेवै तो इज सांति कायम रैय सकै, सुख रौ सूरज तप सकै अर मांनव जीवण ढंग सर वण सकै।

ईमांनदारी रौ अर्थ ओ है के पोतारा सिद्धांत माथै कायम रैवणौ, पोतारी जात, समाज अर भगवांन रै प्रति वफादार रैवणौ। जितरौ पोतारौ हक ह्वै, उण सूं वधारै लेवणरी इच्छा नीं राखणी। पराया हक री चीज नैं हरांम बरौवर लेखवणी। हक वाली वात, समै, मैंणत पैसौ, अर साधन, सगली ठौड़ लागू पड़ै। दाखला तरीके आंपां कोई नैं नौकर राखां। उणरी नौकरी रौ समै तय कीनौड़ौ ह्वै। पण आंपां

नौकर नैं समै उपरांत ई रोकां अर उण सूं कांमलां अर उणनैं पगार पण पूरौ नीं देवां। मजूरां नैं मजूरी वेला माथै नीं देवां। उणां सूं कांम वधारै करावां अर पैसा ओछा देवां। बिना हक रौ पैसौ भेलौ करां। ओछौ तोल, ओछौ नाप राखां अर चीजां में भेल सेल करां। एक चीज वताय नैं उणरी ठौड कोई दूजीज चीज देवां। सरकार नैं टेक्स ओछौ भरां के मुलगौ भरां इज नीं। खोटा चोपड़ा राखां अर खोटौ नांणौ चलावां। लाधौड़ी चीज पाछी नीं देवां। कोई री अमानत हजम करलां। कौई संस्था रौ चंदौ के फंड डकार जावौ के कोई विधवा गरीब ड़ी रौ धन अरोग जावां। आध्यात्मिकता रै नांम माथै कूड़ा चमत्कार वताय नैं मिनखां नै ठगां। लांच रिस्वत लेवां। सरकार री तरफ सूं ठेरायौड़ा व्याज सूं वत्तो व्याज लेवां। कालीबजार करां। कूड़ा प्रमाण पत्र, कूड़ा दस्तावेज अर खोटा बिल बणावां। कांम पूरौ नीं करां। अधूरौ कांम करनैं पैसा पूरा लां। दुकांन के मकांन री पाघड़ी लेवां के बखसींस मांगां। ए सगली बातां बेईमांनी गिणी जै।

यूं बेईमांनी री माला इत री लांबी चवड़ी है के उणरा मण का गिणता गिणताई काया ह्वै जावां। आज रा जुग में मिनखां बेईमांनी रा नवा नवा धंधा मोकलाई सोध लिया है। आथमणी संस्कृति रा असर में आय नैं आज रौ मांनखौ बेईमानी नैं पण कला अर संस्कृति रौ अंग गिणै। वेईमांनी सूं धन कमाय नैं जिकौ दांन करै वो पापी नीं बाजै। चालाकी सूं बेईमांनी करण वाला घणा खरा लोग पोतारा पाप माथै पड़दौ नांखण वास्तै एकाध संस्था में थोड़ौ घणौ दांन देय दै के कोई फंड फाला में थोड़ी घणी मदद कर देवै। कईक जणा धार्मिक जलसा गोठवै अर क्रिया कांड करावै। ए लोग आ सोचै के इण भांत वारै बेईमांनी रौ दाग मिट जावैला। पण आ फगत वांरी भरमना है। उल्टौ वां नैं कुदरत रा दरवार में बमणा पाप रौ फल भोगवणौ पड़ै। वेईमांनी करण वालौ वेवड़ौ पाप करै—एक तो वो आगला मिनख नैं छेतरै अर दूजौ कुदरत नैं पण छेतरवा री कोसिस करै। अर पछै अन्याव सूं भेला की धौड़ा धन री धूड़ समाज री आंख्यां में नांखनै भलौ मिनख वणणौ चावै।

इण भांत वेईमांनी रो पाप घणौ खराब है। बेईमांनी सूं पैसौ भेलौ करण वाला नैं मिनख भलौ आदमी कैवौ भलांई, है वो पापात्मा। पछै

वो पोतारा पापां नैं ढाकण वास्तै भलांई धार्मिक अफंडा करै, पण पाप सूं छुटकारौ नीं मिल सकै। छुटकारौ मिलण रो रस्तौ है जरूर, पण वो दूजौ है। उण पापात्मा जिण मिनखां रौ हक भांग नैं पैसौ भेलौ कीधौ है, जिणां नैं छेतरिया है, जिणां रै सागै बेईमांनी कीवी है, वां नैं जे ब्याज समेत पैसा पाछा देय दे तो भर पाई व्है सकै। नुकसांण कोई रो कीधौ व्है अर पैसा कोई दूजा नैं के कोई संस्था में देय नैं वाह-वाह वाजणौ चावै तो उणसूं भर पाई हरगिज नीं व्है। इण भांत पाप नीं धोवी जै। खरौखर पाप नैं धोवा रौ रस्तौ ईमांनदारी रौ है। वैवार सुद्धि पण ईमांनदारी रौ एक अंग है। जिण मिनख रौ वैवार सुद्ध नीं व्है उण में नैतिकता पण नीं व्है। उणरौ आत्मरक्षण करवारी ताकत कोई पण धार्मिक क्रिया कांड मैं नीं व्है सकै।



८

धर्म रौ मूल-मंत्र

आंपणौ भारत एक धर्म प्रधांन देस है। अठै धर्म जिंदगी रौ आधार भूत तत्व गिणी जै। आज संसार में जिकौ भारत रौ अंतर्रास्ट्रीय महत्व है वो धर्म रै कारण है, संस्कृति अर सभ्यता रै कारण है। पण फगत इतिहास अर संस्कृति रा गीत गायां सूं इज कांई दिन नीं वलै। जे आंपां आंपणा इतिहास अर आंपणी संस्कृति में सूं कांई सार लेय नैं आंपणा जीवण में उतारां तो इज बातड़ी वणै। आज भारत भोम रौ मांनखौ धर्म-सास्त्रां, त्याग-वैराग अर आत्मा-परमात्मा री बातां करै। बात बात में वेद, उपनिसद, गीता रा दाखला देवै। पण वांरै जीवण में धर्म नैं कितरीक जायगा मिलियौड़ी है ? प्रमांणिकता कितरीक है ? अर ईमांनदारी कितरीक है ? सही बात आ है के आज भारतवासियां रा विचार तो धार्मिक है, पण वांरौ आचार अधार्मिक है। अंग्रेजी रा मांनीता कवि विलियम सेक्सपियर कह्यौ है—

Religion without moralitiy is a tree without pruit and moralitiy without religion is a tree without root. (नैतिकता बिना रो धरम फल हीणा झाड़ जिसौ है अर धर्म बिना री नैतिकता मूल बिना रा झाड़ जिसी है)

आज नूंवा सिरजण री पुण्य घड़ी में लोकतंत्री भारत ई दूजा देसां री गलाई आग वधै है। भांखरा नांगल, हीराकुंड अर दामोदर घाटी जिसा मोटा मोटा बंधा बंधी जै है। मोटा-मोटा उद्योग सरू ह्विया है। लांबी-लांबी सड़कां वणै है अर नहरां खोदो जै है। इण भांत घड़तर खातर समय, पैसा अर सगती रौ उपयोग ह्वै है। पण आध्यात्मिकता

विना री ओ भोजन लूंण विहूणौ है। इण में नीं तो धर्म है अर नीं नीति है। आज सै सूं पे'ली नीति री जरूरत है। नीति विना देस आगै नीं वध सकै। देस रौ छोकरौ-छोकरौ नीतिवांन वणणौ जरूरी है।

सर्वेन्टिस रा सवदां में प्रमांणिकता इज सब सूं सिरै नीति है। प्रमांणिकता जीवण रौ मूल अंग है। उणरै विना मांनव जीवण सोभायमांन नीं वणै। कोई मिनख रै सरीर में दूजा तो सगलाई अंग व्है पण फगत आंख्यां नीं व्है तो सरीर फूटरौ नीं गिणीजै। सरीर में विना आंख्यां घणखरा कांम दूजां रै आसरै रैवै। इण भांत जीवण रौ साचौ आनंद नीं मिलै। पंड सूं परोपकार रौ कोई पण कांम नीं व्है सकै। इणीज तरै सूं मांनखा रा जीवण में विद्या व्है, कला व्है, फूटरापौ व्है, अहिंसा व्है, ब्रह्मचर्य व्है, अपरिग्रह विरती व्है, क्षमा, नम्रता अर सत्य व्है, पण जे ईमांनदारी रूपी आंख्यां नीं व्है तो जीवण रौ फूटरापौ झांखौ पड़ जावै। विद्या, कला अर दूजी वातां व्है तां छतांई ईमांनदारी विना जीवण सूनौ व्है जावै। इसौ जीवण समाज में कोई कांम करनैं नीं वतां सकै। नीं उण सूं कोई नैं प्रेरणा मिलै।

ईमांनदारी नीति रौ प्रचार मिनख रा नीति प्रधांन कांमां सूं इज व्है सकै। फगत भासणां सूं के धर्म री वांगां मारियां सूं ईमांनदारी नीं आय सकै। आध्यात्मिकतारी डींगां हांकण सूं के लांबी-लांबी धार्मिक क्रियावां करवा सूं के टीला टवका करवा सूं के सरीर माथै चंदण केसर लगावण सूं के मैला-कुचैला रेवण सूं के वार-वार संपाड़ौ कीधां सूं के आवड़छेट पालवा सूं ईमांनदारी नीं वध सकै। पोथियां वांचियां सूं ई ईमांनदारी नीं सीखीजै। कोई माथै दवांण देयनैं पण उणनैं नीतिवांन नीं वणाइजै। ईमांनदारी तो आत्मा रौ गुण है। आत्मा माथै आयौड़ा पड़दां नै, आछा करण सारू डिढता सूं सत्य निस्ठा रौ अभ्यास करण सूं, निडर पणा सूं सत्य आचरण राखवा सूं, अंतरात्मा नैं विस्वात्मा सूं जोड़वा सूं अर विस्ववंधुत्वरी भावना राखण सूं मांनव जीवण में ईमांनदारी आय सकै है। अर इण भांत आयौड़ी ईमांनदारी कायम पण रैवै।

ईमांनदारी रौ प्रचार-प्रसार करण खातर सै सूं पे'ली तो मोटा-मोटा पुरखां नैं पोतै इज ईमांनदार व्हणौ चाहिजै। आबात नीं वणै तो उणांरै उपदेसां री दुनिया माथै कोई असर नीं पड़ै। भगवद् गीता में कर्मयोगी स्री क्रस्ण आइज वात कही है —

यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।

(अध्याय ३ : २१)

मोटा मिनख जिसौ आचरण राखै, वांरै देखा देखी साधारण मिनख पण विसौ इज आचरण राखै। जिण चीजां नैं मोटोड़ा स्वीकार करै वांनै सगलाई धारण करै।

जे मोटा मिनख अर नेता लोग पोतै इज ईमांनदारी छोड़ण लागै तो वांरा चेला-चांटी पण खुल्लम-खुल्ला बेईमांनी करैला इज।

गुलिस्तां में एक बात आवै· ईरांन री जांणीती अर अदलन्याव करणवालौ बादसा नौसेरवां एकर जंगल में सिकार खेलण नैं गयौ। उठै रसोड़ौ करती वखत रसोड़दार कह्यौ – लूंण तौ हैई कोयनीं हजूर! नौसेरवां पोतारा नौकर नैं हुकमदियौ के पाड़ला गांम में जाय नैं लूंण लेयनैं आवै। पण इणरै सागै उणनैं भलांमण घाली के पैसा देयनैं लूंण लावजै, नीं तो आखौ गांम उजाड़ ह्वै जाएला। नौकर नै इण बात में कांई नवाई लागी—उणैं पूछ्यौ—'एक चपटी लूंण सूं आखौ गांम उजाड़ कीकर ह्वैला!' नौसेरवां पडुत्तर दियौ · आज जो राजा पोतै आपरी रैयत कना सूं एक चपटी लूंण मुफ्त में लेवै तो कालै राज रा बेली गांम नैं लूट नांखैला। जे कोई राजा रैयत रा बगीचा में सूं मुफ्त में फल खावण लागै तो उणरा नौकर तो जड़ां समेत झाड़का ई खाजावैला अर खोद नांखैला।

ईमांनदारी रौ आचरण पोतारा पंड सूं इज सरु ह्वैणौ चाहिजै। कोरी बातां करवा सूं के फगत फिलोसोफी छांटवा सूं ईमांनदारी नीं आवै। नीति पोतारा आचरण वास्तै कठैई ऊद नीं पाड़ै। ईणीज भांत ईमांनदारी री सुगंध आप सूं आप फैलै। ईमांनदारी रौ आचरण फगत आत्मारी सुद्धि वास्तै इज ह्वैणौ चाहिजै। उणमें कोई फल प्राप्तिरी के, स्वार्थ सिद्धि री के, वाहवाह लेवारी के, लोभ लालच री आंमना नीं ह्वैणी चाहिजै। इण भांत इज ह्वै तो मांनव जीवण रूपी दीवा में ईमांनदारी री जोत परजल सकै। नीं तो फल री आसा अर फल री आसक्ति झपटौ पड़तां पांण ईमांनदारी रौ दीवौ राज ह्वै जाएला। लोभ अर ईमांनदारी रै आपसरी में वरगै वैर है। जठै लोभ ह्वै उठै ईमांनदारी उभीज नीं रैवै। ईमांनदारी नैं

कायम राखवा वास्तै स्वारथ त्याग रौ नैतिक वातावरण वणावणौ पड़ैला । एमर्सन कह्यौ है—सच्चाई अर ईमांनदारी सगी बेहनां है ।

आज भारत रा मिनख आगोतर रा सुख वास्तै इज दांन-पुन्न, पूजा-पाठ, के वरत-उपवास करै अर सरीर रौ नैं धन रौ भोग देवै । इण पांत तो वे जे इण भव में पोतारा कुटुंब, समाज अर देस रै वास्तै ईमांनदारी वरतता व्है तो घणौ आछौ रैवै । पेट भरीजै जितरी कमांण व्है जाए तो मिनख नैं संतोख राखणौ चाहिजै । प्रमांणिकता अर ईमांनदारी रै साचा धर्म री पालणा करणी चाहिजै । इण भांत चालण सूं जीवण सुद्ध बणै अर सुख सांति मिलै । ईमांनदारी पर चलतां मारग में जिकौ तकलीफां आवै उणानैं सहन कियां सूं समाज में सुख, सांति रौ वधापौ व्है । ईमांनदारी पालतां जिकौ तपसा करणी पड़ै उण सूं समाज में उत्साह वधै । ईमांनदार मिनख नैं साचौ आत्म संतोष मिलै । जिण वखत आंपणै देस रा मिनख पोतारा जीवण नैं नीतिवांन, सत्यनिस्ठ अर प्रेमालु वणावैला जद इज आगौतर में पण सुख मिलैला । इण भव री परवा नीं करणी अर अगौतर खातर चिंता राखणी समझदारी नीं गिणीजै । उपनिसद में एक रिसि इण भांत कह्यौ है—

'इतो विनष्टिर्महती विनिष्टि:'

थांरै जीवण रौ इमरत रस अठैइज सूकीजग्यौ व्हैला तो वो थांरै नासरी सै सूं मोटौ कारण है । अठारौ जीवण जे ठीक बीतै तो धकै पण ठीक मिलै । पण इण भव में पोतारा जीवण नैं नरक बणाय नांखै तो आगै किसौ सुरग तैयार पड़ियौ है । इण वास्तै ईमांनदारी रौ नगद धर्म पालण सूं जिकौ आणंद मिलै वो सुरग री रंगीन कल्पनावां सूं घणौ चोखौ है ।

पण ईमांनदारी अर सत्य वास्तै आंपानैं हर वखत तैयार रैवणौ पड़ैला । इणरै वास्तै जचै जितरी मोटी चीज रौ भोग देवणौ पड़ै पण ईमांनदारी कायम राखणी चाहिजै । यूं कीधा सूं इज साचौ सुख मिल सकै ।

दूजा देसां रा रैवासी आंपणी गलाई आध्यात्मिकता रा ढोल नीं वजावै, संस्कृति अर धर्म री डींगां नीं हांकै पण वैवार अर धंधा में पूरै

पूरी ईमांनदारी वरतै । ईमांनदारी री कसौटी पण मांनखा रै वैवार अर धंधा री सुद्धता माथै इज आंकीजै ।

आंपां नैं इण बात में नवाई लाग सकै के परदेसां में कई दुकानां इसी ह्वै के जिणां माथै कोई दुकांनदारई नीं वैठै । चूकती चीजां चौड़ै मेल दी जावै अर वांरै माथै वांरी कीमत लिखदी जावै । जिण गिराक रै जिकी चीज लेवणी ह्वै वा लेय लै अर पैसा गल्ला में नांखनैं रवानै ह्वै । लिख्यौड़ी कीमत सूं कोई एक पाई ई कमती नीं नांखै । आंपां इतरी ईमांनदारी वरत सकां आ बात ह्वै नीं सकै ।

१३ अगस्त १९५८ रै दिन पटियाला (पंजाव) में एक इसीज दुकांन खोली ही । आ दुकांन फगत एक दिन वास्तै इज खुली ही । उण दुकांन में पांच सौ रुपियां रौ सांमांन भरियौड़ौ हो । सांमांन तो थोड़ाक घंटां में सगलौ ई बिक विकायग्यौ । पण बिक्यां पछै अधिकारियां जद गल्ला री रकम गिणी तो पांच सौ री ठौड़ फगत पैंतालीस रुपिया निकलिया । बाकी चार सौ नैं पंचावन रुपियां रो माल लोगड़ा मुफत में इज लेग्या ।

इण भांत रा बीजा प्रयोग पण कई पाठसालावां में किया । वाराणसी में तीनेक बरस पे'ली एक 'सर्वोदयी स्टाल' खोलियौ हो । इण प्रयोग में थोड़ी धणी सफलता जरूर मली ही । थोड़ दिनां पे'ली इणीज भांत रौ एक प्रयोग सौरास्ट्र रा एक महुवा नांम रा गांमड़ा में पण कियौ हो । उठै डाकरी टिगटां, पोस्ट कार्ड अर लिफाफा वेचाता धरिया हा । इण प्रयोग में पूरी सफलता मिली । इसा समाचार दैनिक हिन्दुस्तान में छपिया हा ।

खैर ए तो सगली प्रयोगात्मक बातां है, आंपां नैं ईमांनदारी वास्तै आंपणौ वैवार सुधारणौ इज पड़ैला । अर इण वास्तै पूरी कोसिस करणी पड़ैला ।

परदेसां में मोकली जागावां इसी है के उठै अखबार बेचण वास्तै फेरी वाला नीं रैवै । ठाया ठाया माथै अखबारां रा बंडल अर खाली डबला मेल दिया जावै । जिणनैं जिकौ छापौ लेवणौ ह्वै वो उठाय लेवै अर उणरी कीमत डबला में नांख देवै । संझ्यां रा वैपारी आवै अर वकरौ गिणनैं लेय जावै । वांरौ हिसाब बरौबर मिलै, एक पैसौ ई कम नीं पड़ै । आंपणै भारत में तो आ हालत है के लोगड़ा पोथ्यां री पोथ्यां उचकाय नैं ले जावै अर ले जाय नैं अटाला खाता में नांख देवै ।

नासिक री वात है। साने गुरुजी रौ पे'लौ सिराध हो। वांरी लिख्यौड़ी पोथ्यां एक खंड में जमाय नें धरी ही अर कनै इज एक खाली डवलौ पैसा नांखण नें मेल दियौ हो। वेचवा वालौ कोई नीं हो। लोगड़ा एक सौ नें इठंतर रुपियां री पोथ्यां उचकाय नें रवांनै ह्विया। डवला में फगत छासठ रुपिया मिलिया। आ रकम कोई धर्म खाता में लगावणी ही। धर्म रा मारग में ई मिनख कितरी ईमांनदारी वरतै, इणरौ ओ एक दाखलौ है।

जापांन में भारत रै ज्यूं टिगटां री चेकिंग नीं ह्वै। टिगट चेकर के कंडक्टर डव्वा में आवै अर नरमाई सूं फगत इतरौ पूछै—भाई, कोई रै टिगट लेवणौ बाकी तो नीं रैयगौ। रह्यौ ह्वै तो कैय दीजौ, म्हूं देय दूं। वो आ वात मांन नैं चालै के सगलां कनैं टिगट तो है इज। पण आंपणै अठारी तो वात इज दूजी है। अठै हर रेलगाड़ी में मोकला डब्लू० टी० मिल जावैला। इसा भाईड़ा देस रौ नुकसांण तो करै इज है, पण इणरै सागै-सागै ईमांनदारी रौ पण देवालौ काढ नांखै। अठै टिगट चेकरां नैं कत्तई भरोसौ नीं के वे सगलाई टिगट लेय नैं वैठा ह्वैला। सूतौड़ा मुसाफरां नैं जगाय जगाय नैं पण ए टिगटां री तपास करै। अविस्वास री हद ह्वैगी।

परदेसां में दूध में कोई पांणी नीं घालै। उठै जे पूछियौ ह्वै के—दूध में पांणी तो कोय नीं तो वांनै नवाई लागैला। अर आंपणै अठै तो दूध में पांणी भेलणौ जांणै जन्मसिद्ध अधिकार है। दूध री जागा फाटौड़ी दूध, पाउडररौ दूध, घी में वेजिटेवल के मूंगी फली रौ तेल, अर मांखण में पण वेजिटेवल भेल नांखै। परदेसां में फेरीवाला दूध री सील वन्द बोतलां लेयनैं फिरै। वे खाली वोतलां उठै सूं लेयले अर भरियौड़ी मेल देवै। वारणै पड़ी वोतलां रै कोई हाथ ई नीं लगावै। अर आंपणै अठै तो जे पांतरा में ई कोई चीज वारै रैयगी ह्वै अर आंख टालौ ह्वियौ के माल परायौ। भेल सेल रौ वजार तो इतरौ गरम है के खावण पीवण नैं सुद्ध चीजां मिलणी ई मोटी वात ह्वैगी। दूजी वातां तो सै गई धेड़ में पण अवै तो दवाईयां में पण भेलसेल ह्वै वण लागग्यौ। भला मिनख सर सूं रा तेल में मूंगफली रौ तेल मिलाय दे। दही में वेजिटेवल नांख नैं नकली मांखण तेयार करदे। काली मिरचां में पपैया रा वीज टेक दे। चाय में रंग चेप दे। वजार में सेत

रा नांम सूं खांडरी चासणीज बिकै। आटौ पीसती वखत भेला आंवली रा कूंका पीस दिया जावै। केसर में हलदर अर जीरा में घास-फूस भेल दियौ जावै। सिब्बाजोल जिसी दवारी गोलियां में पण माटी भेल देवै। दूजी तो सगली बातां जावण दो पण आज तो जेर ई सुद्ध नीं मिलै। जमांनौ तरक्की रो है। कितरी तरक्की कीवी है भारत रा मिनखां— बेईमांनी रा मांमला में। खावण-पीवण री चीजां में के दवाईयों में भेल सेल कारण सूं कोई मांदौ पड़ै के मरै तो वांरी जांणै बलाराज! भारत रा बेईमांनां नैं इण सूं कांई लेणौ-देणौ। ओ है भारत री धर्म परायणतारौ नमूनौ।

दाणचोरी रौ धंधौ तो पछै आंपणै अठै अपटांपार चालैं। जिण चीजां माथै जकात घणौ है, विसी चीजां के सोनौ विगैरै परदेसां सूं मोकलौ आवै। सोनौ पकड़वा में सरकार पण मोकली हुंसियारी वरती। पण इसौ चोर धंधौ करणिया सरकार रैई माथा ऊपरला है। उणां पोतारी साथलां चीर नैं मांय नैं सोनौ भरनैं लावणौ सरु कियौ। इण नैं रोकण वास्तै सरकार नैं 'एक्सरे' री व्यवस्था करणी पड़ी। 'एक्सरे' री मदद सूं सरीर रा कोई पण भाग में छिपायौड़ी चीज रौ बेरौ पड़ जावै।

आवक-जावक री चीजां माथै राखियौड़ी रोक नैं तौड़ नैं पण मोकला वैपारी चोरियां करै। ए रोक लागौड़ी चीजां नैं चोरी सूं मंगावै अर जाजौ नफौ कमावै। कई लोग गैर काय देसर नांणा वदली रौ धंधौ पण करै।

असली चीज रै बदलै नकली चीज देवणी गिराक नैं निमतौ देखाय नैं ओछौ तोलणौ, बतावणौ कांई अर देवणौ कांई दूजौ इज, तोल-माप में गोटालौ करणौ, कपड़ा रा ताखा माथै जितरौ लिख्यौ व्है उण सूं ओछौ देवणौ, दवाई के कोई दूजी चीज नवी-नवी काढै जरै चोखी काढणी अर पछै हलकौ माल वणावणौ, कंट्रोल व्है जरै काला बजार सूं माल लेवणौ के बेचाणौ, रासनिंग में खोटा कारट वणाय नैं अनाज वधारै लेवणौ, जीमण माथै अटक लाग्यौड़ी व्है जरै घणा मिनखां नैं जीमावणा, इसीं मोकली हराम खोरियां रौ भारत में कोई तोटौ नीं है।

बीच में कपड़ा रौ कंट्रोल उठग्यौ हो। उण वखत कपड़ा रा वैपा-

रियां अर मिल मालिकां चौड़ै-धाड़ै धाप नैं कालौ वजार कियौ। उण वखत संस्कृति मासिक रा संपादक लिख्यौ हो–'अेमदाबाद रा मिलमालिकां रा हाथ कालौ वजार कर करनैं इतरा काला ह्वै ग्या है के जे उणां नैं सावरमती रा पांणी में धोया ह्वै तो सगलौ पांणी ई कालौ ह्वै जाए।' भारत रा मिल मालिकां री ईमांनदारी रौ ओ परतख नमूनौ है।

लाग-बाग, दलाली अर कमीसन पण वेईमांनी में वधारौ करै। दलाल वेईमांनी करता जरा ए नीं संकै। खरीदी कोई भाव सूं करै अर लिखावै कोई दूजो भाव इज। इण भांत आढतिया अर दलाल घणी कमांणी करै। अठातांई के नौकर के रसोईयौ जे मालिक रौ माल सांमांन वजार सूं मोल लावै तो उण में सूं पण दलाली खावण री नीत राखै। इण भांत भारत रौ विणज वैपार वेईमांनो सूं भरिजियौड़ौ है।

विणज-वैपार में जे ईमांनदारी नीं ह्वै तो सेवा भाव री वात ई पैदा नीं ह्वै। जठै गिराक नैं लूट नैं फगत पैसौ भेलौ करवारी नीत ह्वै उठै नर माई रौ लेणौ देणौ ई कांई? इण भांत वैपारी पोतारौ ओ भव तौ विगाड़ै इज पण इण रै सागै-सागै आगौतर ई विगाड़ नांखै।

वैद्य अर डाक्टरां रौ धंधौ पण आज वेईमांनी सूं भरीजग्यौ है। इणां री नीत आ रैवै के रोगी घणा दिनां तांई मांदौ रैवै अर उणां रा पैसा पाकता रैवै। वे इंजेक्सनां रा घोदा देय देय नैं पैसा पड़ावा री हरदम नीत राखै। रोगी नैं तपासवारी फी पण घणी आकरी ह्वै। जित रौ वधारै जांणी तौ अर मांनी तौ डॉक्टर, उतरीज वधारै उणरी फी। फी वगर तो बात इज नीं करै। इण उपरांत सरकारी दवाखांनां में जिकौ दवाईयां आवै, वे घरै ले जावै अर वानैं प्राइवेट प्रक्टिस में कांम में लेवै। सरकारी दवाईयां रो स्टोक पांणी घाल नैं पूरौ कर नांखै।

आजकाल वकीलां रौ कांम है–झगड़ा-टंटा वधारणा। झगड़ा-टंटा नीं ह्वै तो उणां रा भाव ई कुण पूछै? जिकौ एक वार वकील री अवटी में आय जावै, उणनैं वे कई ऊंदा—पाधरा कोईड़ा सिखाय देवै। खोटी गवाह देवणी, खोटी वात नैं साची कीकर करणी, गुनैगार नैं निरदोस सावत कीकर करणौ, निरदोस नैं गुनैगार कीकर ठैरावणौ। दाव-पेच लड़ाय नैं खोटा नैं खरौ अर खरा नैं खोटौ कीकर करणौ ए सगली वातां

वकीलां वास्तै डावा हाथ रौ खेल है। इण भांत आज वकीलात रौ धंधौ रास्ट्र घातक, समाज घातक, सत्य अर न्याव विहीणौ अर ईमांनदारी रौ खास दुस्मण ह्वै ग्यौ है। फरीक अर दलाल खोटा केस लायनैं वकीलां रा खीसा भरवा में रैवै। अर वकील पण खोटा केसां री सोय में रैवै जिण सूं खेप पाड़ सकै। ओ सगलौ माया जाल धरम नैं धोखौ देवै।

जिकौ धणी चोरी अर लूट फाट करै उण नैं समाज तिरस्कार री निजर सूं देखै। सरकार पण वांनै सजा देवै। मांनखौ वांरी निंदा करै अर प्रजा ऐड़ां सूं चेत नैं रैवै। पण जिको बगला-भगत चोरियां अर बेईमांनी करै वां सूं प्रजा अजांण रैवे। इणां सूं बचणौ घणौ दोरौ। इण बगला भगतां में खोटी जाहेरात (एडवरटाइजमेण्ट) करण वाला पण भेला है।

एक बुद्धिवांन आदमी छापा में जाहेर खबर दीवी के 'जीमती वखत माखियां रै त्रास सूं बचवा री उपाव—फगत एक आंना में।' मिनखां देख्यौ के उपाव तो खूब सस्तौ है। उणां एक एक आंना री टिगटां डाक सूं भेजणी मांडी। मोकली टिगटां आयां पछै उणै आदमी जबाव भेज दियौ के 'जनाव, जीमतां वखत एक हाथ सूं जीमता जावौ अर दूजा हाथ सूं माखियां उडावौ। माखियां आपनैं बिल्कुल फोड़ा नीं घालैला।" टपाल खरच वास्तै एक पैसा रौ वधारै टिगट पे'ला सूं इज मंगवाय लियौ हो (उण वखत पोस्टकार्ड री कीमत एक पैसौ इज ही) इण भांत मिनख दीठ चार पैसा हजम ह्वै ग्या। इण जाहेरात में लोगड़ा फस्यौड़ा हा। अर इण भांत उण भाईड़ै तो नीं नीं करतां दस पनरै हजार रूपिया भेला कर लिया।

इणीज भांत परदेस में जे कोई नैं कोई पड़ी चीज लाध जावै तो वो लेय नैं रवांनैं नीं ह्वै। लाधौड़ी चीज पुलिस थांणा में जमा कराय देवै जिण सूं पाछी घर धणी नैं मिल जावै। उण मुलकां में इसा दाखला मोकला मिलै। पण भारत में गुमियौडी चीज रौ पत्तौ ई नीं लागै।

इगलैंड में थोड़ा इज बरस पे'ली एक फर्म पोतारा गिराकां नैं चार लाख पाऊंड (लगभग ५४ लाख रूपिया) री रकम पाछी दीनी। आ फर्म कागद रा खोखा बणावण रौ कांम करती। कांम सरु करतां वखत उण फर्म री धारणा ही के खोखा भाव में मूंघा पड़ैला। इण वास्ते सर पांत में खोखारी कीमत वधारै राखौ। पण कांम कीधां सूं फर्म नैं

ठा पड़ी कै खोखा इतरा मूंघा नीं पड़ै । फर्म अणूंतौ नफौ नीं कमावणी चावती । इण वास्तै सेवट उण फर्म पोतारा गिराकां नैं एक पौंड बे सिलिंग हरेक नैं पाछा दीना । आ रकम मूल रकम री दस सैकड़ा जितरी ही ।

अर आंपणै भारत रौ हाल ओ है के भारत री तरफ सूं रसिया नैं चार लाख जोड़ी बूट भेजिया । रसिया पूरा पैसा देवारौ वचन दीनौ हो पण अठारी उण कंपनी कांई कियौ के बूटां में कागद रा गत्ता घाल नैं माल सफा हल्कौ तैयार कियौ अर भेज दियौ । रसियावालां थोड़ौ सोक माल तो लियौ अर पछै वांनै ठा पड़गी के माल सफा हल्कौ है, तो उणां सगलौ माल पाछौ कंपनी नैं भेज दियौ । ओ है भारत रै वैपारियां री ईमांनदारी रौ नमूनौ ।

सरकारी कांमां में पण दक्षिणा दीनां वगैर कांम पार पड़ै इज नीं । सरकारी नौकर कांम चोर, वेईमांन अर लांचिया ह्वैग्या है ।

इण भांत विणज अर वैवार में परदेस रा मिनख आंपां करतां घणा ईमांनदार है । आंपां वांनै अनार्य कैवां । पण वां सूं आंपां नैं मोकली वातां सीखणी है ।

आंपांणै अठै कौटुंबिक अर सामाजिक जीवन में वेईमांनी मोकली फैल्यौडी है । कुटुम्ब में पण ईमांनदारी सूं कांम करण री विरती कम होयरी है अर कांम चोरी वधती जाय री है । भाई-भाई में वंटवाड़ वास्तै अर लेण देण वास्तै झगड़ा चाल रह्या है । एक भाई वीजा भाई रौ हक खोसण री ताक में रैवै । इणीज भांत कुटुंब जे कोई निवलौ पड़ै तो उणरी मिलकियत हड़प ह्वैतां जेज ई नीं लागै । समाज में वर विक्रय अर कन्या विक्रय धूम धड़ाका सूं चालै । ए रुढियां पण वेईमांनी रौ एक तरीकौ इज है । इणीज भांत सीरोली चीजां अर संस्थावां रौ माल हड़पणौ तो एक मांमूली वात है । संस्थावां खांनगी कांम में आवै, एक कांम रै वास्तै मेली कीनौड़ी रकम दूजा कांम में लागै, जीमण वार ह्वै जठै जीमण वालां री खोटी संख्या वताइजै । सफाकूड़ा केस लड़ी जै अर कूड़ी गवावां देवी जै । वेईमांनी रा वीजा पण सैकड़ां कांम ह्वै । ए सगला धंधा आंपणी वेईमांनी रौ ढौल वजावै है ।

धार्मिक क्षेत्र में पण वेईमांनी ओछी कोयनीं । धर्मादा री रकमनैं

घरू कांम में वापरणी आ तो एक मांमूली वात है। धर्म रा नांम सूं विधवा वां, अपंगां अर अनाथां वास्तै रकम भेली करणी अर उणनैं हड़प कर लेवणी पण कोई मोटी बात नीं है। धर्म रा नांम सूं चमत्कार वतावणा अर अंधसिरधालु मिनखां नै ठगणा, आ पण एक साधारण बात है। इसा वेईमांना रो भारत में कोई टोटो नीं है। धर्मस्थांनां में पगरखिया री चोरी तो नितरी वात ह्वैगी है। ए सगली वातां धर्म रा नांम नैं वट्टौ लगावै।

गांधीजी सेवाग्राम में जायनैं मुकांम कियां पछै वो एक तीरथ वणग्यौ हो। उठै एक जापांनी आयौ अर उणैं गांधीजी नैं वांदरां री तीन मूरतां भेंटी दीनी। उण में एक वांदरा रै हाथ मूंडा आडा, दूजौड़ा रै कांनां आडा अर तीजौड़ा रै आंख्यां आडा हा। तीनूं मूरतां मोटी सीखांमण देवण वाली ही। वे मांनखा नैं मूंडा, कांनां अर आंख्यां माथै संजम राखण रो वोध पाठ पढावण वाली ही। पण एक दिन उठै कोई अजांण आदमी पूगौ अर तीनूं मूरतां नैं लेयनैं तैतीसा मनाया।

रेल्वाई टेसण सूं लगाय नैं सेवाग्राम तक रौ भाड़ौ आसरै तीन च्यार रुपिया हो। पण घोड़ा गाड़ियां वाला परदेसियां कना सूं पनरै-वीस रुपिया लेय लेवता। पड़ै ज्यूं ई पड़ावता। कई परदेसियां अर जात्रुवां री सांमांनई गायब ह्वै जातौ।

भारत भोम रा तीरथां माथै पंडां जिकी लूट मचायौड़ी है, वा देखी ह्वै तो अकल ई कांम नीं करै। पंडां रै पंजा सूं स्यात इज कोई जात्रु वचतौ ह्वैला। इण भांत तीरथां माथै पण ईमांनदारी री देवाळी निकलियौड़ी है।

राजनैतिक क्षेत्र री तो वात ई नीं करणी। उठै तो वेईमांनी रौ अखंड राज है। काला धवला करणा राजनीतिग्यांरै वास्तै डावा हाथ री खेल है। चुणाव में उभाह्वियौड़ा उम्मीदवार लोकां नैं पांतराय नैं, खोटा वत्ता देयनैं, पैसा देयनैं, माल मलीदा खवाय नैं अर दारू मांस तक पूरव नैं पोतारौ कांम काढलै। चुणाव जीतण वास्तै जिका तरीका कांम में आवै वां में नीति जिसी तो कोई वात इज नीं है। राज काज में तो जिकौ आदमी ४२० करवा में परवीण ह्वै वो सफल राजनीतिग्य गिणीजै। राज काज जांणै वेईमांनां अर वदमासां रौ अड्डौ। राजकाज रा दाव पेच इज वेईमांनी रौ वीजौ नांम है। सत्ता हाथ में आयां पछै पोतारा आदमियां नैं नौकरी देवणी, लांच-

लेवणी, लाइसंस दिरावणा, विणजवैपार में वैपारियां री मदद करणी के वैपार में पोतारी ई पांती राखणी, कारखांना खोलावणा विगैरे कई कवाड़ा चालै। पण जिकौ गरीब वेकार है अर जिणां नैं धंधा री साचांणी जरूरत है, वांनैं रखड़तौ फिरणौ पड़ै। इण ढंग सूं सगली वेईमांनी अर वदमासी सेवा रा नांम माथै चालै। सरकारी नौकरां में पण ठेट ऊपर सूं लगाय नैं नीचै तांई अनीति, लांचरिस्वत अर वगसीस लेवण रौ रिवाज़ पड़ग्यौ है। जिण पक्ष रौ वहुमत व्है वो अल्पमत पक्षनैं हर तरै सूं दवावण री कोसिस करै। उण माथै कूड़ा आल लगावै।

कला अर संस्कृति रा क्षेत्र में पण वेईमांनी रौ पार नीं है। एक वीजा री नकल करणी। वीजा रा लिखांण नैं पोतारौ वतावणौ, दूजा रा पेटेंट चितरांम पोता रै नांम चढावणौ, ए सगली वातां आज कला अर संस्कृति री दुनिया में चाल री है।

सिक्षण रौ क्षैत्र पण वेईमांनी सूं आघौ नीं है। इण क्षेत्र में पण गुरुवां अर चेलां विचालै वेईमांनी री खेंचातांण चालै। जिकौ विद्यार्थी ट्यूसन राखै वांनै परीक्षा में पास कर दिया जावै अर ट्यूसन नीं राखै वे नापास। कारण के विद्यालय में जो अध्यापक भणा वैनीं। जेम तेम करनैं घंटा (पिरियड) पूरा करै। कोईक विद्यार्थी रै थोड़ी वणी पांनै पड़ जावै तो ठीक नीं तौ पछै लीला लैर करौ। विद्यार्थी पण इसा नांजोगा अध्यापकां नै लांच देयनैं पोता री कांम काढ लेवै। इण भांत अध्यापक विद्यार्थियां कना सूं रिस्वत लेयनैं वांनैं पास करै। कईक विद्यार्थी परीक्षा में चोरियां करै। इण में पण नितनवी तरकीवां काढै। कोई हाथ माथै लिखनैं ले जावै, कोई खीसा में कागद घालनैं ले जावै तो कोई जूता में घालनैं ले जावै तो कोई दूजी तरै सूं। पण कैवण रौ मतलव ओ के विद्यादेवी रा पवित्र मंदिर में पण वेईमांनी पूजा जोरदार सूं चाल री है।

आध्यात्मिक क्षेत्र पण वेईमांनी सूं आघौ कोयनीं। इण क्षेत्र में ई जोग रा नांम सूं, ब्रह्मविद्या रै नांम सूं अर भगवत भजन रै नांम सूं मोकला पडपंच चालै। भगती रै नांम सूं, तो पूरौ वैपार इज चालै। धंधां में अनीति सूं धन कमाय मैं भगवांन री भगती रौ अफंड करवारौ अर ईस्वर पौतै नैं ई ठगवारौ तो एक रिवाज व्है ग्यौ है। पाप करनैं

उणरा खोटा फल सूं बचवा वास्तै ढूंगी लोक रांमनांम रौ आसरौ लेवै। पण भगवांन नीं छेतरीजै। मांनखौ पोतै इज छेतरीजै। ईस्वर इतरौ अन्यायी कोयनीं के एड़ा मोटा-मोटा पापियां नैं फगत नांम स्मरण करवा सूं के वखांण करवा सूं इज पाप मुक्त कर नांखै। पापी नैं पाप रौ फल तौ भोगवणौ इज पड़ै। इण नैं भोगियां विना छूट कौ कठै ?

इणीज भांत वचन री ईमांनदारी पण एक मोटी ईमांनदारी है। भारत रा रैवासी तो हर बात में लारै है। कोई नैं वचन देय नैं उणनैं पूरौ नीं करणौ, मुकर कीनौड़ा समय माथै कांम पूरौनीं करणौ के समय माथैनीं पूगणौ, दीनौड़ा वचन रौ ध्यांन नीं राखणौ, ए सगला बेईमांनी रा इज नमूना है।

खरौखर आज भारत नीति रा मांमला में घणौ लारै रैयग्यौ है। भारत में सगला कांमां में मिनखां में दुकांनदारी री भावना रैवै। सेवा री भावना रौ कठैई अतो पतौई नीं है। सेवा री भावना उठै ईमांनदारी पण ह्वै सकै। घर में मा जचै जिकौई कांम करै पण कांम करती वखत उणमें कोई स्वारथ री भावना नीं ह्वै। कांम करनैं कोई मेहनतांणौ नीं चावै। सेवा रौ ओइज सिद्धान्त है। अर भारत रा लोकां में जद स्वार्थ री ठौड़ सेवा री भावना जागैला जणा इज ईमांनदारी री जोत पण परगट ह्वैला।

जूनां जमांना री एक बात है—हजरत अली साहब राजकाज रौ कांम करता हा। मैंणबत्ती सलगती ही। उणीज वखत बे सरदार वांनैं मिलणनैं आया। वां उण सरदारां नैं बैठवा री सांनी करी अर हिसाब गिणण लाग्या। पूरौ हिसाब गिणियां पछै वा मैंणबत्ती राजकर दी अर खीसा में सूं बीजी मैंणबत्ती काढनैं सुलगाई। सरदारां नैं अचूंभौ ह्वियौ, उणां पूछ्यौ—आप एक मैंणबत्ती बुझायनैं बीजी क्यूं सुलगाई ? हजरत अली पडुत्तर दियौ—पे'ली म्हूं सरकारी कांम करतौ हौ, उण वखत में सरकारी मैंणवत्ती सुलगाई, ही अर अबै म्हारौ खांनगी कांम है इण वास्तै घरू मैंणवत्ती सुलगाई है। ईमांनदारी प्रमाणै म्हनैं यूं करणौ इज चाहिजै, इणमें खोटौ कांई है ?

कैवण री मतलव ओके वांनै सरकारी कांम में ई सेवा री भावना रा दरसण ह्विया। इण कारण इज वे एक मोटा ईमांनदार गिणीजिया।

सेवा भावना रो मतलब ओहै के कोई पण कांम बिना स्वार्थ निस्ठा, धुन अर वफादारी सूं करणौ। कांम नीं तो कोई मोटौ है अर नीं कोई नैंनौ। पोता-पोतारी जगा सगलाई ठीक है। जे इण भांत री विरती ह्वै तो भारत भोम सूं बेईमांनी रो मूंडौ कालौ ह्वै जावै। पण आज की तारीख में तो चांफैर स्वार्थ इज स्वार्थ दीसै। निस्वार्थ कठैई निजर ई नीं आवै। पण सेवट आंपांनैं बेईमांनी री जड़ खोद नैं काढनांखणी है।

मांनखा नैं जे पोतारा जीवण नैं स्रेस्ठ वणावणौ ह्वै तो उणमें ईमांनदारी री जोत जगावणी चाहिजै। नीं तो पोतारो जमारौ भ्रिस्ट करैला अर दूजां नैं पण डूबोवेला। इण सूं वो पोतारा समाज, देस अर धर्मनैं पण वदनांम करैला।

भारतवासियां नैं आंख्यां खोलनैं विचार कर लेवणौ चाहिजै। परदेसियां सूं आंपांनैं कई वातां सीखणी है। आध्यात्मिकता री लांवी चौड़ी वातां करणी फिजूल है। हरेक कांम ईमांनदारी सूं करनैं आध्यात्मिक जीवण वितावणौ चाहिजै।

म्हूं आप सूं उम्मीद राखूं के आप ईमांनदारी नैं जीवण में उतारौला, हरेक कांम में प्रमाणिकता री पूरौ ध्यांन राखौला। आ ह्वियां सूं इज ईमांनदारी री जोत जागैला, मांनखा रा जीवण सफल ह्वैला।



१

जैनसंस्कृति रौ पुण्य पर्व

जैन संस्कृति में पर्वाधिराज पजुसण रौ मोटौ महातम है। ओ पर्व आंपणै ऊर्ध्वमुखी विराट चिंतन रो सर्वोत्तम प्रतीक है। इण में आंपणी संस्कृति, संस्कार अर सर्वोच्च आध्यात्मिक जीवण रौ रहस्य समायोड़ी है।

आंपां जद प्राकृत भासा रै साहित्य रौ अभ्यास करां तो पर्युसण सबद वास्तै 'पज्जुसण' अर पज्जोसवणा' सबद मिलै। इण सबदां रौ संस्कृत रूप पर्युषणा, पर्युषण अर पर्युपशम व्है। पजुसण सब्द रौ पूर्ण अर्थ है आत्मा नैं सम्पूर्ण रूप सूं आत्म भाव में लवलीन कर लेवणी, आत्माभिमुख व्हैणौ, आत्मानुभव में तल्लीन व्है जाणौ। आत्मा रै सुद्ध सरूप रो चिंतन मनन करणौ अर आत्मनिरीक्षण करणौ। संसार रा विकारां सूं आघौ रैवनैं आत्मोन्नति करणी। पर्युपशमता रौ अर्थ है—सांत रैवणौ। जिण विकारां रै कारण आत्मा दुखी, चंचल अर चलायमांन हुऔ है, जिण सूं आत्मरमण रौ अनोखौ आणंद उठाय नीं सकै, उण विकारां नैं सांत करणा।

पजुसण आत्म चिंतन रौ पर्व है। पजुसण आत्म मंजन, आत्म मंथन अर अंतःकरण नैं संसोधन करण रौ पर्व है। इण मंगलकारी क्षणां में साधक चिंतन करै के म्हूं कुण हूं अर म्हारो कांई सरूप है।

आज रौ साधक जितरौ विचार बीजा लोकां खातर करै, उण सूं सौ मा भाग रौ विचार पण पोतारै वास्तै नीं करै। 'म्हूं कुण हूं ?' इण सवाल रौ विचार तो वो करै इज नीं।

आंपां नैं कोई पूछै के 'थे कुण हो ?' तो पड़ुत्तर में आंपां कैवां के

'म्हारौ नांम फलांणौ है। पण ओ नांम तो आंपणै सरीर रौ है। अर ओ सरीर नासवांन है। विचार करौ म्हूं अथवा म्हारौ कैवतां ओ सरीर इज है के इण सूं अलगी कोई चीज है।

आंपणी आंख्यां सगली चीजां नैं देखै पण आंपां कैवां के 'म्हूं देखूं हूं।' नाक गंध सूंघै पण आंपां कैवां के 'म्हूं सुगंध लेवूं हूं।' चालण-फिरण रौ कांम पग करै। पण आंपां कैवां के 'म्हूं चालूं हूं।' इण सगली वातां सूं एक चीज सफा चवड़ै आवै के जोवा रौ कांम करणारी आंख्यां, सूंघ वारौ कांम करणार नाक अर चाल वारौ कांम करणार पग इण सगलां सूं न्यारौ कोईक 'म्हूं' है। मिनख रा सरीर में सूं ओ म्हूं निकल जावै उण वखत ए आंख्यां, ओ नाक के ए पग कोई कांम नीं करै। आ साढा तीन हाथ मांनख देही है ज्यूं इज पड़ियौ रैवै। धरती माथै पड़ियौ मड़ौ नीं देख सकै, नीं सूंघ सकै अर नीं चाल सकै। अवै आप इज वतावौ के आ 'म्हूं' कांई वला है। आप इण 'म्हूं' रै वावत कदेई विचार कियौ है ?

डॉक्टर कैवै के आंख्यां री निजर वे भांत री व्है। एक अलगारी निजर अर वीजी नैड़ारी निजर। अलगारी निजरवालौ अलगी पड़ी चीजां आछी तिरियां देख सकै पण नैड़ी पड़ियौड़ी सावल नीं देखै। उणनैं कनै पड़ियौड़ी चीजां भांखी देखीजै। आंपां उणनैं कोई पोथी वांचवा नैं देवां तो वो वाच नीं सकै। वो कैवैला—'आखर सफा नीं दीखै।' जिणरी निजर नैड़ारी व्है, वो नैड़ी पड़ी चीजां तो सफा देख सकै, नैंना आखर पण वांच सकै पण वो अलगी पड़ी चीजां भली भांत नीं देख सकै।

आज आंपणी अलगली मांनसिक दीठ तो सांतरी है। आंपां अलगी पड़ी चीजां नैं तो आछी तिरियां जांणां पण आंपणै पोता रै वावत आंपणौ ग्यांन सफा थोड़ौ है।

आज रौ विद्यार्थी अकवर, सिकंदर, हिटलर अर नेपोलियन री जन्म तिथ अर मरण तिथ तो याद राखै, पण, अचूंभारी वात आ है के पोता रै वाप दादा री मरण तिथ याद नीं राखै।

भारत भोम रा रिसियां, स्रमणां अर पंडतां एक सुर सूं कह्यौ है के सैसूं पे'ली आत्मा नैं ओलखौ—'**आत्मानंविद्धि**' जिणैं पोतारी आत्मा नैं ओलख ली उणैं सगली वातां ओलख लीवी। '**जे एगं जाणई से सव्वं**

जाणई।' महात्मा ईसू पण कह्यौ है—Know thyself (पे'ला थूं पोता नैं इज ओलख के थूं कुण है ?)

कुरखेतर रा मैदांन में वीर अर्जुण नैं उपदेस देवता स्रीकृस्ण कह्यौ—'जो पोता नैं नीं ओलखै वो पोतारै सागै इज दुस्मण जिसौ वैवार करै।'

'अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्'

जैन संस्कृति रौ ओ पुण्य पर्व संदेसौ देवै—'थे थांनैं पोता नैं ओलखौ।' खरी बात तो आ है के आत्म दरसण है जिकौ इज जगत् दरसण है। एक जैनाचारज कह्यौ है—पे'ली पोतारौ कल्यांण करौ अर पछै बण सकै तो बीजा रो कल्यांण करौ। पण जठै ओ सवाल पैदा ह्वै के कल्यांण पोतारौ करणौ के बीजारौ ? उण वखत पे'ली आत्म कल्यांण इज करणौ चाहिजै।

आदहिदं कादव्वं, जदिसक्कई परहिदं च कादव्वं।
आदहिद परहिदो, आदहिदं सुट्ठु कादव्वं॥

हिंदी में एक जांणी ती कैवत है—घर में दीवां सुलगायां पछै इज मस्जिद में सुलगावणौ चाहिजै। अंग्रेजी भासा में पण एक इसीज कैवत है—'Charity begins at home' उदारता के पुन्न री सरुआत पोतारै घर सूं इज ह्वणी चाहिजै। वैदिक रिसियां पण कह्यौ है—**'विद्धि विद्धि स्वतत्वम्।'** थे थांनैं पोता नैं आछी तिरियां ओलख लो के म्हूं कुण हूं ?'

साधक पोतानैं ओलख ले जरै सम्यग् दरसण रौ अनोखौ परगास ह्वै। अर सम्यग्दरसण रौ परगास ह्वै तांई कसाय क्षीण ह्वैवण लागै अर वीतराग भाव री प्राप्ति ह्वै। साधना रौ छेलौ पावड़ियौ पण ओइज ह्वै। इण वास्तै सै सूं पे'ली पोतानैं ओलखणौ जरूरी है। आजरा पुण्य पर्व री पुनीत प्रेरणा आ इज है।

१०

क्षमा पर्व

भारतीय संस्कृति में सांस्कृतिक पर्वों री घणौ महात्तम है। यूं ए पर्व कोई खास प्रसंगां री पुण्य स्मृति में मनाइजै। इणां सूं मांनखा नैं आदर्सों री प्रेरणा मिलै।

यूं तो जैन धर्म रा सगला पर्वा रो महात्तम है, पण पर्वाधिराज री विड़द तो फगत पजुसण नैं इज मिलियौ है। इण पर्व री वाट आवतौड़ी जांन री गलाई जोई जावै। अर इणरै आवतां इज मिनखां रै मन में नवी चेतना, नवी जागृति अर भव्य भावनावां जागै। जिण लोकां री जवांन माथै कदैई धर्म रो नांम ई नीं आवै, वै ई इण पुण्य वेला में धर्म साधना करता निजर आवै। एक अठवाड़िया री भावपूर्ण साधना रै पछै पर्व री जो छेलौ दिन आवै वो संवत्सरी बाजै। संवत्सरी रौ बीजौ नांम क्षमा पर्व है।

धरती पण क्षमा रै नांम सूं ओलखी जै। धरती माथै फूस-फांटां, लकड़ी-कूकड़ी अर कूड़ौकचरौ पड़ियौ रैवै। धरती इण चीजां नैं धीरै-धीरै रेत वणाय नैं पोतारै मांयनै मिलाय नांखै। इणीज भांत विकृत संजोगां नै पांतर जावणौ, बीजां दीनौड़ी तकलीफां नैं मन में सूं काढ नांखणी अर वांरौ भूंडौ नीं चींत वणौ, इणरौ नांम क्षमा है।

क्षमा कायरां रौ नीं पण वीरां रो सिणगार है। जिकौ कायर है वो क्षमावंत नीं ह्वै सकै। अठै वीर रौ मतलव सरीर सूं मजवूत ह्वैणौ के आगल जीभौ ह्वैणौ नीं है। वीर रौ मतलब है द्रिढ मनोबल वालौ मिनख। जिकौ मिनख फालतू रीस नीं करै। कड़वी वात रौ पडुत्तर मीठास सूं देवै, विखौ पड़ियां ई जिकौ चलायमांन नीं ह्वै, इसौ मिनख

इज साचौ वीर गिणी जै। इण वास्तै इज रिसि मुनियां कह्यौ है—'खमापहुस्स' बलवांन मिनख री क्षमा आइज साची क्षमा है।

आधुनिक कवि दिनकर रा सबदां में—

क्षमा सोहती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दंतहीन
विस रहित विनीत सरल हो

स्टर्न नांम रा एक अंग्रेज लेखक लिख्यौ है—

'A Coward never forgives, The brave only know how to forgive.

कायर कदैई क्षमा नीं कर सकै। क्षमा करण रौ कांम तो वीर रौ है।

जिकौ धणी निबलौ ह्वै वा पारकां रौ आस रौ सोधै। जिकण कनैं मनोबल अर आत्मबल नीं ह्वै, वो इज सस्त्र बल रौ आसरौ लेवै। जिण रौ आत्मबल द्रिढ ह्वै वो सस्त्रां रौ आसरौ नीं लेवै। उणनैं पंड बल के सस्त्र बल री जरूरत इज नीं रैवै।

क्षमा मिनख नैं भारी खमौ अर सांत बणावै। क्षमा पोतारै बल रौ ओलखांण देवती कैवै—अपकार माथै अपकार करणौ अर गुनैगार नैं सजा देवणी मोटी बात नीं है। मोटी बात तो है भूडी करण वाला री भलाई करणी, गुनैगार नैं प्रेम सूं वसीभूत करणौं अर हित्यारां रौ अंतःकरण बदलणौ, ए कांम महापुरखां रा है।

एच० डब्लू० सो नांम रै एक आथमणै विद्वान लिख्यौ है—There is no revenge so Complete as forgiveness. दोखी सूं दुसमणी काढणी ह्वै तो उण रौ असली इलाज क्षमा इज है। अबखा सूं अबखा कांम नै करवारी कूंची के वसी करण मंत्र क्षमा इज है। क्षमा एक इसौ सस्त्र है, जो सीधौ आगला रै हिरदा माथै असर करै। मोटा सूं मोटौ पापी क्षमा सूं काबू में लियौ जा सकै। जिण रै हाथ में क्षमा रूपी अजेय सस्त्र ह्वै, दुर्जन, सूं दुर्जन मिनख ई उण रौ कांई नीं बिगाड़ सकै।

स्पेने एक ठौड़ कह्यौ है—

To retun evil for good is devilish, to return good for good is human; but to return good for evil is Godlike.

उपकार री वदली अपकार सूं देवणौ रागसी विरती है, उपकार री वदलौ उपकार सूं देवणौ मिनखपणौ है पण अपकाररी वदलौ उपकार सूं वालणौ देव विरती है।

देव गुणां वावत पोप पण कह्यौ है—

To err is human, to forgive is devine.

मांनखा सूं मूल ह्वै णी सुभाविक है, पण उण नैं क्षमा करणौ देवी गुण है। किणरैई सागै झगड़ो हुऔ ह्वै के वैर वंधांणौ ह्वै तो उण नैं मन में संचय करनैं नीं राखणौ। आ राग सी विरती है, देव विरती नीं है।

गुनैगार रौ गुनौ मन में सूं काढनैं उणरै सागै प्रेम रो वरताव राखणौ आ एक देव विरती है। उणरी गालां नैं पण आसी सरूप में मांनणी चाहिजै।

महात्मा ईसा नैं जिण वखत पकड़नैं फांसी माथै लटका वण नैं ले जावता हा उण वखत उणां कह्यौ हो—'O father! forgiv them. They Khow not what they do, (हे भगवांन, इणां नै माफ करजौ, कारण के इणां नै ओई ठा कोयनीं के ए करै कांई है)

स्रमण संस्कृति रा आगीवांण भगवांन महावीर क्षमा रा परम उपासक हा। हजरत मुहम्मद पण क्षमा रा पूरा हिमायतीं हा। मीरां, संत तुकारांम, आचारज अमरसिंह जी, महात्मा गांधी अर विनोवा भावै रै जीवण सूं पण क्षमा री वोध पाठ मिलै। क्षमा आंपणौ जीवण है, धर्म है, प्रांण है अर आत्मा है। इण पुण्य प्रवाह में सिनांन करण वालौ मिनख एक वेला तो वोलै ला इज—

खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्व भुएसु, वैरं न मज्झं केणई ।।

म्हूं सगला जीवां सूं क्षमा री विणती करूं। सगलाई जीव म्हनैं क्षमा करजौ। सगला जीवां सूं म्हारी दोस्ती है। कोई रै सागै म्हारौ वैर कोयनीं।

स्रमण भगवांन महावीर स्रमणां नैं वृहद् कल्पसूत्र रा चौथा अध्याय

में साफ आज्ञा दीनी है—'भिक्खूय कट्टु तं अहिगरणं आवियोसवेता,नो से कप्पई गाहावई कुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, वहिया विआर भूमि वा, विहारभूमि वा निक्खमित्तए वा, पविसित्त एवा।'

हे साधक ? जो कोई स्रमण सागै कोई कारण सर कजियौ व्है जावै, तो उण सूं माफी मांग लेवणी। क्षमा नीं मिलै उठा तांई खाणौ दांणौ नीं करणौ चाहिजै, वन में लोटी ढोलवा पण नीं जावणौ चाहिजै अर अभ्यास पण नीं करणौ चाहिजै।

घर में लाइणी लागै जरै घर धणी पे'ली लाइणौ बुझावै अर पछै जीमवा बैठे। लाइणौ लागौड़ौ व्है जरै लाइणौ नीं बुझाय नैं जीमवा बैठे जावै तो मिनख उण नैं मूरख गिणै। जिणरै मन में रीस की आग सुलगती व्है, जिणरी आंख्यां क्रोध सूं राती चोल व्हियौड़ी व्है, जिण रौ लोही गरम पांणी री गलाई ऊकलतौ व्है, उणनैं भोजन के अभ्यास नहीं करणौ चाहिजै !

बाई बल रा 'जूंना करार' में महात्मा ईसू कह्यौ है—थे प्रार्थना करण नैं देव मंदर में जाओ, जरै उठै गयां पछै थांनैं याद आवै के किण पाड़ौसी सागै थांरी झगड़ौ व्हियौ है। जे याद आवै तो मंदर रा बारणां सूं इज पाछा परा वलजौ। पे'ली जाय नैं उण पाड़ौसी सूं मेल कर लीजौ पछै देव पूजा करजौ।

एक बीजै अंग्रेज लेखक पण लिख्यौ है—

Never does the human soul appear so strong as when it forgoes revenge and dares to forgive an Injury.

मिनख जिण वखत आगला री गलतियां नैं माफ कर देवै, उणरा अपराधां नैं भूल जावै, उण वखत उणरी आत्मा बलवांन बणै।

भगवांन महावीर कह्यौ है जिणरै सागै थारै वैर बंध्यौड़ौ व्है, उण नैं माफ कर देवणौ चाहिजै। आगलौ थनै सन्मांन देवतौ व्है के नीं देवतौ व्है, उणरै करतबां कांनी निजर इज नीं नांखणी। थनैं तुरंत क्षमा मांग लेवणी चाहिजै

क्षमा माहत्तम बतावतां उणैं आध्यात्मिक प्रकरण में लिख्यौ है— एक मिनख छासठ करोड़ उपवास करै अर बीजौ मिनख एक कड़वौ

वैंण सांति सूं सेहन कर लेवै, तो उण दूजा मिनख नैं पे'ला करतां वत्तौ फल मिलै ।

क्षमा पर्व रै माहत्तम रौ संदेसौ ओ है—

जिणरै सागै आंपणी खटपट ह्वियोड़ी ह्वै के कजियौ ह्वियौ ह्वै, उण सूं माफी मांग लेवणी हिरदा माथै जिकौ कालस जमियोड़ी ह्वै, उण नैं अखैल नैं हिरदा नैं दरपण री गलाई सफा कर नांखणौ। अंतःकरण रा कोई पण खूंणा में कोई पण तरै री वैर विरोध रह्यौड़ी ह्वै तो उण नैं ऊखैल नैं आघौ नांखणौ चाहिजै अर आ वात ध्यांन में राखणी चाहिजै के संवत्सरी पछै जांणै नवौ जीवण इज सरु करणौ है ।



११

जीवण घड़तर रौ पायौ

भारत री संस्कृति अर संस्कार संसार में सै सूं ऊंचा गिणीजै। मांनखा रै जीवण रौ घड़तर केड़ौ ह्वैणौ चाहिजै, आ बात भारतीय संस्कृति अलेखूं बरसां सूं बतावती आई। जीवण रूपी महेल री चिणाई अर टिकाऊ पणा खातर संस्कृति एक खास गुण दियौ है। वो गुण जीवण घड़तर रौ पायौ बाजै। उण गुण रौ नांम है विनय! आंपणै जीवण रौ आखौ महेल इण विनय री रांग माथै ऊभौ है। सुद्ध आचार, ऊंचा विचार अर सात्विकपणौ विगैरै जो गुण है, वे जीवण महेल रै ऊपर सोनेरी कलस जिसा है। ओ कलस हरदम जगमगाट करै पर मांनखा रौ ध्यांन पोतारी कांनी खांचै। जे आंपणै जीवण रूपी महेल री रांग में विनय री इंटां मांडियौड़ी ह्वैला तो इज ओ कलस जगमगाट करैला।

एक रूंखड़ौ लीलौ छम है। फल अर फूलां सूं लदियोड़ौ है। पंखेरुआं रै कलरव सूं गूंजै है। मिनख उणरी छिया बैठै। पण ओ रूंख कायम कठातांई रैवैला? जठातांई इण झाड़ रौ मूल मजबूत है, उठातांई तो इणरौ कांई नीं बिगड़ै। मूल इज निबलौ ह्वै तो वो रूंख कितराक दिन लीलौ रैय सकै? पंखेरु उण माथै बैठ नैं कितराक दिन कलरव कर सकैला? अर वटाऊ कितराक दिन उणरी छिया में बैठ सकैला? वावल रौ एक झपाटौ के भूतेला रौ एक दोट के वीजली रौ एक झबूकौ पड़तां इज इसौ निबलौ झाड़तो जमी माथै पड़ जावैला। इणीज भांत जे संस्कृति रूपी मोटा रूंख रै विनय रूपी मजबूत मूल नीं ह्वै उणरी पण आ इज हालत ह्वै।

'ज्ञाता सूत्र' में एक महत्वपूर्ण प्रस्नोत्तरी है।

जीवण री कसौटी करणार स्रेस्ठी, सुदर्सन मुनि, थावच्चा पुत्र नैं पूछै—जैन धर्म, जैन संस्कृति अर जैन दर्सण रौ मूल कांई है—**किं मूलए धम्मे** ? मुनि पड़ुत्तर देवतां क्षमा, दया, सरलता अर ईमानदारी नैं धर्म रौ मूल बतायौ है अर कह्यौ है विनय धर्म रौ मूल है। **'सुदंसणा ! विणयमूले धम्मे।**

भगवांन महावीर पोतारा छेला प्रवचन में कह्यौ हो—**'मूलं धम्मस्स विणओ'** वौद्ध धर्म में तो महात्मा बुद्ध विनय माथै एक आखौ पिटक लिख्यौ है। हजरत मोहम्मद साहब हदीस में विनय रौ महात्तम बतावतां लिख्यौ है—'मन या हर मुर्रिफको या हरमुल खैरै कुल्लि ही' जिकौ विनयवांन वो इज सद्‌गिरस्ती पण है।

एक आथमणै विद्वांन आइज वात वीजी तरै सूं लिखी है। Sense shines with double iusture, when it is set in humility. हीरौ जठांतांई एकलौ ह्वै, इतरौ सोभायमांन नीं ह्वै, पण जे उणनैं सोना में मंडाय दियौ जावै तो उणरी सोभा एकदम वध जावै। इणीज भांत जठै वुद्धि अर विनय री मेल ह्वै जावै उठै वमणौ परगास ह्वै। एक वीजै विद्वांन पण कह्यौ है—Humility is mother, nurse, root and foundation. नरमाई अथवा विनय सगलाई गुणां री मा, पोसण वाली अर मूल रौ पायौ है।

महात्मा आगस्टाईन नैं एकर किणैई जिग्यासू सवाल पूछ्यौ—धर्म रौ सै सूं पे'लौ लक्षण कांई है ? तो विद्वांनां एक इज जवाव दियौ के धर्म रौ पे'लौ, वीजौ के छेलौ लक्षण विनय इज है।

विनय एक इसौ लोह चुम्वक है के वो दूजा गुणां नैं ई पोतारै कांनी तांणै। आप जांणौ इज हो के सोनौ एक धातु है अर लोखण पण एक धातु है। पण हीरा, पन्ना के मांणक मोती री जड़त आंपां सोना में इज क्यूं करां ? आंपां ए सगली चीजां लोखण में क्यूं नीं जड़ां ? कारण साफ है के सोना में नरमाई है, नरमास है। सोना नैं जिणरौ घणौ टीपवा में आवै उतरौ इज वधारै वो नरम वणै। नरम अर निरमल होवण रै कारण इज तो सोनौ कुंदण वाजै। इणीज भांत जिकौ मिनख नरमाई वालौ अर निरमल सुभाव रौ ह्वै वो मिनख इज पवित्र गिणीजै। नरमास कारण इज सोना में जिण वखत हीरा पन्ना जड़ीजै

उणरी कीमत लाखां रुपिया व्है जावै। पण जे सोनौ ई लोखण रैव्यूं कठण व्है तो अर हीरां री संगत नीं करतौ तो उणरी कीमत लाखां रुपिया नीं व्हैती। जीवण नैं नम्र बणावण री अर्थ है उणनैं सोनौ बणावणौ। जीवन जद सोनौ बणजावै तो उण में क्षमा, दया, प्रेम, सत्य रूपी हीरा पण जड़ीज जावै। इसौ जीवण कीमती बण जावै अर ज्यूं-ज्यूं जीवण री कीमत वधै त्यूं त्यूं सुख अर सांति पण वधै।

रात री वखत व्है। च्यारूं मेर घोर अंधरौ व्है अर एक ओरड़ी में चांनणो व्है तो चोर तो उठै नैड़ाई नीं फरूकै। इणीज भांत मिनख रै हिरदारूपी ओरडी में विनय रूपी दीवारी परगास है, उठै दुर्गुण रूपी चोर कठैई नेड़ाई नीं आय सकै।

जिकौ साधक अभिमांन में फूलीज जावै, वे पोता रै पंड री इज नुकसांण करै। जिण मिनख नैं कुतुबमीनार माथै चढ़िया पछै दूजा वांमना इज दीसै वीजां नैं पण वो मिनख वांमणी इज निजरां आवै। जिकौ मिनख वीजां नैं हलेका गिणै वो जठै जावैला, उठा सूं ई खाली हाथ आवैला। पछै वो साधु संत कनैं जावै के भलांई साखियात भगवांन कनैं पण जावै। अभिमांनी मिनख फूटोड़ा घड़ा जिसौ है। फूटोड़ौ घड़ौ तो खालीज रैवैला। उण में ग्यांन रौ परगास हरगिज नीं पूग सकै। एक आथमणै विचारक कह्यौ है—थे खाली व्है नैं जाओला तो सद्गुरु नैं पण खाली कर सकौला। थे कुआ में घड़ौ नांखौ अर वो घड़ौ पांणी तांई पूग नैं नीचौ नीं नमैं तो उण में एक छांटोई पांणी नीं आय सकै। इणीज भांत थांरै जे कोई मोटा मिनख कनैं जावण रौ कांम पड़ै अर उठै जायनैं जे थे नमनैं नीं चालौ तो थांनैं एक लगारई ग्यांन नीं मिल सकै। इतरा मोटा दरिया व कांनी देखौ! नैंनी-नैंनी नदियां में सूं पांणी लेवण वास्तै उणनैं नीचौ रैवणौ पड़ै। इण वास्तै इज एक कवि कह्यौ है—

न हम कुछ हंस के सीखे हैं
न हम कुछ रोके सीखे हैं।
जो कुछ थोड़ा सा सीखे हैं
किसी के होके सीखे हैं।

जिकौ पोतारा अभिमांन में इज गरक रैवै वो बीजां कना सूं कांई नीं सीख सकै। अभिमांन रै कारण साधक री कांई हालत व्है वा जैन सास्त्र री इण कथा सूं जांण व्है—

भगवांन रिखवदेव रा वीजौड़ा बेटा बाहुवली साधु वण्या। उणरै पे'ली वांरै नैनैं भाई भगवांन रिखवदेव कनैं दीक्षा लीनीही। बाहुवलि साधु वणनैं जंगल में तपसा करवा गया। भयंकर वनकटी, च्यारूँ मेर सूं न्याड़, उठै उणां उभां पगै ध्यांन कीनौ। एक बे दिन नहीं, एक बे महीना नीं पण एक वरस पूरौ ह्वैग्यौ। सरीर माथै बेलां चढगी। कांनां में पंखरू ए माला घाल दिया। तामपण साधना सफल नीं ह्वी। कारण के वांरा अंतर मन में अभिमांन रौ सरप फूँफाड़ा मारतौ हो। वां रै मन में आ भावना ही के म्हूँ म्हारा नैंना भाई रै आगै कीकर नमूं ? अभिमांन रौ ओ खटकौ इज वांरी साधना में अटकाव पैदा करतौ हो। सेवट भगवांन रिखबदेव नैं इण वातरी जांण पड़ी। उणां वांरी दीक्षा लीनौड़ी बेटी ब्राह्मी अर सुंदरी नैं बाहुवली कनैं भेजी। वे मौटा सुर में गावण लागी —

वीरा, म्हारा गज थकी उतरो रे !

बाहुवली रा कांनां में ओ अंतर नाद गूंजण लागो। वांरौ अभिमांन गलग्यौ। उणां नैंना भाई नैं वंदन करवा वास्तै पग उपाड़ियौ। अर पग उपाड़तां पांण वांरै अंतर में केवल ग्यांन रौ परगास ह्वैग्यौ। ग्यांन रै सूरज अभिमांन रा अंधकार नैं मिटाय दियौ।

ओ है विनय रै चमत्कार री एक दाखलो। विनय इतरी मोटी चीज है के वा एक साधारण साधक नैं ठेट भगवांन तांई पुगाय दे। हलका गोतर री नीसरणी सूं ठेट ऊँची गोतर रा पगोथिया तांई लेय जावै। चावै जिसाई परवत नैं पांणी री वालौ तोड़ नांखै अर मारग मोकलौ करदै। इणीज भांत विनय रौ प्रबल प्रभाव पण जचै जिसा कठोर हीया नैं मांखण री पांण नरम वणाय नांखै। विनय साचौ परगास है, साचौ विकास है, अखूट मीठास है अर सद्‌गुणां रौ भंडार है। पण जरूरत है साचा विनय री। कारण के आजकल दुनिया में नकली चीजां रौ चलण मोकलौ ह्वैगौ है। साचा मोती री ठौड़ कल्चर मोती अर खरा सौना री ठौड़ रोल्ड गोल्ड। इणीज भांत असली विनय री ठौड़ आज हीण भाव, गुलांमी, खुसामद अर थोथा वखांण इज चालै। इण सगली चीजां में अर विनय में रात दिन री फरक है। जठै विनय ह्वै उठै साचौ विवेक ह्वै। पण जठै हीणभाव, गुलांमी, खुसामद अर थोथा वखांण ह्वै उठै मोह, असत्य, भय अर तिरसणा ह्वै।

इण वास्तै विनय रौ अर्थ फगत माथौ निमावणौ इज नीं है। सरीर तो फगत मल मूतर रौ भंडार है, मांस रौ पूतलौ है के हाडकां रौ ढिगलौ है। इण वास्तै असली विनय रौ अर्थ है—पोता रौ पूरौ जीवण अर्पण करणौ, महापुरखां री महानता कांनी निजर राखणी अर वांरै प्रति सद्भावना दिखावणी।

कोई साधक जरै कोई महापुरखरै चरणै जावै, उण रौ माथै सिरधा सूं निम जावै। वो 'मत्थएण वंदामि' कैयनैं नमस्कार करै। माथौ सरीर रौ एक खास अंग है। ओ विचार रौ खजांनौ है। मिनख नैं जिकी इज्जत मिलै वा उणरै माथा रै कारण इज मिलै। मांनखा रा सरीर में जे माथौ नीं व्है तो ओ साढा तीन हाथ रौ सरीर मुड़दा जिसौ है। माथौ निमावण रौ अर्थ ओ है के—म्हूं म्हारौ माथौ आपनैं भेंट करू हूँ। म्हारा विचार आपरै आधीन करूं हूँ। जिकौ विचार आपरा व्हैला, वे इज म्हारा व्हैला, जिकौ आपरी भावनावां है, वे इज म्हारी रैवैला, आप जिकौ सबद बोलोला, वे इज म्हूँ पण बोलूंला। आंपणै वीच में द्वैत भाव नीं रैवै। विचार, वरताव अर चिंतण में एकरूपता लावणी ओ इज माथौ निमावण रौ साचौ अर्थ है। फगत माथौ निमाय नैं इज थे वांनै थांरी भावनावां अर्पण नीं करौ, वांरी आग्या रौ पालण नीं करौ, वांनै फोतका वरौवर ई नीं गिणौ, वांरै संदेसां नैं पगां नीचै वाटौ, वांरै विचारां नैं हवा में उडावौ तो इसा माथा नमावण रौ कोई मतलव नीं। आतो एक यांत्रिक क्रिया हुई। मसीन री गलाई एक चलवल जरूर हुई। पण इण सूं जीवण रौ विकास नीं व्है सकै। हाथ जोड़ण रै सागै मन नीं जुड़ै तो उणरौ अर्थ इज कांई? हाथ तो एक कैदी जोड़ै, एक गुलांम पण जोड़ै, पण उण में नरमाई रौ लवलेस ई नीं व्है। उण में हीवड़ा रौ रणकार नीं व्है। वंदन भावना सूं इज व्हैणौ चाहिजै। जठै विचारां में एक रूपता व्है, भावनावां में समता व्है, उठै इज भाववंदन व्है। उठै इज आंतरिक तप पण व्है। वारला तप करतां आंतरिक तप री घणौ महात्तम है। भगवती सूत्र रा पचीसमा सतक में इण वावत साफ साफ लिख्यौ है—ग्यांन, दरसण अर चारित्र रै वास्ते सिरधा राखणी, ओ इज साचो विनय है, आइज साची तपसा है।

वैदिक संस्कृति रा महान् आचारज मनु कह्यौ है—

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते, आयुर्बुद्धि यशोबलम्।

जिकौ मिनख सद्गुणी पुरखां री वंदना करै, वयोवृद्ध अर ग्यांन वृद्धां री संगत में रैवै, चोखै रस्तै चालै, सज्जनां नैं निमण करै, वांनै वांरा जीवण में च्यार अमोलक पदारथ मिलै—विद्या, जस, सगती अर लांबी उमर।

विनयसील मिनख नैं संसार री कोई पण ताकत नुकसांण नीं पुगाय सकै। जचै जिसौई विखौ आवौ के विपदा पड़ौ पण विनयवांन मिनख रै सांम्ही सै मैंणरी गलाई गल जावै।

एक सेठरी छोकरी पे'ली वगत सासरा सूं पीहर आई। उणरी साथणियां उणनैं घेर नैं पूछण लागी—वेहन, थारौ सुसरौजी किसाक है? वांरौ सुभाव किसौक है? छोकरी बोली—'म्हु ठीक हूँ।' बीजी साथण उणनैं सासू बावत पूछियौ—तीजी उणनैं जेठ जेठांणी बावत पूछ्यौ तो चौथी उणनैं उणरा पति बावत पूछ्यौ। सगलाई सवालां रौ उणै तो एक इज जवाव दियौ के म्हूं ठीक हूँ।' उणरी साथणियां रौ धीरप छूटगौ। वे वोली आतो म्हांनै ई आछी तरियां ठाहै के थूं ठीक है, पण म्है थारा वावत कठै पूछां हां। थूं म्हांरा सवालां रौ जवाब देवै कोयनीं अर कैवती जावै के 'म्हूं ठीक हूँ।' वा गम्भीरता सूं वोली जे म्हूँ ठीक हूँ तो पछै सब ठीक है। अर जे म्हूँ खराव हूँ तो पछै सव खराव है। कारण के जो म्हूँ खराब होवुं तो पछै जचै जिसौई चोखौ वातावरण ह्वौ झगड़ा टंटा ह्वैला इज, कुटुम्ब विखरैला इज, घर में महाभारत मचैला इज अर सुरग रौ संसार नरक वण जावैला आ वात सुणनैं उण री सगली साथणियां नैं संतोस ह्वियौ। एक विद्वांन कह्यौ है के विनयवांन मिनख रू जिसौ हैं। उणनैं सांतरी तरवार सूंई नीं काप सकौ। आप जांणौ इज होके वावल आवै जरै मोटा-मोटा झाड़का जमीं माथै ठरकीज जावै, पण कंवला झाड़ वीट पोता री ठौड़ थिर रैवै। वावल अर आंधी रौ वांरै माथै कोई असर नीं पड़ै।

महाभारत रौ एक प्रसंग है। कुरु खेतर रा मैदान में त्रांणां री सेज माथै सूतौड़ा भीस्मपितामह वांरै जीवण री छेली घड़ियां गिणता हा। उण वखत धर्मराज एक आग्याकारी विद्यार्थी री गलाई पितामह नैं

सवाल पूछ्यौ—जे दुस्मण बलसाली व्है अर हमलौ करै तो उण वखत कांई करणौ चाहिजै। सवाल खास हो। इण वास्तै राजनीति रा विद्वांन पितामह जवाब देवतां एक रूपक कथा संभलाई—एक दिन दरियाव पोतारी प्रिया सरिता नैं कह्यौ—थारौ प्रेम देखनैं म्हूं हरख गेलौ व्है ग्यौ हूं। थूं तो म्हारै वास्तै वरसौ वरस कांई नैं कांई भेंट लावै इज है। पण वेत्रवती कांई भेंट नीं लावै। इणरौ कांई कारण है? वेत्रवती इणरौ खुलासौ करतां कह्यौ—पतिदेव इण वीजी बेहनां नैं भेंट लावती देखनैं म्हारौ ई मन व्है। इण वास्तै म्हैं कईवार कोसिस ई कीनी पण पार नीं पड़ी। इणरौ कारण ओके जिण वखत म्हा में पूर आयौड़ौ व्है, उण वखत नेतर नीची नम जावै। उणनैं म्हूं उखेल नीं सकूं।' धर्मराज थे पण नेतर (बेंत) जिसा नरम वणौ। तो कोई पण बलवांन दुसमणई थांरौ बाल वांकौ नीं कर सकै। दुनिया री कोई ताकत थानै वकार नीं सकै।

नरमाई रूपी कवच धारण कियां सूं मिनख निडर वणै। जीवण रौ ओ स्वीकृत सिद्धांत है के कोमलता टिकाऊ व्है। कठोरता थोड़ा दिन इज रैवै।

एक चीणी विद्वांन छेली अवस्था में रोगी वण्यौ, पथा री माथै सूतौ। उणरा तेज अर पंडिताई रौ पूरा चीण देस नैं गुभेज हो। उणरी मांदगी रा समाचार उणरा चेला नैं मिल्या। वो चेलौ वांनै मिलण नैं आयौ। मांदा विद्वांन रा कुलमिझियौड़ा मूंडा माथै तेज आयौ। वे बोल्या—बेटा, थूं ठीक अवसर माथै आयौ। म्हूं थनैं कांई कैवणी चावूं पण अबार म्हारा में इतरी ताकत कोय नीं के म्हूं लांबी बात चीत करूं। इतरौ व्है तां थकांई एक सवाल पूछणौ है—आ कैयनैं उण विद्वांन मूंडौ खोल्यौ अर चेलानैं पूछ्यौ के 'बेटां, देख तो खरी, म्हारा मूंडा में जीभ है के नीं।' चेलौ बोल्यौ—'गुरुदेव जीभ तो है।' विद्वांन बाकौ फाड़ नैं फेर पूछ्यौ—'सावल देख, दांत है के नीं?' चेले बरौबर तपास करनैं कह्यौ—'गुरुदेव, दांत तो एकई कोय नीं।' गुरु पूछ्यौ—जीभ तो साबत है तो पछै दांत क्यूं कोय नीं? चेलौ विचार में पड़ग्यौ के अवै कांई जवाब देवणौ। सेवट सोच विचार कीनां पछै उणनैं जवाब ऊकलियौ। वे बोल्यौ—गुरुदेव! बात आ है के जीभ तो है नरम अर दांत व्है कठण। जिकौ नरम व्है वो तो कायम रैय जावै। पण जिकौ कठण व्है वो तुरत बरबाद व्है जावै।

अवै तो आप विनय रौ महत्व समझग्या ह्वौला। आप ओ पण समझग्या ह्वौला के जीवन घड़तर वास्तै विनय री सै सूं पे'ली जरूरत है। तिलक महाराज कह्यौ हो—नरमाई, प्रेमालु वरताव अर सहन सीलता सूं मिनख तो बापड़ौ कांई देवता तांई वस में ह्वै जावै। खरौ-खर विनय एक वसीकरण मंत्र है। विनय सूं दुस्मण ई साथी वण जावै। एक गुजराती कवि कह्यौ है - "शामल विद्या वसीकरण नी विनय विशे वासो वसै"—संसार में जो मंत्र-तंत्र अर विद्या है वां में सै सूं सिरै मंत्रतंत्र के विद्या विनय है।

पंडतां, विनय वांन मिनख रा तीन गुण गिणाया हैं—(१) जिकौ कड़वा बोलां रौ पडुत्तर मिठास सूं देवै।

(२) जिकौ रीस रौ अवसर ह्वै तां थकांई धू'न राखै।

(३) जिकौ गुनैगार नैं दंड देवतां मन में दया राखै।

आ सही है के जिकौ धणी विनम्र होवै वो आगै वधै।

इण भांत विनय वंत अर सद्‌गुणी मिनख जठै-जठै गया, जीत लेय नैं आया। वांरी कीरत च्यारूं मेर फैलै।

थांनै जे थांरौ जीवण सुधारणौ ह्वै, जीवण नैं फूटरौ वणावणौ ह्वै तो विनय रूपी पायौ रोपौ। जीवण रूपी महेल में विनय रूपी ईंटां लगावौ। विनय सूं थांरौ पोतारौ जीवण तो सुधरैला इज, पण इण रौ असर कुटुंब समाज अर देस माथै पड़ैला।

卐

१२

जीवण : एक नाटक

मांनव जीवण रै बाबत जितरौ ऊंडौ विचार भारत री संस्कृति में हुऔ है, उतरौ विस्तार सूं स्यात इज कोई बीजी संस्कृति में ह्वियौ ह्वै इण संस्कृति में मांनव जीवण नैं भांत भांत सूं समझण री कोसिस हुई है। मांनव जीवण नैं बणावण वाला खास-खास मुद्दा, मांनव जीवण रा न्यारा-न्यारा देखाव अर मांनखा रै भांतभांत रा सुभाव माथै जिण ढंग सूं ऊंडौ विचार ह्वियौ है, उण ढंग सूं स्यात इज कठैई हुऔ ह्वै। अठारा धर्म संस्थापकां, विचारकां अर सास्त्रकारां मांनव जीवण री हर बात माथै पूरौ विचार कियौ है। जीवण रा उतार-चढ़ाव, सुख-दुख अर हरख सोक माथै पूरी मैंणत सूं खोज कीनी है। इतरौ इज नीं पण संजोग आयां मानखा रौ जीवण एकदम कीकर पलटौ खावै, मिनख रै दिमाग अर हिरदा माथै केड़ा-केड़ा संस्कारां री छाप पड़ै इणरौ पूरौ विवेचन उणां कियौ है।

अठारा कलाकारां, कवियां अर सिल्पकारां जिण भांत मांनखा रै बारला जीवण रौ चितरांम उतारियौ है, उणीज भांत उणै मांयला जीवण रौ पण सांगौपांग खाकौ खांचियौ है। उणां ग्रंथां अर सास्त्रां में मांनखा रै न्यारा-न्यारा रूप रौ आछौ हाल लिख्यौ है। इण उपरांत किण संजोग में हिरदा, मन अर बुद्धि नैं थिर राखणा अर आत्मा नै एक मुखिया रो गलाई ओलखणौ आ बात समझाय नैं लिखी है।

उणां संसार रा जीवां खातर हमदरदी बतावतां लिख्यौ है के ओ संसार एक नाटक साला है, सिनेमा घर है के चित्रपट साला है। सगला जीव इण नाटक साला में आवै। अर वारी प्रमांणै एक्टिंग

करनैं पोतारी आवड़त वतावै । अर कांम पूर्ण ह्वियां रवानै ह्वै । पछै थोड़ी ताल अठी उठी फिर नैं आवै अर पछै पाछौ नवौ नाटक वतावै । इण भांत ओ चक्कर अनंत काल सूं चाल्यौ आवै । मानव जीवण रो नाटक घणौ मनोरंजक ह्वै । देखै जिसौ ह्वै अर हीया में उतारै जिसौ ह्वै । इण वास्ते ओ नाटक आंपणै वास्तै घणौ कांम रो है । यूं तो सग लाई जीवण नाटक सूं आंपां नैं वोध पाठ लेवणौ चाहिजै, पण मांनव जीवण रा नाटक सूं तो आंपणै वमणी प्रेरणा, वोध पाठ अर ग्यांन लेवणौ चाहिजै । कारण के मांनव जीवण रा नाटक में सूत्रधार पण मिनख इज ह्वै अर देखणियौ पण मिनख इज ह्वै । इण नाटक रा देखाव उणरै पोतारै जीवण जिसा इज ह्वै । इण कारण सूं वे वधारै जोवा लायक ह्वै ।

थां मे सूं घण खरां सिनेमा, नाटक के चित्रपट तो देख्यौ इज ह्वैला सिनेमा रा पड़दा माथै के नाटक री जवनिका माथै कित रा फ़ूट रा-फ़ूट रा देखाव आवै । अर ए देखाव कित री फुरती सूं वदल पण जावै । करैई एकदम सोवणौ देखाव आवै तो करैई साफ खराव । करैई भयंकर देखाव निजरां आवै तो करैई करुणा सूं भरियौड़ौ ! करैई सूगलौ देखाव दीसै तो करैई वीरता रौ । करैई सिणगार रौ देखाव देखीजै तो करै ई हंसण रौ । करैई रौद्ररस रौ देखाव आवै तो करैई सांत रसरौ । इण भांत जुदा-जुदा देखाव देख नैं थे करैई राजी ह्वौ तो करैई उदास ह्वै जावौ ।

करैई मोह माया में डूव जावौ तो करैई आंख्यां भरीज जावै । करैई थांनैं सूरापण चढै अर आख्यां राती चोल ह्वै जावै तो करैई दुख सूं घवरीज नैं वैराग कांनी मन करौ । मांनव जीवण रा इण कूड़ा नाटक रौ थांरै माथै कितरौ असर पड़ै ? थांरै पोतारै जीवण में कोई वखत हरख तो कोई वखत सोक चालता इज रैवै । अर सुख-दुख रौ जोड़ौ है सो ए तो आवता-जावता इज रैवै । पण जे थे अनुभवी मिनख नीं हो तो जीवण रौ हरेक देखाव, हरेक चित्रांम थांनैं डांवाडोल कर नांखैला । थे जौ विवेक अर विचार सूं नाहीं चालौ तो थांरैं मन नैं चलायमांन ह्वैतां कोई वार नीं लागै । इण सगला देखावां रा संस्कार आप रै माथै पड़यां विना नीं रैवै । अर पछै तो इण संस्कारां प्रमाणै आप नैं वारंवार करनां रौ नाटक करणौ इज पड़ैला । याद राखौ के इण जीवण रूपी

नाटक में आप नैं देखण वालौ पण बणणौ है। देखण वाला री हैसियत सूं आपनैं थिर मन सूं विचार पण करणौ है। जचै जिसा ई देखाव देख्यां पछै ई आपनैं आप री इच्छा माफक इज विचार पकड़णा है। साथै साथै थांनै नाटक री एक्टर पण बणणौ है। एक्टर बण नैं नाटक आछी तरियां करणौ है। जीवण रूपी नाटक में सुख अर दुख, चढ़ती अर पड़ती आवतीज रैवै। इसा संजोगां में अभिनेता नैं पोतारौ धीरपनौं गुमावणौ चाहिजै। अभिनेता जो पोतारी असली ठौड़ भूल जावै तो आडो अवलौ भटकतौ इज रैवै। पछै नीं तो वो साचौ अभिनेता बण सकै अर नीं साचौ देखण वालौ।

जिणां अभिनेतावां नैं नाटक में कांम करतां देख्या है, वे जांणता ह्वैला के वे करैई राजा बणै तो करैई भिखारी। करैई दीन दुखी बण जावै तो करैई स्रीमंत। पण ए सगला पार्ट करतां वखत वो ऊपरला मन सूं तो सगलौ बरताव करै पण कांई पण उणरा अंतरमन में हरख सोक ह्वै खरौ? भिखारी रौ पार्ट करतां उणरा अंतस में दुख ह्वै? कोई रौ बेटौ मर्‌यौ ह्वै, इसौ पार्ट करतां कांई उणरा मन में पीड़ा ह्वै? थे एक इज जवाब देवौला के दुख नीं ह्वै। इणीज भांत जिकौ देखण वाला है वांनैं देखनैं ई थांनैं थोड़ौ विचार करणौ पड़ैला। ठीक है के आणंद रौ देखाव देखनैं वांरै मन में खुसी भलांई ह्वौ, पण कोई रौ जनम के मरण देखनैं वांनैं असली खुसी नीं ह्वै। आ जीवण रूपी नाटक री असली हकीगत है।

इण भांत सिद्धांत ओ राखणौ चाहिजै के जीवण रूपी नाटक में पण सखरा नरसा प्रसंग माथै नाटक रा नायक नैं हरख सोक नीं मनावणौ चाहिजै। अबखा सूं अबखा वखत माथै ई अथवा कांई पण संजोग में उणनैं पोतारौ धीरप नीं गमावणौ चाहिजै। पोतारी अक्कल नैं थिर राखनै जो समै परमाणै बरत सकै बो इज नाटक रौ साचौ खेलाड़ू है। इण सिद्धांत माथै इज कर्मजोगी स्रीकृस्ण अर्जुन नैं कह्यौ है—

सुखे दुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि॥

—भगवद्‌गीता, अध्याय २।३८

सुख अर दुख, नफौ के नुकसांण, हार के जीत इण सगला मौकां माथै समतुला राखनैं जीवणरूपी जुद्ध में कूद जा । यूं करयां सूं पाप नीं लागै ।

जीवणरूपी नाटक में पण सुख-दुख, नफौ-नुकसांण, जीवण-मरण, संपत-विपत के हार जीत में मन थिर राखणौ चाहिजै जिण सूं जीवण रूपी नाटक ढंग सर ह्वै अर इण नाटक में गरक ह्वियां सूं जो पाप लागै, उण सूं पण आघौ रह्यौ जा सकै । जीवण नाटक बाबत आंपांनैं एक कविरा इण सब्दां माथै पण विचार करणो पड़ैला—

जीवन के अविराम समर में
कभी हार है, जीत कभी ।
कभी पराजय का रोना है
गाना जय के गीत कभी ।

जीवण रा चित्रपट में पण कोई वखत हार, कोई वखत जीत, कोई वखत आणंद, कोई वखत सोक, कोई वखत गावणौ तो कोई वखत रोवणौ चालतौ इज रैवै । पण कोई पण मौका माथै मिनख नैं निरलेप रैवणौ चाहिजै । इण भांत ह्वै सकै जरै इज आंपाँ जीवण रूपी नाटक रा साचा अभिनेता वण सकां ।

मांनव जीवण रा नाटक में पण मिनख कोई वखत रांम वण नैं पोतारौ पार्ट करै तो कोई वखत रांवण वणनै । नाटक पड़दा माथै रांम अर रांवण, कृस्ण अर कंस, महावीर अर संगम, पारसनाथ अर कमठ, बुद्ध अर देवदत्त, गांधी अर गोडसे जिसा भांत भांतरा अभिनेता निजर आवै । पण उण वखत नाटक देखणियां नैं इण सूं बोधपाठ लेवणौ चाहिजै । लोभ अर मोह माया सूं अलगौ रैवणौ नैं संसार री भलाई ह्वै जिसौ कांम करणौ, इसौ सार लेवणौ चाहिजै । जे आछा संस्कार नीं लिरीजै इण सूं नुकसांण होवै ।

इण वास्तै जीवणरूपी नाटक में अभिनय करती वखत मांनखा नैं पूरौ-पूरौ ध्यांन राखणौ चाहिजै । कारण के इणरौ असर सीधौ समाज माथै पड़ै । इण सूं संसार रा सगला प्रांणी संस्कार पकड़ै । इण वास्तै ओ ध्यांन राखणौ चाहिजै के इण सूं मांनखा नैं कोई पण तरै रौ नुकसांण नीं पूगै । कारण के अभिनेता पोते इज मोह माया अर भ्रमजाल में पड़ण लागै तो पछै वो सफल अभिनेता नीं गिणीजै ।

सुख-दुख, हार-जीत, संपत-विपत अर जीवण-मरण यांरौ एक दिन तो अंत आवणौ इज है। ओ सगलौई खेल नासवांन है, इण में पछ्यां पछै मिनख पोतारा सुख के कल्यांण री कल्पना नीं कर सकै। इण वास्तै इज भारत रा मोटा मनीसी स्री क्रसण कह्यौ है—

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ !
सम सुख दुःखं धीरं, सोऽमृतत्वाय कल्पते।

सुख अर दुख में समता धारण करण वाला इण धीर मिनख नैं ए सगली अड़चणी दुखी नीं कर सकै। पोतारा मारग सूं चलाय मांन नीं कर सकै। हे नरवीर अर्जुन इसौ मिनख इज अमरता रौ अधिकारी है।

साधारण मिनख पोतारा जीवण में आवण वाला विकट संजोगां में, सुख-दुख में अर हार-जीत में चलायमांन ह्वै जावै अर हरख सोकरी लागणी अनुभव करै। वे पोतारा मन नैं काबू में नीं राख सकै। पण जिकौ जांणकार अर पक्कौ खेलाड़ू ह्वै वो भवैंई चलायमांन नीं ह्वै। जचै जिसी ई तिसणा री आंधी उणनैं नीं डिगाय सकै। जचै जिसी ई मोह रौ भूतेलौ उणनैं नीं उखैल सकै। माया री फंदौ उणनैं हटाय नीं सकै वो तौ निरभै होयनैं, निस्चित, निस्काम अर निरद्वंद होयनैं पोतारा मारग माथै आगै वधतौ इज रैवै।

भगवांन महावीर, महात्मा बुद्ध, मरजादा पुरसोत्तम रांम, प्रेम जोगी क्रसण अर प्रेम सागर ईसू खिस्त जीवण रूपी नाटक रा असली खेलाडू हा। जगत रूपी रंगमंच माथै आयनैं उणां इतरी हुंसियारी सूं अभिनय कीनौ, इतरा वैचारिक ढंग सूं दूजां रौ जीवण नाटक जोयौ, इतरी हुंसियारी सूं पोतारै फरजां री पालणा कीनी के उणांरौ अभिनय सगलां सूं सिरै मांनी जियौ। इणां पोतारै जीवण रौ जिकौ धे वणायौ, उण सूं चलायमांन नीं ह्विया। आगै सूं आगै वधता इज गिया। उणां जीवण रौ महानाटक सफलता सूं पार पाड़ियौ। उणां रै पाइंगा में कई विरोधी, निंदा करणारा अर भांडण गाला आया अर मोकला वखांण करण वाला ई आया। लोभ री वावल आई अर दुख रा भाखर पण टूट नैं माथै पड़िया। भय रा उल्कापात हुआ अर अखकार रौ इमरत पण मिलियौ। पण वे सगला आणंद अर सोक री लागणी

माथै रह्या। वे पोतारा जीवण पंथ माथै समता री पग डांडी सूं आगै वधता इज गिया।

फुटवॉल रा खेलाड़ू फुटवॉल सूं रमै। दोन्यूं कांनली दोन्यूं टीमां पूरी सावचेती सूं रमै। पण छेवट दो में सूं एक टीम हारै। हारण वालां नैं कोई ऊंडौ पछतावौ नीं व्है। कारण के आ हार है। इण सूं वांरै जीवण माथै कोई असर नीं पड़ै। जीत्यौड़ी टीम पण थोड़ीक वार हरख गेली वण्यौड़ी रैवै। इण जीतरी पण वांरै जीवण माथै कोई कायम रो असर नीं पड़ै। रांमत में हार-जीत व्हैतीज रैवै। इणीज भांत जीवण नाटक रा खेलाड़ू पण कोई चीज मिलयां सूं, अमीरी सूं के गरीवी सूं, कोई री हाजरी सूं के गैर हाजरी सूं, हार सूं के जीत सूं, कोई भांत रौ हरख सोक नीं मनावै। कारण के ए सगली चीजां आत्मा सूं अलगी है। ए सगली चीजां छिन मात्र री है, इणां में फंसनैं मांनखा नैं पोता री असली खेल नीं बिगाड़णी चाहिजै।

भगवांन महावीर रै जीवण में गोसालक अर चंडकोसिक जिसा माठा संजोग आया, वांनैं गौतम अर आणंद जिसा सत पुरख मिलिया। छतां पण वांरै मन में कोई भांत रौ हरख सोक नीं व्हियौ। भगवांन महावीर सत्य रा मारग सूं कदैई चलायमांन नीं व्हिया।

भगवांन रांम नैं एक कांनी तो राजपाट मिलै अर दूजी कांनी वनवास मिलै। एक कांनी सीता-हरण रौ संदेसौ मिलै अर दूजी कांनी वांनर सेना सूं ओलखांण व्है। पण इण सगला संजोगां में वांरै स्री मुख माथै हरख के सोक रो एक सल ई नीं पड़ियौ। भारतीय संस्कृति रा अमर ग्रंथ रांमायण में आ वात इण भांत लिखी है—

प्रसन्नतायां न गताभिषेकतः,
तथा न मम्लौ वनवास दुःखतः।
मुखाम्बुजश्रीः रघुनंदनस्य,
सा सदाऽस्तु मे मंजुल मंगलप्रदा॥

राजपाट रौ आलांणौ व्हियां पछै ई रांम रा मूंडा माथै आणंद री झलक ही। अर वनवास रा समाचार सुण्यां पछै ई वांरै मन में कोई भांत रौ दुखनीं हो। जीवण रा अमर नाटक में रघु पुत्र रांम रौ मुख-कमल हर वखत हंसतौ इज रह्यौ। इसौ हास्य आंपांनैं पण मिलौ।

कर्मजोगी क्रुस्ण नैं एक कांनी तो कंस जिसा सांमरथ सूं भिड़ंत करणी ही। जिण सूं इसौ लागतौ जांणै मौत मूंडौ फाड़नै उभी है। दूजी कांनी गुवालियां अर जादवां रौ प्रेम हो। इण दोनूं संजोगां में नीं तो वे घबरांणा अर नीं हरखगेला ह्विया। वे तो फर्ज रै मारग माथै आगै वधता इज़ गिया। जिकौ जादव वांरै खातर जीव देवानैं तैयार हा, उणीज जादवां में दुगुंण भरीजग्या। स्रीक्रुस्ण वांनै समझावण री पूरी-पूरी मैंणत कीवी पण जादव नीं मांन्या। छेवट एक दिन नास ह्वियौ। पण स्रीक्रुस्ण तो पोतारी मस्ती में इज रह्या। वांरै चेहरा माथै हरख हो। वांनै किणंई पूछ्यौ—'आपरी निजरां सांमी आपरा जादवकुल रौ नास ह्वै रह्यौ है अर आपरा मूंडामाथै हरख निजर आवै, कांई आ बात जोग है?' स्रीक्रुस्ण हंसतौ थकां जवाब दियौ—म्हैं म्हारौ फर्ज पूरौ कीनौ। जीवण रा नाटक में म्हारा पार्ट में म्हैं, म्हारै खपतां कठैई खांमी नीं आवण दीवी। पछै म्हनैं ए सखरी नरती बातां देखनैं हरख सोक क्यूं ह्वै? म्हूं माया नटणी रा जाल में क्यूं फसूं? ओ तो सगलोई माया जाल है। इण माया जाल में आसक्त ह्वैणौ म्हारौ कांम नीं है।

सम्यग निजर राखणियौ मिनख पोतारा जीवण में सगलाई कांम करै पण पोतारी मरजाद कायम राखै अर निरलेप रैवै। मायाजाल में गरक नीं होवै।

समदृस्टि वालौ मिनख पोतारै कडूंबा रौ भरण पोखण करै, छतां पण उण में लवलीन नी ह्वै। वो पोतानैं इण सगला वैपार सूं अलगौ मांनै। जिण भांत धाय पारका टाबर नैं खवड़ावै, पीवड़ावै, रमाड़ै पण उणनैं पोतारौ नीं समझै, फगत आपरौ फर्ज बजावै। जीवणनाटक में मिनख किण भांत पोता रौ फर्ज बजावतौ थकौ तटस्थ रैय सकै अर भांत-भांत रा संजोगां अर प्रसंगां रौ पोता रै माथै असर नीं होवण देवै, इणरौ एक जीवतौ-जागतौ दाखलौ इण भांत है—

पे'ल रा जमांना में अरब देस में गुलांमी री प्रथा रौ बड़ौ जोर हो। निबला अर गरीब मिनखां नैं धनवांन मांडांणी पकड़ लेवता अर वांसूं मन माफक कांम लेवता। अरबस्तांन रै एक खांनदांनी कुटुंब रौ एक छोकरौ इण चक्कर में आयग्यौ। जिणां उण छोकरा नैं पकड़ियौ, उणां उणनैं ले जायनैं एक श्रीमंत आदमी रै घरै बेच नांख्यौ। उण घर रौ

मालिक घणौ दुस्टी हो। वो नौकरां री खाल उदेड़तौ। वां सूं अवखा सूं अवखौ कांम लेवतौ। पण वो छोकरौ तो अलमस्त सुभाव रौ हो सो खूब डट नैं कांम करतौ अर मस्त रैवतौ। एकर उण गांम में कोई दूजा मुल्क रौ एक वैपारी आयौ। उणैं, उण छोकरा नैं पूछियौ—"भाई, थूं तौ घणौ इज दुखी दीसै ?" छोकरौ वोल्यौ—नीं तो म्हूं पे'ली दुखी हो अरनीं अवै हूं। थोड़ा बरसां पछै वो वैपारी पाछौ उणीज गांम में आयौ अर उणैं आयनैं देख्यौ के जिण स्रीमंत रै अठै वो छोकरौ नौकरी करतौ वो स्रीमंत मरग्यौ हो अर उणरै घर री हालत पण घणी खराब ही, सफा खालींपौ आयग्यौ हो। वो गुलांम छोकरौ मैंणत-मजूरी करतो अर उण सूं उणरै पेलड़ा मालिक रै परिवार रौ गुजारौ चलावतौ। वैपारी उणनैं वो सागै ई सवाल कियौ अर छोकरै वो सागै ई जवाब दियौ। इणरै पछै मोकला बरस वीतग्यौ वो इज वैपारी फिरतौ गिरतौ फेरूं पाछौ उणीज गांम में आयौ। अबकै आयनैं उणैं देख्यौ तो खिलकौ कांई ओ रो इज हो। वो छोकरौ उण इलाका रौ मुखियौ बणग्यौ हो अर हजारूं मिनख उणरी हाजरी में हा। वैपारी चकड़ी गम व्हैग्यौ। वैपारी उणनैं सदैई को सवाल पूछियौ अर छोकरै पण सागैई जवाब दियौ। थोड़ा वरस फेर वीत्या अर वो जवांन तो उण मुल्क रौ राजा बणग्यौ हो। कोई लड़ाई में उणैं राजा री मदद करी जिण सूं राजा उणनै पाटवी थाप दियौ। वैपारी हिम्मत करनैं अब काल पूछियौ—कीकर अवै तो आप पूर्ण सुखी हो ? पण वैपारी नैं ओ सुण-सुण अचंभौ व्हियौ के उण जवांन तो वो सागै ई पडुत्तर दियौ जिको उणैं बरसां पे'ली दियौ हो। उण जवांन रा जीवण में कितरी चढ़त-पड़त आई। पण वो जवांन पाका खेलाडू हो। उत्तम अभिनेता हो। वो मोह माया में फस्यौ कोयनीं। वो तो पोता रौ फर्ज बजावतौ, खेल देखावतौ अर मस्त रैवतै।

म्हूं आपनैं केवतौ हो के इण जीवणनाटक में भांत-भांतरा देखाव देखती वखत के संसार रा रंगमंच माथै अभिनय करती वखत मायानटी रा जाल में फंस नैं पोतारी कमजोरी मत वताईजौ। नाटक देखणवाला रै रूप में पण थांरी मोकली जवाबदारियां है। इण जवाबदारियां नैं निभावणी आप रौ फर्ज है। थे इतरौ ई नीं कर सकौ तो संसार थांरी हांसी करैला। संसार ओ सगलौ तमासौ देखनैं थांरी मूर्खाई माथै थांनै धुरकारैला अर थांसूं नफरत करैला।

भारत रा रंगमंच माथै जीवण रा कितराई हुँसियार नाटक करणिया आया। उणां पोतारौ पार्ट बहोत खूबीसूं कियौ। उणां जिण वखत आंख्यां उघाड़ी ह्वैला, स्यात् वे अचेत हालत में ह्वैला, जीवण रा सफल अभिनेता पण नीं बण्या ह्वैला। इतरौ ह्वैतां छतांपण वांरै जीवण नाटक रौ पड़दौ सत्यम् सिवं अर सुंदरम् रै सागै उघड़ियौ। उण नाटक री सरुआत तालियां री गड़गड़ाट रै सागै हुई। जीवण-नाटक रा इसाज एक मांनीता अभिनेता रौ एक दाखलौ याद आवै—

एक ठौड़ नाटक होवण वालौ हो। इण नाटक नैं जोवण वास्तै मोकला छोकरा अर छोकरियां आई। जवांन ई आया अर मोट्यार लुगायां पण आई। आधकड़ मिनख-लुगायां अर डोकरा-डोकरी पण आया। वांरै सन्मुख रंगमंच माथै एक अभिनेत्री हाव भाव सागै निरत करती ही। सगलाई एक निजर सूं उणनैं देखता हा। तालियां री गड़गड़ाट वाजती ही। एक सेठ रौ बेटौ कई जोड़ीदारां सागै बैठ्यौ निरत देखै हो। सेठ रा बेटारी उंमर काची, अनुभव काचौ अर लियाकत अधूरी ही। सगलाई देखणिया भांत-भांत रा थोड़ा घणा संस्कार लेयनैं रवानै ह्विया पण सेठ रा बेटा रै मन माथै उण नटी नैं देखनैं बीजौ इज असर ह्वियौ। वो उणरौ सरूप देखनैं मोहित ह्वैग्यो। उणरै कालजा में वासना रौ तीखौ कांटौ बैठग्यौ। उर्दू में एक सायर कह्यौ है—

इश्क ने गालिब निकम्मा कर दिया,
वर्ना हम भी आदमी थे काम के।

वासना, मोह माया के आसक्ती रौ कांटौ घणौ ऊंडौ अर दर्द कारी ह्वै। जठा तांई ओ कांटौ नीं निकलै, उठा तांई चैन नीं पड़ै। सेठ रौ बेटौ घरै आयौ पण उणरै दिमाग में तो वा नटी ठसियौड़ी ही। उणरी याद आवती जरै वो खाणौ पीणौ ई पांतर जावतौ। उणरै अंतर मन में रात दिन उणरीज रटणा चालती। उणरा साथियां सूं उणरा मा बाप निगै कराई। बेटा रे चाहिजै कांई है? उणरी इच्छा कांई है? साथीड़ां नैं उणरै दर्द री खबर ही। उणां मा बाप नैं कह्यौ—'जिण दिन सूं ओ नाटक देख नैं आयौ है, अभिनेत्री उणरै मन में बसगी है, वो उण साथै लग्न करणौ चावै।' आ बात सुण तांई मा बाप री आंख्यां आड़ी तो अंधारी आयगी। इसो लाग्यौ जांणै पगां हेठां सूं धरती सरकगी। उणां बेटा नैं समझावण री पूरी कोसिस कीवी। 'बेटा थूं जिकण माथै

मोहित ह्वियौ है, वा नाटक री अभिनेत्री ही । नाटक जोवण रौ मतलब मन नें आणंद देवणौ है, मोहित ह्वणौ कोयनीं । लुगाई रौ फूटरापौ तो नासवांन है । वो काचा मन में फगत वासना री आग सुलगावै । जिकौ इण में पड़ जावै, उणरौ नास ह्वै । थूं जिण नै सरूपमांन नें वैठौ है, वो वादलां री गलाई वदल तौ रैवै । अभिनेत्री सागै ह्वियौड़ौ थारौ प्रेम नीं है, ओ फगत मोह है । इण सूं थारौ धै पार नीं पड़ै । इणरौ आरंभ अर अंत सगलाई दुख दाई इज ह्वै । इण मोह रौ फंदौ मिनख नें साचौ अभिनेता के देखणियौ नीं वणण देवै । पलक-पलक में वदलता नाटक रा देखावां में थारौ मन भटकतौ रैवैला । थनैं कोई ठौड़ सांति नीं मिलै । इण वास्तै वेटा, थूं थारा विचार वदल दे । विवेक सूं कांम ले अर पछै थारौ मारग नक्की कर ।

मा वाप री इण वातां रौ वेटा माथै कोई असर नीं पड़ियौ । जिण मिनख नैं वासना रौ भूत लाग जावै उणरै ऊपर कोई उपदेस असर नीं करै । उणनैं पोतारै भला-भूंडा रौई मांन नीं रैवै । उणरी विवेक रूपी आंख्यां माथै मोह री पाटी वंध्यौड़ी ह्वै । इसा मिनख भींत भींतां ह्वै, उणनैं कांई नीं दीसै । वो उण वखत जीवण नाटक रा वदलता देखावा रा मोह में फंस जावै । उण मोटयार री पण आइज हालत ह्वी । उणरी एक इज मरजी ही के उण अभिनेत्री सागै विवाह करणौ । उणें मा वाप नें फोतका बरौवर गिण नें वो सीधौ उण अभिनेत्री रा वाप कनैं पूगौ । उण रौ वाप पण उणीज नाटक मंडली में एक हुसियार खेलाड़ू हो । उणनैं उणें सगली वात वताय दीवी । उणें पूरी बात सुण नें कह्यौ—'थारी वात म्हूं एक सर्त माथै मंजूर कर सकूं । वा वात आ है के थूं पोतै नाटक मंडली में भरती ह्वै अर एक हुँसियार अभिनेता बण । पछै कोई राजा महाराजा नैं राजी कर अर उण सूं इनांम इकरार जीत । जे वो धन म्हारी उंमर भर री कमाई सूं वत्तौ ह्वै तो म्हूं म्हारी वेटी नैं थारै सागै परणाय दूंला ।' मोट्यार रै वात हीयै ढूकगी । अवै कांई वाकी रह्यौ । वो तो इण कांम में लवलीन ह्वैग्यौ । कई वरसां तांई उणें नाटक रौ कांम सिखीयौ । वो नाटक कला में पारंगत ह्वैग्यौ ।

छेवट राज मै'ल रै सांम्ही नाटक रौ रंग जम्यौ । एक कांनी आभै अड़ता राज मै'ल हा तो दूजी कांनी धनवंतियांरी हवेलियां । सांगोपांग मंडप इसौ हो जिण में पग मेलै जित रीई जागा नीं ही । ठसाठस भरी जग्यौ हो । कितराई मिनख मकानां री छातां माथै छाजां माथै उभा

हा। हुंसियार खेलाड़ू सेठ री बेटौ पोतारी बरसां री तपसा नैं आज संसार सांम्ही लावणी चावतौ। वो चावतौ हो के मिनख उणरी कला देख नैं आणंद में गरक ह्वै जावै तो रुपियां री वरखा कर नांखै। खरौ खर आज नाटकसाला री सजावट ई अनोखी ही। मिनखां पोतारी आखी जिंदगी में इसौ खेल नीं देख्यौ हो। उणां रा हिवड़ा आणंद सूं छलकता हा। सगलाई एक आवाज सूं इज कैवता हा—आज तो इण अभिनेतै कमाल कर नांखी। इण रा अभिनय रौ कैवणौ ई कांई।' उण नैं भेंट देवण खातर मिनख उंतावल करता हा। आपस री में होड लागौड़ी ही अर राजा रै पे'ली वे भेंट देवणी चावता।

दिन ऊगौ। सोने री किरणां चमकी। उण मोट्यार री आसा रूपो किरणां पण जगमग-जगमग करण लागी। आखी रात अभिनय करण सूं वो थाकग्यौ हो। उणरी निजर सांमली हवेली माथै पड़ी। एक मोटियार तपसी धीमै पगलां उण हवेली में वलतौ हो। उणरै मूंडा माथै तपसा रौ तेज चमकतौ हो। हवेली में सन्मुख फूटरी-फूटरी लुगायां बैठी ही। वाँ रौ देखाव इज अनोखौ हो। साखियात जांणै मकरांणा री पुतलियां। वांरी मोटी अर काली आंख्यां तारां री गलाई जगमगती ही ए चंदरमा जिसी सीतलता वरसावती ही। वांरा डील रेसम जिसा सुंवाला अर भाकल जिसा सफेद हा। वांरा दांत दाड़म रा दांणां री गलाई चमकता हा। वांरा लांबा अर काला केस आकास रा बादलां री भांत ओपता हा। वांरा होठ मांमलियां जिसा लाल अर गाल गुलाब रै फूलां जिसा हा। वांरो फूटरापौ अनोखौ हो। तपसी आयौ देख नैं वे सगली एकण साथै भच्च करती वैठी ह्वी अर वंदणा करतां पूछ्यौ— धिन घड़ी धिन भाग जो गुरुदेव आज म्हांरै आंगणै पधार नैं इण भूपड़ी नैं पवित्र कीनी। आप जिकण चीज री जरूरत ह्वै, वा फरमावौ।

ओ अनोखौ देखावौ देखनैं वो निरत करतौ मोटियार जराक थोबियो मन में विचारां री दोट उठियौ। ओ मोटियार तपसी कितरौ संजम धारी है। अपसरावां जिसी सरूपवांन लुगायां कांनी पण वो आंख ऊंची करनैं ई कोय नीं जोवै। वो कितरौ निरलेप है, कमल री गलाई अनासक्त है। इण लुगायां रै सरूप आगै वा अभिनेत्री सफा कडौपी लागै। इण अभिनेत्री नैं परणीज वा सारू म्हैं कितरा तलफा तोड़िया। अर ओ तपसी पण है तो मिनख इज। पछै म्हूं इण माया रा फंदा में कीकर

फंसग्यौ ? कठै तो ओ पोतारी मस्ती में रैवण वालौ ओ संजमी तपसी अर कठै म्हूं महा कांमी हरामी कीड़ौ । धिरगार है म्हनैं जो म्हूँ कांया रा मोह में पड़नैं दूजी सगली बातां भूलग्यौ । ओ सरीर तो मांयनैं सूं सगलां रौ एक सरीखौ इज ह्वै । पछै इण अभिनेत्री रे सरीर में एड़ी कांई बताई हो के म्हूँ इण रा नासवांन सरीर माथै मोहित ह्वैग्यौ । म्हैं म्हारै बाप रौ कैवणौ नीं मान्यौ । उणां म्हनैं जीवण रूपी नाटक रौ उपदेस दीधौ हौ । पण वो उपदेस म्हारै अंगै नीं लागौ । म्हारा विजोग में म्हारी मा रोय रोय नैं आंधी ह्वैगी, पण म्हैं म्हारौ हठाग्रह नीं छोड़ियौ अर इण माया रै लारै बारै वरसां तांई कालौ ह्वियौड़ौ फिरतौ रह्यौ । इतरां कियां पछै ई म्हारी अभिलाषा पूरी नीं ह्वी । थोड़ी ताल रै वास्तै मांन लो के म्हारी मनो कामना पूरी होवण वाली है, पण मनो कांमना पूरी हुवां पछै ई ओ काया रौ फूटरापौ तो कायम री चीज नीं है । ए विचार आवतांई उण मोटियार रौ हियौ चलायमांन ह्वैग्यौ । उणरै अंतस में विवेक री जोत चमकी । आसक्ती रौ जालौ काचा डोरा री गलाई तूट नैं हेठौ पड़ियौ । नाटक देखणिया हसता हा अर तालियां वजावता हा । मोटियार पण मन में हसतौ हो । उणरै जीवण संगीत रौ ताल अर लय संधीजतौ हो । नाटक करतां करतां इज अभिनेता रै अंतस में आतम जोत प्रगट ह्वी । उणरी आत्मा में केवल ग्यांन रौ परगास वापरियौ । नाटक पूरौ ह्वियौ अर अभिनेता मंच ऊपर सूंनी चौ उतरियौ । राजा अर प्रजा री तरफ सूं सोनी, चांदी, हीरा, पन्ना, अर मांणक मोतियां री बरखा होवण लागी । देखतां-देखतां मोटौ ढिगलौ ह्वैग्यौ । पण अभिनेता रै मन में तो कोई दूजीज बात ही । उणै तो ढिगला कांनी निजर ई नीं नांखी । उण अभिनेत्री रै बाप उणरौ हाथ पकड़तां कह्यौ—कलासम्राट, अवै सिद्ध पधारी हो ? आज म्हारी प्रतिग्या पूरी ह्वी । चालौ अवै म्हारी बेटी सागै लग्न करौ ।

मोटियार हाथ छोड़ावतां कह्यौ—ए ऊपरली चीजां तो इण आत्मा नैं मोकली वार मिली, पण इणां रौ टिकाव कांई ? उमर कितरी ? पण आज म्हनैं जिण ग्यांन रा दरसण ह्विया है, आज पे'ली वा चीज म्हनैं कदैई मिली कोयनीं । आभै में रणकार फूटग्यौ, सगलाई केवलग्यांनी री जै जै कार करण लाग्या । अवै वो अभिनेता विवेक द्रिस्टीवालौ ह्वैग्यौ हो । वो जीवण रौ नाटक आछी तरियां कर सकै हो ।

बस, जीवण रूपी नाटक रौ सार ओ इज है। इण भेद नैं जाणण री आंपां नै कोसिस करणी चाहिजै। आध्यात्मिक भासा में कैवां तो इण जीवण रूपी नाटक री भेद जांणवा वास्तै सुभाव में रमण करणी चाहिजै। अर पर भाव सूं अलगौ रैवणौ चाहिजै। जैन धर्म में बतायौड़ा नव तत्वां में सूं जीव, संवर, निर्जरा अर मोक्ष मिनख रै वास्तै ठीक है। ए सगला आतमा री स्वभाव रमणता में मदद देवण वाला है! अजीव, पुण्य, पाप, आह्रव अर बंध ए ग्येय ह्वै। आतमा नैं इणां में नीं फंस णौ चाहिजै। वां में फस्यां पछै आतमा साचौ ग्यान द्रिस्टा नीं रैय सकै। आ बात समझा वण खातर आचारज कुंद कुंद एक ग्रंथ लिख्यौ है, जिणरौ नांम है 'समय सार' उण माथै अमृतचंद्र आचारज अर कविवर बनारसी दास 'समय सार नाटक' नांम सूं टीका लिखी है। उणा लिख्यौ है के जीव पोतरै जीवण रा नाटक में मूल सरूप में नीं रैवै। वो परभाव में इज भटकतौ रैवै। उणरौ कारण मोह माया, सुभासुभ कर्म के हेरफेर है। इणां रै कारण वो आस्रव बंध हेय तत्वां नैं पण चोखा मांनै, वांमें रस लेवै, वांरी आसक्ती अर राग द्वेष में फंस नैं पोतारौ सरूप भूल जावै। कवि री आध्यात्मिक अंतर्वाणी में कैवां तो—

'हूं स्वतंत्र निश्चल निष्काम
ज्ञाता द्रष्टा आतमराम ......ध्रुव

मैं वह हूं जो है भगवान, जो मैं हूं वह है भगवान ॥
अंतर यही ऊपरी जान, वे विराग यहां राग वितान ॥१॥
सुख दुख दाता कोई न आन, मोह राग ही दुख की खान ॥
निज को निज, परको निज जान, फिर दुख को नहीं लेस निदान ॥२॥
होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम ॥
दूर हटो पर कृत परिणाम, ज्ञायक भाव लखूं अभिराम ॥३॥

इण कविता में आ वात बतायौड़ी है के नायक नैं जीवण नाटक में किण भांत रैवणौ चाहिजै। अर रंग भूमि माथै किण भांत प्रवेस करणौ चाहिजै।

सही रूप सूं जिको सम्यग ग्यांन री जांणणियौ ह्वै, सम्यग अभिनेता ह्वै, वो पौद्गलिक पदार्था नैं अल्प जीवी मांनै। वे धन के मिनख इस्ट वियोग सूं के इस्ट संजोग सूं चलायमांन नीं ह्वै। धन अर पोता

रा सगा रा नास नैं ह्वै पोतारौ नास नीं मांनै। पाप अर पुन्न री भावना सूं ऊपर उठनैं वे सुद्ध भाव सूं उपासना करै, सुद्ध जोग री साधना करै। हरख में हरख गेला नीं बणै अर सोक में सोकातुर नीं ह्वै वे पोतारा अध्यात्म मार्ग में, ब्रह्म वीथी में मस्त होयनैं आगै वधता इज रैवै। इणरै पछै वांरै जीवण में सुख, संतोख अर सांति री प्रवाह वैवतौ इज रैवै।

वेदांत री भासा में कैवां तो वो संसार री मोह माया में नीं फसै। वो माया नैं ब्रह्म रै कनै नीं आवण देवै। माया नैं औपाधिक भाव मांन नैं उण में रमण नीं करै। माया नटी री आसक्ती के उणरा रूप जाल में फंसवा सूं मिनख निकांमौ वण जावै अर ब्रह्म मारग सूं आघौ ह्वै तौ जावै। इण वात नैं एक कवि इण भांत कही है—

जीवन है एक कहानी
मानव है इसका नायक, माया है नटी पुरानी
आशा और निराशा दोनों माया की हैं दासी।
निशिदिन मानव की आंखों को करती रहती प्यासी।
आज निराशा के दामन में कल आशा है रानी
जीवन है.......
मानव है अविवेकी अंधा, समझ नहीं कुछ पाता
सुख में हंसता रहता, आंसू दुख में खूब वहाता
अपने पन को भूल गया है, माया का अभिमानी
जीवन है.......

कवि री वांणी में जीवण एक कहाणी है, एक नाटक है। मांनखौ इण नाटक रौ सूत्रधार है। माया नटी पण इण नाटक में तैयार रैवै। वा मांनखा नैं नसा में गरक कर नांखै। इण वास्तै मांनखा नैं उण सूं सावचेत रैवणौ चाहिजै अर पोतारै पार्ट री ध्यांन राखणौ चाहिजै।

जीवन नाटक में मिनख जे एकाद वखत ई सावचेत होय नैं माया नटी रा फंदा सूं बच सकै, तो उणरौ मारग साफ ह्वै जावै। उणरौ जीवण वरोवर आगै वधतौ इज जावै। अर जे आ वात नीं ह्वै तो माया नटी उण नैं भटकाय नांखै अर जुदी-जुदी जुणां मां जनम लेय नैं इण नैं भांन पण भूलणौ पड़ै।

इण वास्तै आपां नै आंपणौ जीवण ठीक ढंग सूं बितावणौ चाहिजै भूमिका भजतपां वखत निरलेप होय नैं मोह माया सूं अलगौ रैवणौ चाहिजै। बीजां रौ नाटक देखतां वखत पण साचौ जांणकार रैवणौ चाहिजै अर माया नटी रा फंदा में हरगिज नीं फसणौ चाहिजै। आंपणै जीवण नाटक री सफलता इण में इज है। आंपणै जीवण नाटक री पूर्णता पण इण में इज है।



१३

दांन रौ आणंद

संसार रा टण का आंगणा में मिनख जिण वखत आंख्यां उघाड़ै, उणरी निजरां आगै भांत भांत रा जीवां री दौड़ भाग ह्वैती दीसै। भांत-भांत रा सुभाव वाला प्राणियां सागै जरै वो संपर्क में आवै तो उण में मतैई एक वैवारिकता आय जावै। इण वैवारिकता रै कारण वो जचै जिसा ई संजोगां रै अनुकूल वणजावै। मांनखा रौ विकास धीरै-धीरै ह्वै। इण विकास काल में पण उण रै आगै भांत-भांत रा संजोग आवै। उणनैं कई तरै रा वातावरण में सूं निकलणौ पड़ै। पण एक बात तो अखरै है के संजोगां अर वातावरण में पण मांनखा री दयाल विरती रौ परगास जगमगतौ रैवै। उण हालत में करै ई करै ई चढ़ाव उतार जिसौ ई आवै। उण वखत उणरी साधारण दयालु विरती माथै पड़दौ सो आय जावै।

मिनख एक सामाजिक प्रांणी है। वो पल छिन समाज रै सागै रैयनैं इज जीवै। जनम सूं लगाय नैं मौत तांई वो कितराई मिनखां रै संपर्क में आवै। वांरी मदद लेवै अर कांम पड़ियां वांनै पण मदद देवै। मोटौ ह्वियां पछै वो पैसौ जोड़ै, वो पण समाज री मदद सूं इज। समाज सूं इतरौ फायदौ उठायां पछै मिनख रै मन में आ भावना जागै के उणरी वाई खपतां वोई कोई री मदद करै। कोई नैं जरूरत ह्वै तो कांई देवै। इण देवण री विरती नैं इज आंपणा सास्त्रकारां 'दांन' कह्यौ है।

समाज कना सूं वार वार लीनौड़ी मदद रै बदलै पाछी बीजां नै मदद देवणी उधारी हांती है। कोई मिनख जे समाज कना सूं तो लियां

जावै पण देवण री नीत नीं राखै तो वो नुगरौ बाजै। एक धनवांन आदमी है। उणरै कनैं अखूट धन है। वो पोतारा धन में सूं गरीब गुरवा नैं एक कौडी पण नीं देवै तो वो एकतरै सूं समाज द्रोही है। इसा मिनख री पुण्य धीरै-धीरै क्षीण व्है जावै। कारण के उणैं जिकौ धन भेलौ कीनो है वो कोई आभा मांयनैं सूं तो टपकियौ कोयनीं। वो आयौ तो समाज कना सूं इज है। उण धनवांन नैं जे सून्याड़ रोही में छोड़ देवां अर कैवां के उठै दुकांन मांडनैं कमाव तो वो कमाय सकै कांई? म्हारौ मत तो ओ के दुनिया में जितरा मिनख है, वांरै व्यापार व्यवसाय में समाज रौ प्रत्यक्ष के परोक्ष सहयोग तो है इज पण मिनखरा जीवण में तो पंखी जिनावरां, वनस्पती, जल थल, अग्नि, सूरज अर आकास रौ कितरौ सहयोग रैवै वो कोई सूं छांनौ कोयनीं। इण वास्तै तत्वार्थ सूत्रकार उमास्वामी कह्यौ है—

'परस्परोपग्रहो जीवानाम्!'

प्राणियां मात्र रौ जीवण एक दूजा रै उपकार माथै चालै। इतरौ व्है तां छतां ई घणखरा मिनखां नैं ओ गुमेज व्है के 'म्हैं समाज कना सूं कांई नीं लीनौ। म्हैं कोई री मदद पण लीनी नीं। म्हूं तो म्हारी हिम्मत रै पांण आगै वध्यौ हूं।' पण खरी वात आ है के ओ फगत भरम है। कोई गरीब गुरवारी मदद करनैं कोई कैवै के--म्हैं थनैं अमुक चीज दीनी जरै इज थूं जीवतौ रह्यौ। म्हारै विना वीजौ थनैं कुण देवतौ। इण भात री विरतौ समाज द्रोह है। जो मिनख समाज रा सहयोग सूं भेला कियोड़ा धन में सूं जरूरतमंदां नैं देवण री नीत राखै तो ओ उणरौ फर्ज है। इण वास्तै मनु महाराज लिख्यौ है—

'न दत्वा परिकीर्तयेत्।'

कोई नैं दांन दैयनैं पछै दांन रा वखांण नीं करणा चाहिजै।

सूरज आखा संसार नैं उजास देवै, अग्नि सगलां रौ अनाज रांधै, बादला मेह वरसावै, अर वनस्पती सगलां रै कांमै आवै। पण ए सगलां रै कांम आयां पछै इणानैं कठैई ऊद पाड़ता देखिया? छापां में कठैई इणां री एडवरटाइजमेंट देखी? गाय, भैंस, बकरी अर ऊंट जिसा जिनावर पण मांनखा रै कितरा कांमरा है। पण उणां जुग थण्यां पछै कठैई छापा में जाहेरात काढी है? कठैई जायनैं ऊद पाड़ी है? मिनख एक विचारवांन जीव है। उणैं पोतारी अक्कल हुसियारी सूं संसार री

कई चीजां लीनी है। पण नगारा बजाय नें वांरी जाहेरात करणरी कांई जरूरत है? विवेकी मिनख रौ तो ओ फर्ज है के मांनव जीवण नें सार्थक करण खातर दांन अर भोग स्वीकार करणौ चाहिजै। भोग रौ स्वीकार ओछा सूं ओछो करणौ अर दांन रौ स्वीकार घणा सूं घणौ करणौ चाहिजै। दांन देवण वास्तै मिनख नें पूरी तक राखणी चाहिजै। दांन किणनें देवणों, इणरी पण सोजी राखणी चाहिजै। मन में फकत एक इज भावना राखणी चाहिजै के समाज रा सहयोग सूं भेलां कियौड़ा धननें मौकौ आयां समाज रा कांम में लगावणौ अर रिण मुगत व्हैणौ।

मिनख पैसौ कमावै इण वांस्तै इजहै के उणारौ जीवण आरांम सूं निकलै। पण वो पैसौ तीन तरै सूं वापरीजै। एक नीतिकार कह्यौ है—

'दानं भोगो नाशः त्रिधा गतयो भवन्ति वित्तस्य।'

धन रौ तीन भांत सूं उपयोग व्है। दांनरा रूप में उपयोग व्है तो वो धन सार्थक है। उण धन रौ जे भोग कियौ जावै तो पण थोड़ौ घणौ उपयोग इजहै। पण जे नी दांन दिरीजै, नीं उपयोग व्है अर फगत दाटौ देयनें इज धरीजै तो उण धन रौ नास व्है। कई दांनी मिनखां रौ सुभाव इज इसौ व्है के उणांनें बस देवण में इज आणंद आवै। इसा मिनखांरी मांनता व्है के जे कोई हाथ सूं देवां वो आंपणौ है अर आंपां जे नीं देवां तो वो आंपणौ नीं। जोधपुर महाराजा जसवंत सिंघजी कह्यौ है—

खाया पीया खरचिया, दीना सोई सत्य।
जसवंत धर पोढाविया, माल पराए हत्थ॥

इंदौर रा नांमी सेठ सर हुक्मीचंदजी कै जीवण रौ एक प्रसंग म्हनें याद आवै। किणैई वांनें पूछियौ—सेठजी; आपतो लक्ष्मी पुत्र हो। आप री संपत रो कोई पार नीं। घणखरा मिनख कैवै के आपकै कनें दस करोड़ री मिलकत है। कई जणा इण आंकड़ा नें बीस पचीस करोड़ तांई ले जावै। पण ए सगली वातां फगत अंदाज री है। इणां रै लारै कोई पीठ बल कोयनीं। मिनखां नें गैर समझ पण वधारै व्है। इण वास्तै आपकै धन रौ सही-सही आंकड़ौ आपइज बतावौ। सेठां हंसतां-हंसतां पड़ुत्तर दियौ—भाई, म्हारी पोतारी मिलकत तो सफा ओछी

है—'फगत साढा सत्तावीस लाख।' सेठां रा मूंढा सूं ओ जवाब सुणनें वो इचरज में पड़ग्यौ। उणें अचूंभा सूं पूछियौ—'सेठ सांव, आप कोई बीजा नें पांतराइजौ। इसी विना पतारी वात म्हूं मांन लूं, इतकौ भौली म्हूं कोयनीं। पचास लाख रूपियां रौ तो ओ एकलौ कांच कौ मैल इज है। आपरा वीजा वंगला पण मोकला है। मिल पण है। कांई आ सगली आपरी मिलकत कोयनीं?' सेठजी पोतारी वात री खुलासी करता कह्यौ—'भाई, थूं म्हारी वात इजनीं समझ्यौ। म्हैं म्हारै हाथ सूं दांन में फगत साडा सत्तावीस लाख रूपिया दीनां है। इणवास्तै म्हांरी असली मिलकत आइज है अरवा घणी ओछी है।

ओ है एक साचा दांनी री नरमाई री दाखलौ।

दांन देवणौ आगला माथै ऐहसान करणौ नीं है। दांन कोई इसी चीज कोयनीं के जिणरै वास्तै जाहेरात करणी पड़ै। दांन तो मिनख रौ फर्ज है, आत्मसुद्धि रौ दरवाजौ है, उदारता री अंतर्नाद है, आत्म विकास रौ सोनै री मौकौ है। सजागता रौ चौकीदार है। कोई पण करसौ पोतारा खेत नें वीज नें आ वात नीं कैवै के म्हैं म्हारा खेत नें इतरौ वीज दीनौ। कोई पण वैपारी पोतारा विणज वैपार में रकम लगाय नें आ वात भवैई नीं कैवै के म्हैं वैपार में इतरी रकम रोकी। इणरौ कारण कांई? इणरौ कारण ओ के करसौ खेतर नें वीजै तो पोतारै स्वारथ खातर अर वैपारी वैपार में रकम रोकै तो ई पोतारै स्वारथ खातर, इण में कोई माथै थोरी-नोरौ के ऐहसान कोयनीं। इणीज भांत जे समाज में सूं भेला कियौड़ा धन नें समाज खातर कोई खरच करै तो इण में ऊद पाड़ण री के जाहेरात करण री कांई जरूरत है? इण में तो उणरी पोतारी भलाई है। उण सूं जिकौ धर्म लाभ होवै वौ उणनें पोतानें इज तो ह्वै। दांन देवण सूं मिनख नें जिकौ सहज आणंद मिलै वो धन भोगविया सूं के उणनें पोतारै स्वारथ में खरच करण सूं के तिजोरियां भरण सूं नीं मिलै। एकर तलाव धन गैलौ बणनें नदी नें कैवण लाग्यौ—'थूं खरौखर मूरख है। थूं थारौ सगलौई पांणी ले जाय नें दरिया में ठालदै। इणरै एवज में थनें कांई मिलै? थारी इतरी मेंणत उपरांत ई दरियौ तो खारौ रो खारौ हैं। नदी बोली—'वैवतौ रैवणौ ओ म्हारौ धर्म है। दरिया नें म्हूं म्हारौ आपौ सूंपूं जरै इज म्हनें आणंद आवै। एवज में म्हनें कांई मिलै, इसी म्हारै मन में भावना इज नीं आवै।' परिणाम सरूप नदी रौ प्रवाह

चालू इज रह्यौ। उणनैं तो परबत में सूं नवौ-नवौ पांणी मिलतौ गियौ पण तलाव रो थिर पांणी एक दिन सूखीज गियौ। तिरसा मुसाफिर सूखा सरवर री पाल माथा सूं पाछा वलवा लागा पण नदी वांनैं मीठौ इमरत जल पावतीज री।

दांन तो फल प्राप्ति री गेरंटी है। इण में कोई नुकसांण री बात कोयनीं। उण सूं आणंद मिलै, फर्ज पालण रौ संतोक मिलै। जैन आचारज उमास्वांमी दांन री व्याख्या कीवी है—

'अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम्।'

पोतारी आत्मा रा अनुग्रह वास्तै, पोतारी उदारता रा विकास वास्तै, पोतारी चीज रौ त्याग करणौ, इणरौ अर्थ इज दांन है। 'इल्म देने से दूना होता है' आ केवत तो जग जांणीती है। पण पैसा अर बीजी चीजां खातर मिनखां री अवली मांनता है। वे जांणै के पैसौ खरचियां सूं के चीज दीनां सूं बीत जावैला। पण आ मांनता भूल सूं भरियौड़ी है। पैसौ फगत भेलौ करनैं भेलिया सूं घटै, वधै अंगांई कोयनीं। कुरांन सरीफ में एक ठोड़ लिख्यौ है—"पैसौ व्याज सूं नीं पण दांन सूं वधै।" इस्लाम धर्म रौ आदेस है के हरेक मुसलमांन नैं पोतारी आवक में सूं चालीसमौ भांग दांन में देवणौ चाहिजै! आपां जितरौ खावां, आंपणै सरीर में उतरौ लोही नीं वणै। सगली खुरांक रौ उपयोग नीं ह्वै। उण में सूं नकांमां भाग मलमूत्र रै रूप में वारै फेंकीज जावै। इणीज भांत मिनख नैं पण समाज सूं मिलियौड़ा सगला साधना नैं पाछा समाज नैं सूंप देवणा चाहिजै। सगला साधनां नैं पोतारै स्वारथ में लगावणा ओछी बात है।

आइज बात अद्वैतवाद रा मोटा आचारज शंकराचारजजी दांनरी व्याख्या बतावतां कही है—

'दानं संविभागः'

जिकौ संपत के साधन समाज सूं मिल्या है वांनै ढंगसर वैंट देवणा चाहिजै। खरौखर दांन करती वखत मिनख नैं पोतारौ अहं भूल जावणौ चाहिजै। मिनख जे पोतारी मरजी सूं दांन करै, समाज में जिकण नैं जरूरत ह्वै, उणनैं देवै, तो संग्रह विरती नीं फूलै-फलै। समाज में कंजूस मिनखां इज संग्रह विरती री लालसा वधारी है। इसा सगलाई जणा जे पोतारै गजा प्रमांणै वत्तौ धन समाज री बैंक में

जमा करावता जाय तो संसार में लीला लेहर व्है जाए। जूंना-जमांना में स्रीमंत फगत पोतारीज सुख सगवड़ री ध्यांन नीं राखता पण आजु-बाजु रा गरीब गुरबारी ई पूरी ध्यांन राखता। मौको पड्यां वे छूटा हाथ सूं दांन देवता। वांरै जीवण में—"हाथ दिये कर दांन रे!" रौ सूत्र तय कीनोड़ी हो। इण कारण इज उण जमांना में आर्थिक बिसमता व्हैतां छतां पण वर्ग संघर्ष नीं हो। सगलाई संतोक सूं रैवता। कोई बेकार के भूखौनीं हो। साधनां रा अभाव में कोई दुखी नीं हो। उण जमांना में पैसावालां री धन देखनें गरीब मन में बळता नीं हा। गरीब री आइज भावना रैवती के 'म्हारै जिकण चीज री जरूरत है वा चीज म्हनें मिलै इज है तो पछै म्हनें धन भेली करनें कांई करणी। पैसा वालां री जिकौ धन है वा म्हारी बैंक है। म्हारी मरजी व्है जरैई म्हूं उण में सूं लेय सकूं।'

पण आज रा स्रीमंतां री तो बात इज न्यारी है। गरीबां सागै वां री कोई लगाव नीं रैवै। वे गरीबां री सुख सगवड़ री कोई ख्याल नीं राखै। इण वास्तै पैसा वालां रौ धन वांरी आंख में कांकरा री गलाई खटकै। गरीब संतोक राखै किण विध? ओ इज कारण है के आज गरीब गुरबा साम्यवाद कांनी रुख राखें। पण साम्यवाद रा जनम पे'ली इज भारत में रिसि मुनियां मांनखा नैं इण ढंग री सीख दीवी ही के समाज रां श्रीमंतां अर गरीबां बिचै राड़ नीं व्है, गरीबां री आंख्यां में स्रीमंतां री धन नीं खटकै।

भगवांन महावीर श्रावकां खातर इण भांत री एक व्रत इज फरमायो है। इण व्रत रा पालण सूं सगली दैंण मिट जावै। इण व्रत री बोलती नांम 'अतिथि संविभाग व्रत' है। पण उणरी अर्थ घणी संकुचित रूप सूं करै। इण व्रत रौ जूनौ नांम 'अहासंविभाग' (यथा संविभाग) पण है। अर उणरी पूरौ अरथ करां तो इण भांत है—के पोतारै कनें जिकी चीजां है, वांनें ढंग सरू बैंट देवणी। ओ व्रत समाज रा सगला वर्गां खातर हो।

गोविंदानंद 'दानक्रिया कौमुदी' में दांन री व्याख्या इण भांत कीवी है—

'उद्देश्यगत स्वामित्वजनक त्यागो दानम्'।

दांन री क्रिया रौ मतलब धन माथै सूं पोतारौ धणियाप छोड़णौ। 'इदं न मम' (ओ म्हारौ कोयनीं) इसी भावना दाता में जनमै तो इज

वो साची दांन है। जठै दांन देय नैं बदला में पाछौ कांई लेवारी भावना व्है, के जठै स्वारथ-साधन खातर दांन दिरीजै, वो दांन नीं है, वो तो एक भांत रौ सोदौ है।

सगला सद्‌गुणां रौ प्रवेस द्वार दांन है। जिण मिनख में उदारता रौ गुण नीं व्है, उणमें बीजा कोई गुण ई नीं व्है। संकुचित मन रा गुण पण संकुचित व्है। दांन हियारै विकास री तालीम है। अपणात पणौ दांन रै मारफत इज संसार रा हरेक जीव तांई पूग सकै। मिनख में जरै दांन री भावना कुटुंब, गांम, सहर अर देस नैं भेद नैं आखा संसार तांई फैले, विश्व बंधुत्व री भावना उण वखत इज फैलै। तीर्थंकर संसार प्रेमी वणवा वास्तै अर संसार सागै अपणात पणौ बरत वा सारू, सै सूं पे'ली दांन सूं इज सरुआत करै। इण भांत वे समाज, देस अर संसार नैं दांन मारफत इज उदारता री विरती सिखावै।

पोतारै कनैं जिकौ साधन सामग्री व्है, उणनैं बीजां खातर देवण में कर कसर नीं राखणी चाहिजै। बीजां वास्तै तन, मन अर धन रौ उपयोग करणौ, समाज में दुखी, निर्धन अर निराधार व्है वांरै वास्तै कनै व्है जिकी हाजर करणौ, दुखियौ नैं धीरप बंधावणौ, पोतारी बुद्धि माफक वांनै चोखौ मारग बतावणौ, अर धन सूं सै नैं मदद करणी, ए सगला दांन रा इज प्रकार है।

कोई ओ विचार करै के दांन कियां सूं म्हारौ धन ओछौ व्है जाएला। पछै म्हूं कांई खाऊंला अर म्हारा टाबर टूवर कांई खावैला? आ सगली एक भांत रौ भरम है। आतम सिरधा में अधूरा पणा रौ नमूनौ है। मिनख में इतरी आतमसिरधा तो व्हैणी इज चाहिजै के म्हा में कांई खोट है? कोई नैं वखत माथै मदद करूंला तौ म्हारै टोटौ नीं जावै। आंपां तपसा करां हां। कोई नैं निस्वार्थ भाव सूं दीनां पछै कांई नीं बचै के ओछौ बचै तो उण में इज गुजारौ चलावणौ, बचियौड़ा भोजन के कपड़ां सूं कांम चलावणौ, आइज साची तपसा है, ओ इज आभ्यंतर तप है।

दांन देवण सूं चीज ओछी नीं व्है। वधै कूवौ इणरौ परतक्ष दाखलौ है। कूवा में सूं पांणी काढियां में उण में खूटण गालौ नीं आवै। काढता जावां ज्यूं सागलतौ जावैला। इणीज भांत धन रौ सदुपयोग करण सूं वो वधतौ इज जावै। कूवा में सूं जे पांणी नीं काढां तो

उण पांणी री कांई हालत व्है ? नवौ पांणी नीं सांगलवा सूं जूंनौ पांणी बास मारण लाग जावै। जिण कूवा रौ पांणी बास मारै, उणरै कोई नैड़ौ ई नीं जावै। इणीज भांत जे धन री तिजोड़ी में धन ऊंडौ धर दियौ जावै, हिरदारी तिजोड़ी रै कंजूसाई रौ मजबूत तालौ दे दियौ जावै, अर उदारता माथै बंधण लगाय दियौ जावै तो इसा कंजूस रै कोई नैड़ौ ई नीं जावै। सवार पे'ली कोई उणरौ नांम ई नीं लेवै। पण जिकौ धणी दांन देवतौ व्है अर मन रौ उदार व्है, उणरौ नांम इज मांनखा री जीभ माथै वारंवार चढै। राजा करण एक मोटौ दांनी हुऔ। वो नित दिनूंगै दांन देवतौ। इण वास्तै उण वेला नैं आज ई दुनिया राजा करण री वेला कैवै।

भारत रै अमर कवि संत कबीर इण वास्तै इज कह्यौ है—

'पानी बाढै नाव में, घर में बाढै दाम।
दोनों हाथ उलिचिये, यही सयानों काम॥

समंदर री छाती माथै नाव अरड़ाट करतौड़ी आगै वधै। उणमें जे पांणी भरी जण लागै तो हुंसियार मिनख तुरत दोनूं हाथां सूं उलीचण लाग जावै। कारण के नीं उलीचै तो नाव डूब जावै अर उणरै सागै मुसाफर पण तापी रै तलै जावता बाजै। इण वास्तै जिण वखत घरमें पैसौ वधण लागै, डाह्या मिनख रौ ओ फर्ज है के उणनैं छूटा हाथ सूं दांन देवणौ चाहिजै। समझू मिनख नैं गरीबां नैं दांन देवणौ चाहिजै। कारण के जे जरूरत सूं ज्यादा पैसौ भेलौ व्हैला तो चोरी सकारी रौ भौ रैवैला। अर जीव नैं पण खतरौ रैवैला। इण भांत पैसौ ई जावैला अर जीव पण जावैला। गायनैं दोव नैं दूध नीं काढां तो दूध री सरां मतैई बंद व्है जाएला। इणीज भांत भेला कियौड़ा धन रौ उपयोग क्रियां बिना नवौ धन नीं मिलै।

धन री रांमत फुटबॉल रै ज्यूं व्हैणी चाहिजै। कोई फुटबॉल पोता कनैं इज मेल दे तो रांमत कीकर व्है सकै। इण वास्तै इज फुटबॉल कनैं आवतां इज खेलाड़ू उणनैं आगला खेलाड़ू कांनी फैंके। इणीज भांत पैसा री रांमत पण पैसा नैं आगौ फैंकने इज रमणी चाहिजै। समाज में पैसौ बैवतौ रैवै तो समाज रूपी सरीर निरोग रैवै। संस्कृत भासा में धन नैं 'द्रव्य' पण कैवै। जिणरौ अर्थ है के जिकौ पांणी री गळाई बैवै वो 'द्रव्य' है—'द्रवतीति द्रव्यं' लुगायां नैं पोतारै गैणा-गांठा रौ घणौ

गुमेज व्है । वे हेम रा जड़ाऊ गैणा पैर नैं पोतारी श्रीमंताई दुनिया नैं दाखवै । पण जे वे गैणां री घड़ाई जोगा पैसा ई समाज री भलाई खातर खरचै तो समाज री विसमता मिटै अर वांरा जीवण में पण सादगी वापरै । भर्तृहरि कह्यौ है—

'दानेन पाणिर्नतु कंकणेन'

हाथां री सोभा जड़ाऊ कांकण पेहरियां सूं नीं व्है, दांन दियां सूं व्है ।

अंग्रेजी में पण एक ओपती कहेवत है—

The hand that gives, gathers.'

जिकौ हाथ दान देवै वो देवै कोयनीं भेलौ, करै ।

मारवाड़ रा एक नैंनकड़ा गांवड़ा में एक लुगाई रैवती । उणरौ मन घणौ मोटौ हो । उणरै घर में जे कोई आवतौ तौ वा उणनैं जीमियां वगर पाछौ नीं जावा देवती । केवण रौ मतलव ओ के घर में खालीपौ व्है तां थकां ई वा घरै आयोड़ा नैं भूखौ नीं जावण देवती । उणरौ घर-घणी पण एक मांमूली आदमी हो । वो मैंणत मजूरी करनैं पोतारौ गुजरांण चलावतौ । उण वाई नैं उणरी दांन विरती रै कारण सगलोई चौखलौ उणनैं ओलखतौ' अर इण कारण उणरा घरधणी नैं पण सगलोई चोखलौ ओलखतौ । एक वेला उणरा घरधणी नैं मैंणत मजूरी वास्तै थोड़ौ आगौ नेड़ौ जावणौ पड़ियौ । रवानै व्हैती वखत वो लुगाई नैं कैवण लागौ—म्हारै फलांणै गांम जावणौ है, आठ-दस दिन लागैला थूं कोथली में थोड़ौ आटौ घाल दे ।' लुगाई आछी तरियां जाणती ही के म्हूं आया गिया री इतरी सरवरा करूं तो पछै म्हारै धणी री पण मिनख सरबरा करैला इज । इणां नैं भूखौ नीं रैवण देवै । इण वास्तै साथै आटौ लेजाण री जरूरत इज कोयनीं । वो आदमी वीर व्हियौ जरै उणरै संतोक वास्तै उणरै सांमांन में एक खाली कोथली मूंडौ बांध नैं घाल दीवी । वो आदमी तो जठै-जठै गियौ, मिनखां उणनैं अधर राखियौ । उणनैं खूब सोरौ राखियौ अर आछी आगता-सागता कीवी । उणरै नीं तो जावती वखत कोथली खोलवा री कांम पड़ियौ अर नीं आवती वखत संभालवा री कांम पड़ियौ । घरै आयां उणं पोतारी जोड़ायत नैं कह्यौ —'म्हारै तो कठैई पण आटा री कोथली खोलवा री ई कांम नीं पड़ियौ । कोथली ही ज्यूं री ज्यूं पाछी लायौ हूं ।' लुगाई

बोली—'कोथली तो फगत थांरै संतोक खातर सफा खाली बांधनें मेली ही। आ देखौ साफ खाली है। बाकी थांरै खुराक तो म्हैं पे'लीज पुगाय दीवी ही।' आदमी नैं नवाई लागी। वो बोल्यौ—'खुराक पे'ली कीकर पुगाई? अर कदै पुगाई? म्हैं तो नीं देखी।' लुगाई उणनैं समझावती थकी बोली—आंपणै अठी होय नैं जितरा बटाउड़ा निकलै, म्हैं उणांरी पूरी खातरी राखूं। घर में जेड़ी जवजुआर री ऊकलै, वांनैं खवाय नैं मेलूं। इण वास्तै म्हनैं पूरी खात्री ही के थांनै कठैई कोथली खोलवा रो कांम इज नीं पड़ै। आंपणी रोटी आगै त्यार लाधी।

जिकौ मिनख रात दिन दांन देवै, उणनैं दांन दियां वगर चैन इज नीं पड़ै। उणनैं आणंदइज नीं आवै। इसौ मिनख जद दूजां नैं भूखा-तिरसा के दुखी देखै तो पोतै पण दुखी ह्वै जावै। पोतै पण भूखौ तिरसौ रैवै। अर जठा तांई पारकौ दुख नीं मिटै वो दुखी इज रैवै।

महाराजा रंतिदेव पोतारा राजमेल रा आंगणा में बैठिया हा। अड़तालीस दिनां रौ उपवास ह्वैतां छतांई भूख तिरस वांरै नैड़ी ई कोयनीं ही। दिन रात अलेखूं जीवां नैं भूखा तिरसा देखनैं वांरौ जीव हरदम दुखी रैवतौ। वांरै मन में हर वखत एक इज अंतर्नाद गूंजतौ के इण सगला निरदोस प्रांणियां नैं बचावण खातर म्हनैं कांई करणौ चाहिजै। इतरा में महामंत्री उठै आयौ। वो बोल्यौ—'महाराज, आज आपकै उपवास रा अड़तालीस दिन पूरा ह्वैग्या। दिन-दिन आपकौ जीवण सगती क्षीण ह्वैरी है। इतरौ ह्वैतां छतां ई आप कितरी चिंता करौ हो? महाराज, आपरी तपसा अनोखी है।' रंतिदेव धीरेसीक बोल्या—मंत्री जी, म्हनैं कांई करणौ है सो बोलौ! पूरा राज में हालत खराब ह्वैरी है, उणसूं म्हूं घणौ दुखी हूं। इण में सूं छूटवा रौ म्हनैं कोई रस्तौ इज निजर नीं आवै।' महामंत्री बोल्यौ—महाराज, दुस्काल सूं प्रजा नैं बचावण खातर आप कांई नीं कीनौ? राज भंडार उघाड़ौ नांख दीनौ, राज मैं 'ल री सगली संपदा बांट दीनी! अर इतरौ कीनौ पछै ई आप अड़तालीस दिनां सूं भूखा हो। मिनख पोता रै पांण जितरौ कर सकै, उतरौ तो आप कर छूटा। पण अबै ······!' इतरा में राजमैंल रै बारै हाकौ-हूबौ सुणी जै। जय हो महाराज रंतिदेव री जय हो! महाराज उपवास छोड़ा वौ अर पारणौ करावौ! लाखां मरौ पण लाखां नैं पालण वालौ मत मरौ! महामंत्री राजा नैं कह्यौ—'महाराज, आप

प्रजा री पुकार सांभली ? प्रजा री पुकार नैं प्रजापालक राजा कीकर ठुकराय सकै ? महाराज अबै तो आप नैं पारणौ करणौ इज पड़ैला ।' महाराजा रंतिदेव सरलता सूं बोल्या—'महामंत्री जी, प्रजा रौ म्हारै माथै इतरौ प्रेम है सो म्हूं भागसाली हूं । पण जिण वखत अलेखूं जीव भूखां मरता ह्वै, उण वखत म्हूं मूंडा में कवौ कीकर घाल सकूं । महामंत्री बोल्यौ—'महाराज, आप कोई प्रजा रै मूंडा में सूं तो ग्रास लेवता कोयनीं । आप इतरा दिन अन्नजल रौ त्याग कीनौ, वो किणरै कारण ? प्रजा रै कारण इज तो ! आप रौ मोटौ त्याग देखनैं राज रा एलकार अर सगलीं प्रजा आप नैं विणंती करै है । इण वास्तै अबै तो आपकै वास्तै नीं पण प्रजा कै वास्तै आपनैं पारणौ करणौ पड़ैला । आपकै सरीर री हालत देखनैं प्रजा आरतनाद करै है । वा आपनैं सांभलणी इज पड़ैला ।' रंतिदेव पोता रै मन रा दुख नैं दाखवतां कह्यौ —म्हूं सगली वातां समझूं हूं । म्हारी ह्वाली प्रजा रा प्रेम नैं पण समझूं हूं । पण म्हारा राज में जठा सूंधी अनाज रा एक-एक दांणा वास्तै कंवला टाबरिया मरता ह्वै, धांनरा एक-एक कवा वास्तै के पांणी रा एक-एक घूंटिया वास्तै मिनख मिनखपणौ भूल जावता ह्वै । उठा तांई आपकौ रंतिदेव राजमैंल रा एक खूंणा में जाय नैं कीकर जीम सकै ? महामात्य ! भूख अर तिरस सगलां नैं एक सरीखी लागै । इण वास्तै प्रजा की जिंदगी करतां रंतिदेव पोतारी जिंदगी नैं मूंघी गिणै, आ वात कदै ई नी ह्वै सकै ।' उणीज वखत प्रजा री आवाज फेरुं सुणी जी, महामंत्री विणती करतौ बोल्यौ—'सांभ लौ महाराज, प्रजा री आ करुण पुकार सांमलौ ! आ सगली प्रजा म्हारैं कनैं जवाब मांगैला । म्हूंपण लोकमत री अवगणना कीकर कर सकूंला । इण वास्तै प्रजानैं संतोक देवणरी किरपा करौ महाराज !' रंतिदेव चिंता में गरक ह्वियौड़ा बोल्या—'महामंत्री ! कांई म्हनैं प्रजा री इच्छा माफक उपवास तोड़णौ इज पड़ैला ? म्हूं विचार करूं हूं के कठैई प्रजा री इच्छा प्रमाणै चालवासूं म्हारै हिया री निवकाई म्हनैं मोह रूपी, अंधकार में तो नीं नांख देवै ? जीवण रौ पंथ तलवार री धार जिसौ है । इण सरीर रा मोह में पड़नैं म्हूं ईस्वर रा मारग सूं तो नीं चूक जाऊं ।' महामंत्री तुरत कह्यौ—महाराज ! आपनैं ईस्वर रा मारग सूं डिगावां जितरी ताकत म्हां पापियौ में कठै ? म्है तो आपकी तपसा अर दांन विरती री दरसण करनैं धिन ह्वै ग्या ।' आ वात सुण नैं रंतिदेव बोल्या—'तो

म्हूं आज उपवास छोडूं हूं, महामंत्री जी ! म्हूं आज पारणौ करूंला। म्हारी साधारण सूं साधारण प्रजा नैं जितरौ मिल सकै म्हूं उतरौ इज अन्न लेवूंला।' महामंत्री कह्यौ, 'आपरी कृपा महाराज ! म्हैं आप रै वास्तै काची-पाकी रोटी अर जल त्यार राख्यौ है। आपरी प्रजा खातर आप पारणौ करो। आप रौ तप यावच्चंद्रदिवाकरौ तपैला।

महामंत्री लूखी रोटी अर जल महाराज रै सांम्ही धरै। रोटी रौ टुकड़ौ तोड़तां महाराजा रौ हाथ धूजै। कनैं बैठा मंत्री चिंता में गरक ह्वियोड़ा राजा रा मूंडा कांनी देखै। वे मन में विचार करै—इण दुनिया में भूतकाल में अर वर्तमांन काल में इसा परदुख-भंजण राजा कितराक ह्विया ह्वैला ? महामंत्री राजा नैं कांई कैवण रौ विचार करै के इतरा में थग-थग करती एक लुगाई आवै। उणरै मूंडा में सूं सबद निकलै—महा... राजा... बापजी....! इण लुगाई नैं देखनैं महामंत्री धूजण लागै। वो उणनैं हाथ सूं सांनी करनैं जावण रौ कैवै। लुगाई पाछौ जावण रौ मतौ करै। इणीज वखत मूंडा कांनी जावतौ रंतिदेवरौ हाथ रुक जावै। वो लुगाई नैं जावती नैं रोकै अर पूछै—'बोल बांई, थूं कीकर आई ? अर आई तो म्हारा आंगणा सूं पाछी क्यूं वली ? वा लुगाई बोली— महाराज, म्हनैं माफ करौ, म्हूं आ जाणूं हूं के आप अड़तालीस दिन रौ उपवास कियां उपरांत प्रजा री अरज मांन नैं आज पारणौ करण नैं बिराज्या हो। पण राजन्......!' इतरौ बोलनैं वा लुगाई अटकगी। राजा बोल्यौ—काली थूं अटकी क्यूं ? थारै कैवणौ ह्वै जिकौ कैयदे। ओ अन्न जल तो फगत म्हारा पंड नैं सांति देवैला, पण थारौ आरतनाद सुणनैं म्हारै हिरदारी सांति मिट जावैला। पंड री सांति करतां हिरदारी सांति घणी कीमती ह्वै।' लुगाई बोली—'महाराज, फगत म्हारी भूख रौ इज सवाल ह्वैतो म्हूं अठा सूंधी नीं आवती पण म्हारौ मा रो हिवड़ौ आज म्हारै काबू में नीं रह्यौ। म्हारै कालजा री कोर म्हारौ लाड़कड़ौ बेटौ म्हारी आंख्यां सांम्ही भूखां मरतौ मरै आ म्हूं नीं देख सकी महाराज।' रंतिदेव राजी होयनैं बोल्या, 'काली, म्हारा इसा भाग के थारै हिरदा में म्हारै वास्तै इतरी सिरधा जनमी। म्हूं थारी सिरधानैं नीं डिगण देवूं। आ रोटी लेयनैं जा अर थारा निरदोष बालकिया नैं खवड़ाव ! थारी कलकलती आंतरड़ियां ठरवादै, म्हारी बैंन !' राजा वा लूखी रोटी उण लुगाई नैं देय दी। लुगाई धूजता हाथां वा रोटी लेयनैं पाछी वली। सिरधा सूं

महामंत्री बोल्यौ—महाराज, आप धिन्न हो। आपरी आ मंगलकारी सुभ निजर देखनैं इज म्हूं निहाल ह्वै ग्यौ।' रंतिदेव कह्यौ—'महामंत्री, प्रजा री मनवार सूं इज म्हैं पारणौ करण रौ विचार कियौ हो पण जठा तांई प्रजा रो एक बालक ई भूखौ पड्यौ ह्वै म्हारै गलै अन्न कीकर उतरै ?' महामंत्री गंभीर होयनैं बोल्यौ—महाराज ! इतरा लांबा उपवास पछैई आपरै गलै अन्न नीं उतर सक्यौ। अबै आप म्हारी विणती सुणनैं पांणी रा घूंटिया सूं पारणौ करावौ। देही रैं ज्यूं देह रौपण धर्म ह्वै। सरीर बिना सरीरधारी कीकर टिक सकै ? महाराज, सरीर रा धर्म री पालणा करणीज पड़ै।' रंतिदेव बोल्या—भाई, थांरा सगलां रा संतोक खातर म्हूं पांणी रो घूंटियौ भरनैं पारणौ करूं हूं।' रंतिदेव प्यालौ हाथ में लेय नैं मूंडा रै अड़ावणी इज चावै के इतरा में एक चंडाल थग-थग करतौ उठै आय उभौ ह्वै। चंडाल बोल्यौ—'महाराज, म्हूं कोई आधार नीं होवण सूं आपरै कनैं आयौ हूं। सगली प्रजानैं वैराजी करनैं म्हूं आप तांई पूगौ हूं। म्हूं आई जांणू हूं के इण वैराजी पणा री कांई फल मिलैला, पण म्हूं कांई करूं....!' इतरौ बोलनैं वो अटक जावै। उणरै आंख्यां में सूं गंगा-जमना वैवण लाग जावै। वो लकड़ी रा टेवका सूं पाछौ बलवा लागै। रंतिदेव उणनैं उभौ रैवण रौ इसारौ करै अर कैवै— उभौ रै भाई, उभौ रै ! म्हूं थारा अंतर में जगती दुख री ज्वाला देख सकूं हूं। ए आंख्यां हिवड़ा रौ दरपण है। इण वास्तै थारौ दुख-दरद म्हनैं साफ दीसै।' आ सांभलतां पांण चंडाल हुचकौ भरीज नैं रोवण लाग्यौ। राजा रा पगां में पड़नैं बोल्यौ—'महाराज ! म्हूं पोतानैं रोक नीं सक्यौ। इण वास्तै इज अठै आयौ हूं। इण जिंदगी में म्हैं कोई बीजी खेवना राखीज नीं। नैनौ थकौ हो जरै एक कूकरियौ पालियौ हो। वो कूतरौ आज दिन तांई दुख-सुख में म्हारै सागै है। केड़ीई आफत पड़ी पण कूतरै म्हनैं खोलियौ कोयनीं। पण आज च्यार दिनां सूं उणरै मूंडा में पांणी री एक छांट ई नीं पड़ी। म्हारी झूंपड़ी रा बारणा आगै वो पड़ियौ तड़फड़ै है। उणरौ साद पण बैठग्यौ है। उणरी पीड़ा म्हारा सूं देखांणी कोयनीं। इण वास्तै म्हूं अंदाता रै सांम्ही हाजर ह्वियौ हूं।' रंतिदेव उणनैं दिलासा देवतां कह्यौ—भाई ! थूं रोव मती। मांनव कुल रौ कल्यांण ह्वैजौ ! म्हनैं आज मांनव हिरदा में करुणा रा दरसण ह्विया है। भाई, लेजा ओ पांणी ! थारा कूतरा नैं ओ पांणी पाव, जिण सूं उणरी तरफड़ती आत्मा नैं सांति

मिलैला। थूं विस्वास राखजै के प्रजा री रोस थारी कोई विगाड़ नीं करै।' आ कैयनैं राजा रंतिदेव वो पांणी री प्यालौ उण चंडाल नैं सूंप दियौ। चंडाल सिरधा सूं माथौ झुकायनैं उठा सूं रवांनैं व्हियौ। महाराज री करुणा सूं मरियौड़ी आंख्यां चंडाल रा पगां कांनी इज लाग्यौड़ी रही। महामंत्री राजा री करुणा सूं पूर्ण आंख्यां देखनैं कह्यौ – महाराज! पुण्यनिधि धिन्न है! आज रौ ओ धिन्न अवसर म्हूं ताजिंदगी नीं भूल सकूं। मांनखा जूंण में आवण वाली भयानक अवखाईयां मांनखा नैं मिनख पणा सूं चलायमांन कर नांखै पण ए अवखाईयां इज मांनखा रै मन री फूटराई रा पण दरसण करावै। आपरा पुन्न-परताप सूं म्हूं उण फुटरापा रा दरसण करनै कृतार्थ व्हियौ।' रंतिदेव नम्रता सूं बोल्या—महामंत्री जी; आपरौ कैवणौ सही है। आप सगलां नैं म्हूं आज मोटौ मिनख दीसूं हूं। पण हिरदा री विसालता अर मन रौ फूटरापौ तो भगवांन सगलां नैं एक सरीखौ इज सूंप्यौ है। उणनैं संकुचित करणौ के उणरौ विकास करणौ ओ मांनखा रै हाथ री बात है। इण वास्तै कोई मिनख रंतिदेव सूं कमती नीं है। प्रजा नैं म्हारौ इतरौ संदेसौ पुगाय दीजौ के म्हारी अंध सिरधा में आपनैं कोई इण दोनूं मिनखां नैं किण भांत री इजा नीं देवै।' महामंत्री महाराज रा दरसण करनैं रवांनैं होवै। रंतिदेव री विसाल आतमा में जनता रौ ओ दुख देखनैं 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' री भावना निजर आवै।

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम्।'
कामये दुःख तप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

म्हनैं नीं राजपाट चाहिजै, नीं सुरग री फूटरापौ चाहिजै, अर नीं मोक्ष चाहिजै, म्हूं तो फगत दुखी प्राणियां री दुख मिटावणी चावूं।

ओ है एक मोटा दांनी रै दरिया समांन दिल रौ एक दाखलौ। इतरा मोटा मन वालौ मिनख संसार रा सगला प्राणियां नैं पोतारा नीं वणाय सकै? उण सूं विस्वबंधुत्व आगौ रैय सकै? जिण वखत मन रूपी दरिया में दांन री लेहरां उछलवा ढूकै, उण वखत मांनखौ पर दुख काटणार वणै। दांन में चढ़ाव उतार आवै अर दांन में पगौथिया पण व्है। मानखा रै मन री उदारता रौ माप दांन सूं निकल सकै।

कई जणा दांन देवै खरी पण पोतारी मरजी सूं नीं देवै। इसा मिनख सरमसूं, लाचारीसूं के दवांण सूं दांन दैवै। वो दांन हाथ सूं

जरूर दिरीजै पण मन सूं नीं। इण दुनिया में इसा मिनखां री ई तोटौ कोयनीं के जिकौ कंजूसाई अर मन री ओछाई में सगलां सूं आगै रैवै।

कई जणा राजी खुसी सूं दांन देवै। वांरै मनमें सच्चाई पण ह्वै। पण उणांरौ दांन गरीव गुरवा री जरूरत प्रमांणै नीं ह्वै तौ गरीबां नैं जरूरतां मोकली ह्वै अर ओ सुभाविक पण है। वांरी जरूरतां दांन सूं पूरी नीं ह्वै।

तीजी भांत रा मिनख इसा है के जिकौ पूरा मन सूं दांन देवै। राजी खुसी सूं दूजां री मदद करै। इसा दांन सूं सांमला मिनख री जरूरत पूरी ह्वै। आ वात जरूर है के इसा दांनियां में थोड़ौ अहंभाव ह्वै। वे विना मांग्यां कोई नैं दांन नीं देवै।

चौथी तरै रा मिनख इसा ह्वै के जिकौ पोतारी खुसी सूं दांन देवै। वे सांमला मिनख री जरूरत करतांई वत्तौ दांन देवण री मंसा राखै। वे मांगियां पे'लीज देय देवै। पण इसा मिनख दांन दुनिया रै सांमनै देवणौ चावै। दांन लेवणिया कई इसा पण ह्वै के जिकौ दांन लेवता संकीजै। अर विरती पण चोखी कोयनीं। इण में ई अहंभाव रौ पुट निजर आवै।

पांचमी भांत रा दांनी इसा ह्वै के जिकौ पोतारी राजी खुसी सूं मांनखा नैं वांरी जरूरत माफक विना मांग्यां एकांत में दांन देवै। इण दांन री खवर लेवण वाला नैं के देवण वाला नैं इज पड़ै। कोई तीजा मिनख नैं इणरी गंध पण नीं पड़ै।

छट्टी तरै रा इसा पण दांनी ह्वै के जिकौ गुप्त दांन देवणौ चावै। वे पोतारा धनरौ उपयोग इण भांत कर के उणरी खवर वांनैं पोतानै इज रैवै। दांन लेवणिया नैं उणरी कोई खवर नीं रैवै। उण दांन री कोई जाहेरात नीं करै। दांन लेवणिया नैं पण कोई भांत रौ संकोच नीं रैवै। दुखी मिनख नैं अठी उठी रखड़णौ पण नीं पड़ै। दांन लेवणिया नैं दातार रौ उपकार पण नीं मानणौ पड़ै। इण भांत ए गुप्त दांनी घणा मोटा मन वाला मिनख ह्वै।

सातमी भांतरा मिनखां रा मन इतरा मोटा ह्वै के उणमें लेवण वालां नैं अर देवण वालां नैं किणनैंई ठा नीं पड़ै। संस्थाआं री पेटी में दांन नांखण वाला नैं इण वात री कोई जांण नीं रैवै के इण दांन रौ

मिलैला। थूं विस्वास राखजै के प्रजा रौ रोस थारौ कोई बिगाड़ नीं करै।' आ कैयनैं राजा रंतिदेव वो पांणी री प्यालौ उण चंडाल नैं सूंप दियौ। चंडाल सिरधा सूं माथौ झुकायनैं उठा सूं रवांनैं व्हियौ। महाराज री करुणा सूं मरियौड़ी आंख्यां चंडाल रा पगां कांनी इज लाग्यौड़ी रही। महामंत्री राजा री करुणा सूं पूर्ण आंख्यां देखनैं कह्यौ – महाराज ! पुण्यनिधि धिन्न है ! आज रौ ओ धिन्न अवसर म्हूं ताजिंदगी नीं भूल सकूं। मांनखा जूंण में आवण वाली भयानक अव खाईयां मांनखा नैं मिनख पणा सूं चलायमांन कर नांखै पण ए अव खाईयां इज मांनखा रै मन री फूटराई रा पण दरसण करावै। आपरा पुन्न-परताप सूं म्हूं उण फुटरापा रा दरसण करनैं कृतार्थ व्हियौ।' रंतिदेव नम्रता सूं बोल्या—महामंत्री जी; आपरौ कैवणौ सही है। आप सगलां नैं म्हूं आज मोटौ मिनख दीसूं हूं। पण हिरदा री विसालता अर मन रौ फूटरापौ तो भगवांन सगलां नैं एक सरीखौ इज सूंप्यौ है। उणनैं संकुचित करणौ के उणरौ विकास करणौ ओ मांनखा रै हाथ री वात है। इण वास्तै कोई मिनख रंतिदेव सूं कमती नीं है। प्रजा नैं म्हारौ इतरौ संदेसौ पुगाय दीजौ के म्हारी अंध सिरधा में आपनैं कोई इण दोनूं मिनखां नैं किण भांत री इजा नीं देवै।' महामंत्री महाराज रा दरसण करनैं रवांनैं होवै। रंतिदेव री विसाल आत्मा में जनता रौ ओ दुख देखनैं 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' री भावना निजर आवै।

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम्।'
कामये दुःख तप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

म्हनैं नीं राजपाट चाहिजै, नीं सुरग रौ फूटरापौ चाहिजै, अर नीं मोक्ष चाहिजै, म्हूं तो फगत दुखी प्राणियां रौ दुख मिटावणौ चावूं।

ओ है एक मोटा दांनी रै दरिया समांन दिल रौ एक दाखलौ। इतरा मोटा मन वालौ मिनख संसार रा सगला प्राणियां नैं पोतारा नीं वणाय सकै ? उण सूं विस्ववंधुत्व आगौ रैय सकै ? जिण वखत मन रूपी दरिया में दांन री लेहरां उछलवा ढूकै, उण वखत मांनखौ पर दुख काटणार बणै। दांन में चढ़ाव उतार आवै अर दांन में पगौथिया पण व्है। मानखा रै मन री उदारता रौ माप दांन सूं निकल सकै।

कई जणा दांन देवै खरौ पण पोतारी मरजी सूं नीं देवै। इसा मिनख सरमसूं, लाचारीसूं के दवांण सूं दांन दैवै। वो दांन हाथ सूं

जरूर दिरीजै पण मन सूं नीं। इण दुनिया में इसा मिनखां री ई तोटौ कोयनीं के जिकौ कंजूसाई अर मन री ओछाई में सगलां सूं आगै रैवै।

कई जणा राजी खुसी सूं दांन देवै। वांरै मनमें सच्चाई पण ह्वै। पण उणांरौ दांन गरीव गुरवा री जरूरत प्रमांणै नीं ह्वै तौ गरीवां नैं जरूरतां मोकली ह्वै अर ओ सुभाविक पण है। वांरी जरूरतां दांन सूं पूरी नीं ह्वै।

तीजी भांत रा मिनख इसा है के जिकौ पूरा मन सूं दांन देवै। राजी खुसी सूं दूजां री मदद करै। इसा दांन सूं सांमला मिनख री जरूरत पूरी ह्वै। आ वात जरूर है के इसा दांनियां में थोड़ौ अहंभाव ह्वै। वे विना मांग्यां कोई नैं दांन नीं देवै।

चौथी तरै रा मिनख इसा ह्वै के जिकौ पोतारी खुसी सूं दांन देवै। वे सांमला मिनख री जरूरत करतांई वत्तौ दांन देवण री मंसा राखै। वे मांगियां पे'लीज देय देवै। पण इसा मिनख दांन दुनिया रै सांमनै देवणौ चावै। दांन लेवणिया कई इसा पण ह्वै के जिकौ दांन लेवता संकीजै। अर विरती पण चोखी कोयनीं। इण में ईं अहंभाव रौ पुट निजर आवै।

पांचमी भांत रा दांनी इसा ह्वै के जिकौ पोतारी राजी खुसी सूं मांनखा नैं वांरी जरूरत माफक विना मांग्यां एकांत में दांन देवै। इण दांन री खवर लेवण वाला नैं के देवण वाला नैं इज पड़ै। कोई तीजा मिनख नैं इणरी गंध पण नीं पड़ै।

छट्टी तरै रा इसा पण दांनी ह्वै के जिकौ गुप्त दांन देवणौ चावै। वे पोतारा धनरौ उपयोग इण भांत कर के उणरी खवर वांनैं पोतानै इज रैवै। दांन लेवणिया नैं उणरी कौई खवर नीं रैवै। उण दांन री कोई जाहेरात नीं करै। दांन लेवणिया नैं पण कोई भांत रौ संकोच नीं रैवै। दुखी मिनख नैं अठी उठी रखड़णौ पण नीं पड़ै। दांन लेवणिया नैं दातार रौ उपकार पण नीं मानणौ पड़ै। इण भांत ए गुप्त दांनी घणा मोटा मन वाला मिनख ह्वै।

सातमी भांतरा मिनखां रा मन इतरा मोटा ह्वै के उणमें लेवण वालां नैं अर देवण वालां नैं किणनैंई ठा नीं पड़ै। संस्थाआं री पेटी में दांन नांखण वाला नैं इण बात री कोई जांण नीं रैवै के इण दांन रौ

फायदो किणनैं मिलैला ? दांन लेवण वाला नैं पण इण वात री कोई वेरौ नीं रैवै के दांन देवणियौ कुण है ?

आठमी तरै रा दांनी सगलां सूं ऊंचा व्है। नीं तो कोई रै माथै उपकार जतावणौ चावै अर नीं वांरी निजरां में कोई छोटौ-मोटौ व्है। वे तौ दुखी मिनख नैं देखनैं उणरा दुख में सीरु वणै। ओ दांन इतरौ उत्तम तरै री है के आगला नैं आखी उमर कठैई माँगवा नैं नीं जावणौ पड़ै। सांमला रौ दालदर ताजिंदगी मिट जावै।

इण भांत दांन री भावना रंतिदेव जिसा महापुरखां रै मन में प्रगटै। इण सूं संसार री फूटरापौ फैलै। पछै तो दुनिया में मांनखां नैं दुखरी जांणाई नीं पड़ै।

म्हूं आपनैं कैवतौ हौ के जे दांन री आ उत्तम भावना आंपणै जीवण में प्रगटै तो आंपणौ जीवण सुखी वण जावै। सगला जीवां सागै आपणौ अपणात पणौ बंध जावै। आंपणा जीवण में मोकली आत्मसुद्धि आय जावै।



१४

परोपकार रौ इमरत

इण भूमंडल माथै अनंत काल सूं अलेखां जीव जनम लेवता आया अर मरता आया। जनम-मरण रो ओ चक्कर आगैं पण अनंत काल तांई चालतो रैवैला। इणरौ कोई छेवाड़ौ कोयनीं। सगली चेतन जगत जनम मरण रा हिंडौला में झूलै है। इण हिंडौला में झूलता जीव वारंवार एक दूजारै संपर्क में आवै। ए जीव कोई वखत मांनखा जूंण में आवै तो कोई वखत जिनावरां री जूंण में आवै। करैई पंखेरू वांरी जूंण में आवै तो कोई वखत वनस्पति, धरती अर जल रूप सूं जनम लेवणौ पड़ै। इण भांत एक इज जीव तरै तरै री जूंण में भटकतां-भटकतां कई वार पाछौ मिनख जमारै में आवै। पण इण सगली जूंणां में भटक्यां पछै पाछौ मांनखा जूंण में आवण रौ भेद कांई है? इण बात रौ आंपां कदैई विचार कियौ है? आंपां ओ पण कदैई भर ऊंघ में ई विचार कियौ है के आंपां नैं मिनख जमारौ मिलियौ कीकर है? आंपां नैं पंछी-पंखेरू के बीजी कोई जीवा जूंण क्यूं नीं मिली। संसार सांम्ही ओ एक सुलगतौ सवाल है जिकौ बारौमास आंटा देवै। आज रा स्वार्थ, कृतघ्नी पापी मिनख कनैं इणरौ कोई पड़ुत्तर कोयनीं। आंपां इण बात माथै जे ऊंडौ विचार करां तो आंपां नैं इणरौ एक इज जवाब मिलैला के 'जिणै मिनख पूरवला भव में कोई पण जूंण में बीजा रौ कोई भलौ कीनौ व्है पर उपकार कीनौ व्है, दूजा रै खातर पोतारौ स्वार्थ छोड़ियौ व्है उण नैं इज इण भव में मांनखा जूंण अर मांनखा सरीर मिलै।

जैन सास्त्र में इण बावत एक सांगोपांग दाखलौ है—

एक जंगी वन हो। उण में कई मोटा-मोटा झाड़ बोंट, वेलड़ियां अर जाडी झाड़ी ही। उण में पूरी सूंन्याड़ होवण सूं मोकला जिनावरां री उठै ने कम बासौ हो। नाहर सूं लगाय नें हिरण तांई सगली तरै रा हिंसक अर अहिंसक जिनावर उठै मौजूद हा। इण वन में हाथियां री एक टोली पण रैवती। इण टोला में एक फूटरौ मस्त हाथी पण हो। संजोग इसौ वण्यौ के इण वन में एकर' दव लागग्यौ। दव लागां वन कटी री अर जीवा जूंण री कांई हालत ह्वै, वा आप सूं छांनी कोय नीं। वन, मसांण वण जावै। जीवा जूंण में दौड़ भाग माच जावै। सगलाई पोत पोतारौ जीव लेय नें नाठै। सो दव लागतां इज सगलाई जीव अठी उठी नाठण लाग्या। जिण दिस दव चेत्यौ हो उण सूं उल्टी दिस में सगलाइ जीव जावण लाग्या। वो मस्त हाथी पण सगलां रैई सागै दौड़ण लाग्यौ। नाठतां-नाठतां उणरी निजर एक ठौड़ पड़ी। उठै वनस्पति के झाड झंखाड कांई नीं हा। हाथी विचार कियौ—आ म्हारै वास्तै बचाव री जागा है। बापड़ा वीजा जिनावर पण नाठ नैं आवैला तो वांनै ई आसरौ मिलैला। अठै जिकौ थोड़ी घणी वनस्पति है, म्हूँ उणनैं ई साफ कर नांखूं, जिण सूं दव अठा तांई नीं पूगै। छेवट उणै खासी भली जमीन साफकर नांखी। बीजा जिनावर ई प्राय नैं उठै भेला हुआ। हाथी सबरै विचालै चोखी जागा ढाब नैं उभौ रह्यौ। इण ठौड़ आवण सूं सगलाई जिनावरां रौ बचाव ह्वियौ। सगलाई आपसरी रौ वैर भाव भूलग्या हा। वांरौ सब रौ एक इज धै हो के दव सूं कीकर बचणौ। वा पूरी जमीन जिनावरां सूं खचाखच भरी जगी ही। एक कीड़ी उभी रैवै जितरी ई जागा नीं ही। इतरै तो एक खरगोसियौ उण टोला भेलौ आसरौ लेवण नैं आय पूगौ। खरगोजी डाफा चूक ह्वियौड़ा हा। उणैं देख्यौ के कठैई खाली जागा नीं ही। अबै कांई करणौ ? कठै जावणौ ? वो हाथी उठै घणी ताल सूं उभौ हो। उभां-उभां वो कायौ ह्वियौ सो खाज खिणण खातर एक टांग ऊंची उपाड़ी। खरगो मौकौ देखर' पग री ठौड़ आय नैं वैठग्यौ। उणैं इत रौई विचार नीं कियौ के जे हाथी पग नींचौ मेलियौ तो म्हारी चटणी ह्वै जाएला। भोलौ जीवड़ौ जीव वचावण रा संतोक सागै जमनैं वैठग्यौ। हाथी सरीर खजवालतां-खजवालतां नीचै देख्यौ तो पग रै हेठै खरगौ वैठौ। कठैई पग मेलवा नैं ई जागा कोय ही नीं। अक्कल वांन हाथी मनौ-मन विचार कियौ—जे म्हैं पग नीचै मेलियौ तो इण खरगिया

री गीसौ निकल जाएला। म्हूं थोड़ी ताल तीन पगां माथै ई उभौ रैय सकूं। पण ओ खरगौ बापड़ौ कठै जावैला? हाथी नैं खरगा माथै दया आई अर उणरै मन में परोपकार री भावना जागी। मन में स्वार्थ त्याग री लैरां उठण लागी, अपणात पणा रौ संगीत गूंजण लाग्यौ अर हम-दरदी री सुर लै' रिया बाजण लागी। परोपकार में मस्त व्हियौड़ौ हाथी पोतारौ आपौ भूलग्यौ। घड़ी माथै घड़ी अर पो'र माथै पो'र बीतण लागा। पण हाथी नैं इण बात री भांन इज नी रह्यौ के वो तीन पगां माथै उभौ है। निरोई समय बीतग्यौ। दव हाल आंजमांणां कोय नीं हो। भयानक दव देखनैं चीसां पाड़ता जीव अबै सांयत सूं बैठा हा छेवट उण परोपकारी जीव रौ सरीर अपणात पणा रा प्रवाह में रैवै चीज नैं आत्मा सूं न्यारौ व्हैगौ। हाथी री आत्मा उठा सूं विदाय लेय नैं मांनखा देही धारण कीवी।

आंपणी बात अठै इज पूरी व्है। बात रौ सार ओइज के मिनख जमारा रौ सार परोपकार है।

परोपकार एक अमोलक सद्‌गुण है। मांनखा रौ जीवण परोपकार रा टेकां माथै इज ठैरियौड़ौ है। परोपकार रूपी इमरत मिलियां सूं इज मिनख ओ नासवांन खोलियौ छोड़नैं अजर-अमर बण सकै। मिनख रौ जीवण सौरभ वाला फूल जिसौ होवणौ चाहिजै। जो पोतारौ भोग देयनैं, बीजां नैं सौरभ देवै। बीजां रै खातर पोतानैं होम करणौ, इणरौ नांम इज परोपकार है।

एक गांधीड़ारी दुकांन में गुलाब रा फूल पीसीजता हा। मारग बैवतै एक वटाऊड़ै पूछ्यौ—'अरे फूलां, थे बगीचां में फूल्या हो, थे इसौ कांई कसूर कीनौ है के थांनै इण भांत पीसीजणौ पड़ै है?' फूल बोल्या—म्हांरौ सैसूं मोटौ गुन्हौ ओ है के म्है एकदम फूलीजग्या अर खदखद करनै हंसण लाग्या। म्हांरौ ओ हंसणौ दुनिया नैं सूंवायौ कोयनीं। दुनिया दुखियां नैं देख'र वांनै थावस बंधावै, वां रै सागै अपणात पणौ जतावै। पण सुखियां नै देख'र वांसूं ईसकौ करै। वांरी जड़ां बाढवा री कोसिस राखै।' कई दूजा फूल बोल्या—बीजां खातर मर पूरौ देवणौ, इण में इज जीवण री सार्थकता है। फूल पीसीजता रह्या अर वांरै मांयनैं सूं परोपकार री सौरभ आवती री।

अगरबत्ती पोतै तो बलै अर बीजां नैं सुगंध देवै। इणीज भांत

जिकौ धणी पोतै दुख वैठ नें दूजां नें सुख देवै, वो इज दुनिया में अमर रैवै।

मरना भला है उसका, जो अपने लिये जीये।
जीता है जो मर चुका, इन्सान के लिये।

एक एकांत आश्रम में एक डोकरा मुनि रैवता। वे मोटा तपसी, त्यागी, अर संजमधारी हा। उण वखत एक वृत्तासुर नांम री रागस मिनखां नै खूव हैरांन करतौ हो। पोतारा वल रै मद में वो सगलां नें ई तुच्छ मात्र गिणतौ। वो अेलेखां जुल्म करतौ अर रिसि मुनियां रै तप में पण अंतराय नांखतौ। त्रासियौड़ी प्रजा छेवट इन्द्र नें अरदास कीवी—'वृत्रासुर म्हांरी जड़ां खोद रह्यौ है, इण नें किणी भांत खत्म करनें म्हांनै बचावौ।' इन्द्र रै कनें वैभव री कोई कमी नीं हीं पण आत्म वल रौ घाटौ हो। सो वो रिसियां कनें गयौ अर पूछियौ—'भगवांन, इतरी कोसिस करतां छतांई वृत्रासुर मरतौ क्यूं नीं? आंपणै कनें अस्त्र-सस्त्र मोकला है। पण वो दुस्ट आंपणा सगला सस्त्रां नें न कांमा कर नांखै इणरौ कारण कांई! रिसी वोल्यौ—इन्द्र! दुस्मण जो सिर जोर ह्वियौ है, इणरौ ई कोई कारण है, बिना कारण तो सिर जोर नीं ह्वयौ है। आज देवतावां अर मिनखां में सूं स्वार्थ त्याग री भावना खत्म ह्वगी है। त्यागी अर निस्वार्थी मिनख तो आंगलियां माथै गिणै जितरा रह्या है। इसा मिनख जे पोतारी सगती रौ प्रेम सूं संगठन करै तो दुस्मण नें जीतणौ कोई मोटी बात कोयनीं। इन्द्र पूछियौ—'भगवन्! इण सगती नें आंपां किण विध मेल सकां?' रिसी वोल्या—'आप दधिचि रिसि कन्नै जाओ! ओ रिसी त्यागी, तपसी अर दयालु हैं। जे किणी भांत इण रिसि रा हाडका मिल सकै इण हाडकां सूं अस्त्र सस्त्र वणै तो उणरै सांम्ही वृत्रासुर नीं टिक सकै। इन्द्र भौतिक संपत्ति रौ मालिक हो। हाडकां सूं जीत मिल सकै, आ बात उण रै मगज में वैठती नीं ही। उणैं रिसियां नें कह्यौ—'भगवन्! दधिचि तो पतला, थाकोड़ा अर डोकरा आदमी है। उणांरा हाडका कीकर कमां आय सकै? फर म्हूं वांनें जायनें विणती करूं अर वे रीसां वल जावै तो! रिसि बोल्या—वृत्रासुर जिसा पापी रागस भौतिक अस्त्र सस्त्रां सूं कदैई नीं मरै। म्है जांणां हां के आपरौ मत भौतिक अस्त्र सस्त्रां कांनी है। वृत्रासुर रा नास वास्तै तो पुण्यसाली पुरखां रा सस्त्र इज कांम आय सकै। इण रिसि पर उपकार

खातर इज संसार में सरीर धारण कियौ है। वांरी अंतरेच्छा पण आइज है के वांरौ अंत पण जगत रा परोपकार में व्है। आप झट पधारौ। दधिचि रिसि सरीर छोड़ण वाला इज है।' बस अबै कांई कैवणौ बाकी रह्यौ? इन्द्र अर प्रजा जनां सगलां ई जाय नैं दधिचि नैं आ वात कही अर वां सूं हाडकां री मांगणी करी। रिसि बोल्या—'घणा आणंद रा समाचार है। अबै सूंधी म्हनैं यूं लागतौ हो के सरीर कोई रै बिना कांम आयां नस्ट व्है जाएला। पण अबै थांरी बात सुण नैं म्हारै मन में मोटौ हरख उपनियौ। म्हारै सरीर रौ उपयोग इण सूं वधारै कांई व्है सकै? इण दुनिया में सूं जे दांनवता अर आसुरी विरती रौ नास व्हैतौ व्है, तो म्हूं एक वखत कांई हजार वखत ओ सरीर छोड वानैं तैयार हूं।' इन्द्र बोल्यौ—'महाराज! आप रै जिसा पुगता मिनख सूं जुद्ध वास्तै हाडकां री मदद मांगतां म्हनैं सरम आवै पण करणौ कांई? आपरौ सरीर संसार में कायम रैवै, इसी म्हांरी इच्छा है।' पण इन्द्र ना देवै जिण पे'लीज रिसि तो सरीर छोड़ दियौ। वांरा हाडकां सूं इन्द्र सस्त्र त्यार किया। जुद्ध भोम में इण सस्त्रां रै प्रहार सूं वृत्रासुर ठिकाणै पूगग्यौ। संतां अर महात्मा वांरौ जीवण परोपकार वास्तै इज व्है। एक स्लोक में कह्यौ है—

परोपकाराय सतां विभूतयः

इण संसार में पोतारौ पेट पालवा वास्तै तो कूतरा अर मिनका जिसा जीव ई कोसिस करै ए सगला पोतारै वास्तै जीवै। पण जिकौ बीजां वास्तै जीवै, वांरौ जीवण इज सार्थक है। बीजां रौ पेट भरवा वास्तै जिकौ जीवै वांरौ जीवण सफल है। स्कंद पुरांण में इणीज भावार्थ रौ एक स्लोक है—

मुहूर्तमपि जीवेद्धि नरः शुक्लेन कर्मणा।
न कल्पमपि जीवेच्च लोकद्वय विरोधिना॥

एकाध घड़ी जितरौ ई जीवणौ व्है तो ई मिनख नैं चोखा कांम करनैं, जीवणौ चाहिजै। पण मिनखां रौ भूंडौ करनें के पाप करनैं एक कल्प तांई पण नीं जीवणौ चाहिजै।

यूरोप में दरिया कांठै एक नैंनी सीक झूंपड़ी ही। इण झूंपड़ी में एक डोकरी रैवती। डोकरी रौ सरीर गरडौ हो, पण उणरौ हिरदौ परोपकार रा कांम करण वास्तै मोटियार हो। इण डोकरी री झूंपड़ी

परोपकार रौ नमूनौ ही । एक दिन उठै कई वटाऊ सहेल करवा आया । उण वखत बरफ इतरौ पड़ती हो के पूछौ इज मत । डोकरी देख्यौ के सगलाई वटाऊ बरफ अर ठंड रै कारण थर-थर धूजता हा । वांरै कनैं ठंड सूं बचाव करण रौ कोई साधन नी हो । डोकरी नैं वांरै मांथै दया आई । उणैं धकली वात रौ कोई विचार कियां बिना पोतारी झूंपड़ी विखौरी अर उणरै लकड़ां रौ तप कियौ । ठाड़ में धूजता वटाऊ बचग्या । डोकरी री झूंपड़ी अगरबत्ती री गलाई सुलगाती ही, पण उण में सूं सौरभ आवती ही ।

आज रौ स्वार्थी मांनखौ का तो पोतारै सरीर रौ पोसण करण में लागौड़ौ है नैं का पारकां रौ सोसण करण में लागौड़ौ है । पण आ डोकरी तो पारकां रै सरीर रा पोसण नैं इज पोतारै सरीर रौ पोसण मांनती ही । मांनखा रा हिरदा में जिण वखत परोपकार रौ इमरत उतर जावै उण वखत उणनैं पारकारा सुख में पोतारौ सुख दीसै अर दूजां रा पोसण में पोतारौ पोसण दीसै । पद्मपुरांण में ठीक इज कह्यौ है—

मनसो यत्सुखं नित्यं स स्वर्गो नरकोपमः ।
तस्मात् परसुखेनैव साधवः सुखिनः सदा ।।

परोपकारी विरती वाला मिनख नैं उठै सुरग व्है तोई नरक निजर आवै, जठै फगत स्वार्थरीज भावना व्है । इण वास्तै परोपकारी गृहस्थ बीजांरा सुख में इज पोतारौ सुखमांनै । इसा मिनख कांम पड्यां दूजांरै वास्तै जीवपण देवणनैं त्यार रैवै । परोपकार करण सूं वांनै जिकौ आणंद मिलै वो अंगत उपभोग में नी मिलै । घोड़ा रौ पूंछ जचै जितरौई लांबौ व्हो, पण उणसूं वो फगत पोतारैं पंड माथै बैठ्या माखी-माछर इज उडा सकै । इण वास्तै लांबा पूंछरी कोई खास कीमत कोयनीं । पण गाय रा हांचल नैंना व्हैतां थकांई परोपकारी व्है । उणां सूं दूध पीयनैं मांनखौ बलवांन बणै । इण वास्तै वांरौ मान पण घणौ है ।

प्रकृति कांनी निजर नांखौ तो च्यांरूं मेर परोपकार रा इज दरसण व्है । सूरज, चंद्रमा, नदी पर्वत बादला, रूंख, सरोवर, पवन पांणी अर तावड़ौ, ए सगलाई परोपकार में इज लवलीन व्हियौड़ा है । सूरज पोतारै उजास रौ पोतै भोगनीं करै पण दूजां नैं देवै । चंदरमा संसार रीं भलाई खातर इज ठाडी चांदणी रेलै । खलखलाट करतौ नदियां

अर झरणां रौ पांणी पण दूजां रै वास्तै इज व्है। रूंखां रा फल फूल अर वनस्पति पण दुजांरै वास्तै इज व्है। बादला संसार वास्तै इज बरसै। पवन जगत रा कल्यांण खातर इज वैवैं अर अग्नि पण दुनियारा पोषण वास्तै इज प्रज्वलै। प्रकृति री आ परोपकारी विरती देखनैं कांई आंपां कैय सकां के मिनख सगलाई जीवां में स्रेस्ठ है? एक कवि ठीक कह्यौ है—

'परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहंति गावः परोपकाराय इदं शरीरम् ॥'

परोपकार वास्तै झाड़ फल देवै अर नदियां बैवै नैं गायां दूध देवै। ओ सरीर परोपकार वास्तै इज है।

इण संसार में जिणनैं मांनव जनम मिलियौ है, जिण नैं मांनखा देही रूपी सगलां सूं सिरै साधन मिलियौ है। मन, वचन धन अर बीजा साधन पण मिलिया है। इणरी जे सार्थकता करणी व्है तो परोपकार इज एक मात्र साधन है। जिणनैं मोक्ष में जावणरी खरीखर इच्छा व्है, उणनैं पोतारै सरीर, मन, वांणी, बुद्धि अर सांसारिक वस्तुआं पर सूं मोह छोड़नैं स्वत्व रौ विसर्जन करनैं बहुजन हिताय बहुजन सुखाय बण जावणौ चाहिजै। इसी परोपकारी विरतो वाला मिनख कै वास्तै संसार में कोई पारकौ रैवै इज नीं। सगलौ संसार उणरौ पोता रौ बण जावै अर वो पोतै सगलां संसार कौ बण जावै। तीनूं लोकां में इसा मिनख कै वास्तै कोई चीज दुर्लभ नीं रैवै। संत तुलसीदासजी इण भावार्थ में इज लिख्यौ है—

परहित बस जिनके मनमांहि।
तिन कहं जग दुर्लभ कछु नांहि।

परोपकार में बस साची मांनवता अर साचौ मिनख पणौ है। परोपकार विनांस मिनखरी कल्पना करणी मांनखा जूंण रौ अपमांन करणौ है। संस्कृतरा पंडितां इण वास्तै इज 'परोपकारो ही मनुष्यत्वम्' री बात कही है। जिण मिनख में परोपकारी विरती नीं व्है उणनैं मांनखा जूंण में गिणणौई वृथा है।

खरीखर जिकौ आणंद परोपकार में, है वो दूजी कोई ठौड़ कोयनीं। एक अंग्रेज विद्वांन कह्यौ है—

The luxury of doing good surposses every other enjoy menit.

वीजां री भलौ करण सूं जिकौ आणंद मिलै वो सगलां सूं सिरै है।

जे हिरदा में कांखी फैरनैं ऊंडौ विचार कियौ जावै तो सूरज रा उजास री गलाई साफ समझ में आय जावैला के परोपकार है। जिकौ मिनख परोपकार करै वो पोता रै हिरदा में भागौड़ी कांटी वारै नांखै। जे पोतारी आत्मा री कल्यांण करणौ व्है तो परोपकार वालौ मार्ग पकड़णौ इज पड़ै। परोपकार करणौ कोई रै माथै ऐहसांन नीं है। ओ तो पोतारी आत्मा रौ इज विकास है। जो परोपकार वालौ मार्ग नीं पकड़ी जै तो मिनख री उदारता, हिरदारी विसालता अर हिरदै कमल री पांखड़ियां री विकास भवैई नीं व्है सकै। इण भांत जिकौ धणी पोतारी आत्मा अहं भाव रा अर अभिमांन नैं जड़ा मूल सूं उखैलणौ चावै उणरै मूंडासूं म्हूं, म्हैं, म्हारी विगैरै सवद नीं निकलणा चाहिजै। इसा मिनख नैं तो परोपकार नैं इज पोतारौ स्वार्थ मांननैं चालणौ चाहिजै। उण वखत उणरौ स्वार्थ के स्व उपकार इज इतरी विसालता धारण करै के उणरौ आपौ सगला संसार में फैल जावै। उण में पछै कोई परत्व नांमरी चीज रै वै इज कोयनीं। तत्वज्ञानियां इण वास्तै इज सारतत्व री तारवणी कीनीं है—He that does good to another does good to himself. जिकौ वीजांरौ भलौ करै, वो उणरो पोतारौ इज भलौ है।

इण संसार रा वाड़िया में च्यार भांत मिनख रै वै। पणवांरै सुभाव में घणौ फर्क व्है। च्यारूं भांत रा मिनख इज व्है पण इणां रा सुभाव में रात दिन रौ फर्क व्है वांरै हिरदा री उदारता अर कंजूसाई में पण फर्क व्है। वांरै मनरी ऊंचाई-निचाई में पण फर्क व्है। राज जोगी महात्मा भृर्तहरि मर्मवेधी वांणी मे कह्यौ है—

> 'एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये,
> सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये।
> तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये,
> ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे।।

इण संसार रा वाड़िया में कई क इसा विरला पाकै के स्वार्थ वांरै आगौ-नेड़ौई नीं रैवै। इसा मिनख पोता रै खावा-पीवारी के गामा छोंतरा री कोई चिंता नीं करै। वे पोता रै पंड री ई ध्यांन नी राखै। इसा सतपुरख दूजां खातर जीव देवण नैं त्यार रैवै। वे हरदम परोपकार में लाग्यौड़ा रैवै। ए महापुरख उत्तम प्रकार रा ह्वै। इसा मिनख तीर्थंकर, पैगंबर, महापुरख अर रिसि मुनि वाजै। कई इसा मिनख ह्वै के जिकौ दूजाँ कनां सूं मांमूली लेवै अर दूजां नैं घणा सूं घणौ देवण री नीत राखै। वांरी विरती इज परोपकार री ह्वै। इसा मिनख वीचली रास रा ह्वै। वांरी निजर स्वार्थ अर परमार्थ दोनूं माथै रैवै। तीजी भांत रा मिनख इसा ह्वै जिकौ कोई दिन परोपकार रौ नांम इज नीं लेवै। इसा मिनख फगत पोतारै स्वार्थ रो इज ध्यांन राखै। करैई मौ का माथै वांरै हाथ सूं पण परोपकार ह्वै जावै, पण वा फगत लाचारी ह्वै। वांरै हिरदा में परोपकार री साची भावना नीं ह्वै। इसा मिनखां में स्वार्थ री भावना इज खास ह्वै। परोपकार रौ वे ध्यांन इज नीं राखै। जे करैई भूल सूं परोपकार करै तो वे फगत स्वार्थ खातर, नांम खातर, प्रतिष्ठा खातर, अथवा वाह-वाह खातर। स्वार्थ निकलियां पछै इसा मिनख परोपकार रौ नांम इज नीं लेवै। चौथी तरै रा मिनख इसा ह्वै जिकौ नीं तो पोतारौ स्वार्थ कर सकै अर नीं पारकां रौ परमार्थ कर सकै। इसा मिनखां रौ पोतारौ स्वार्थ नीं सधै तो दूजां रा परमार्थ में ई घोचौ घालै। इण मिनखां में विचार करै जिसी बुद्धि इज नीं ह्वै। पोतै खाए नीं सकै तो दूजा कना सूं पण ढोलावा री नीत राखै। भृर्तहरि कह्यौ है के 'इसा मिनखां नैं किण नांम सूं वतलावणा, एहड़ां नैं कांई पदवी देवणी, कांई जांण इज नीं पड़ै।'

खरौखर ऊपरला भावार्थ में मांनखा रै मन रौ भीणौ विस्लैसण हुवौ है। अवै आंपणै पूरौ-पूरौ विचार करनैं इण च्यार भांत में सूं एक भांत पसंद करणी है। म्हनै विस्वास है के आप उत्तम भांत इज पसंद करौला। आप उत्तम मिनख वणण वास्तै कोसिस पण करौला। पण आपरी आत्मा रै माथै लाग्यौड़ौ स्वत्व, मोह अर ममता रौ लेप, आपरै हिरदा माथै आयौड़ौ आसक्ती रौ पड़दौ अर आपरी बुद्धि माथै छायौड़ौ अहंकार रौ अंधकार आपने भलौ आदमी नीं वणण देवै। इण लेप, पड़दा अर अंधकर रौ घेरौ इतरौ जाडौ है के इणनैं मिटावण खातर

आपनैं मैंणत करणी पड़ैला। पण मिनख जे इण मारग जावण री पक्की तेवड़ले तो भलौ आदमी वणणौ कोई अवखी कांम कोयनीं। महात्मा गांधी जिण वखत देस खातर तन मन अर धन अर पण करणी री मतौ कियौ। वांनें कोई अवखाई नीं लागी। मोकली अडचणां आई पण वे डिगिया कोयनीं। गांधीजी एक ठौड़ लिख्यौ है—It does not cost to be kind. (परोपकारी अर दयाळु वणण वास्तै कोई कीमत नीं देवणी पड़ै) गांधीजी नैं परोपकार करण में आणंद आवतौ। इण नैं वे पोतारी साधना री एक ऊंची साधन मानता। महात्मा जी की लागणी फगत भारत माथै इज नीं पण सगला संसार सारु ही। वे विस्व वंधुत्व रा पक्का पुजारी हा। वे चावता के इण वास्तै तन, मन, धन, वांणी अर बुद्धि सगलां री ई उपयोग ह्वैणौ चाहिजै। इण कारण इज वे सगला संसार में पूजीजग्या। अलेखूं मिनख वांरा वतायौड़ा मारग माथै चालै। वांरै परमारथी कांमां री सौरभ लाखां करोड़ां मिनखां तांई पूगी।

भगवांन महावीर, महात्मा बुद्ध, मरजादा - पुरसोत्तम रांम, करम जोगी क्रिस्ण अर प्रेम रा सागर ईसू इण सगला महापुरखां पोतारी ऊमर परोपकार में इज गाळी। इण भारत भोम माथै हजारां तीरथंकर ह्वैग्या, पगंवर ह्वैग्या, रिसि-मुनि अर संत ह्वैग्या। ए सै जणा परोप कार री पगडांडी माथै चालणिया हा। वांरी जिंदगी परोपकार में इज वीती। भारत भोम री माटी री आ वत्ताई है के अठै एक-एक सूं आगला परोपकारी जनमिया। परोपकार री पाठ पढवा वास्तै वांनें पाठसाला में नीं जावणौ पड़ै। वांनै कठैई पण परोपकार री ट्रेनिंग नीं लेवणी पड़ी। मन रै मांय नै मतैई जनमियोड़ौ परोपकार इज वांरै जीवण री इमरत वणग्यौ। वांरै तो रूं-रूं में परोपकार री इमरत वैवतौ। इण सगला महात्मा वां पोतारै हिरदा में वैठौड़ा देव पणा नैं परोपकार रै पांण जागतौ राखियौ।

पण आंपणा दुरभाग सूं भारत भोम माथै आज पाछा स्वारथ रा वादल ऊपड़ण लागा है। मांनखा रै मन में लोभ री वैतरणी वैवण लागी है। लोगां रै मन में अहंकार री नाग फूफाड़ा मारै है। आसक्ती रूपी पूतनारागसी बुद्धि री सत खांचै है। वांणी नैं स्वारथ पूरण वजावै अर ममता री जैर पांचूं इंद्रियां में फैलाय नैं परोपकार री

खोज काढ़ै है। भारत भोम माथै आथमणा कुविचारां हमलौ बोलियौ है। मांनखा रै रूं रूं में स्वारथ वलग्यौ है। लगूवगू दोय सौ बरस री गुलांमी भारत रा सगला संस्कारां रौ नास कर नांख्यौ है। परोपकार री विरती, मेहमांणां री आगता सागता, पाडोसी धर्म, गांमधर्म, नगर-धर्म अर रास्ट्र धर्म रा संस्कारां माथै आथमणा विचारां रौ कालौ पोतौ फिरग्यौ है। नतीजौ ओ निकलियौ है के सगलाई पोत पोतारी पंचायत में पड़िया है। सै जणा आप आपरी खीचड़ी रांधवा री चिंता में लागौड़ा है। पोतारा कडूंबा रै सिवाय कोई किणरी परवानीं करै। केई इसा भला मिनख पण है के जिणां नैं फगत पोता रै पंडरीज पड़ी है, वांनै कडूंबा सूं ई कोई तल्लौ-मल्लौ कोयनीं। ओ भारत भोम रो दुरभाग समझणौ चाहिजै। इसा संजोगां में स्वारथ री जड़ां मजबूत वणै। मांनखौ पोतारा स्वारथ सूं आगै वधैतो पोतारी कौम रौ भलौ करै। उण सूं ई आगै वधै तो संप्रदाय के धर्म वास्तै उदारता वतावैला। ओ सगलौ परोपकार रौ नाटक है। साचौ परोपकार नीं है। आंपां जठै परोपकार री मरियादा बांधां, आंपणी मांनता रौ लेबल देखनैं कांई करवानैं त्यार ह्वां, उठै नीं परोपकार ह्वै अर नीं स्व उपकार पण ह्वै। करड़ी भासा वापरां तो आंपणै अहं रौ पोसण ह्वै। परोपकार री नीं तो हदवंदी ह्वै अर नीं सीमा रेखा ह्वै। परोपकार रौ 'लेबल' देखनैं आगै वध्यां के साइन बोर्ड जौयां कांम पारनी पड़ै। परोपकार में तो हिरदा रा सगला किवांड़ खुल्लामेलणा चांहिजै। बुद्धि माथला सगला पड़दा आगा नांखणा चाहिजै। बुद्धि रौ सगलौ स्रोत बैवतौ रैवणौ चाहिजै। अर इंद्रियां रौ वैपार सेवा में गरक ह्वै जाणौ चाहिजै। कांई कुदरत री सगली चीजां दूजां खातर वैवार करै के पोतारौ इज ध्यांन राखै। वैपार अर विरती ए दोनूं सब्द अठै विसेस अर्थ में आया है। इण में न्यात-पांत, धर्म-संप्रदाय के देसवेस रौ भेद भाव नीं रैवै। कुदरत पोतारा वारणा सगलां रै वास्तै खुल्ला राखै। पछै मांनखौ ओ विचार क्यूं करै के अमुक चीज म्हारै पोतारै वास्तै, म्हारी जात वास्तै के अमुक मिनख वास्तै इज रैवणी चाहिजै। दूजानैं आ चीज नीं देवूं। कांई ओ स्वार्थ साधन कोयनीं ?

मिनख पोतै सगला संसार तांई के संसार रा सगला देसां तांई नीं पूग सकै आ वात खरी। संसार रा सगला जीवां तांई पण उणरी

पूग नीं व्है सकै, आ वात पण साची। पण मिनख रा विचार, उणरी वुद्धि अर उणरौ हिरदौ इतरौ विसाल व्हैणौ चाहिजै के उणमें सगलौ संसार समाय सकै। उणनैं पोतारी वुद्धि सूं ओइज विचार करणौ चाहिजै, मन सूं ओइज मनन करणौ चाहिजै, वांणी सूं ओइज वोलणौ चाहिजै, हिरदा में आइज धारणा राखणी चाहिजै के जिकौ प्राणी के मिनख म्हारै नेड़ा आवै, के जिण मिनखां नैं जीवांकनैं म्हूं जावूं, उण सगलां रौ म्हारी मारफत कल्यांण व्हैजौ, भलौ व्हैजौ, सुभ व्हैजौ, वांरौ जीवण सुखी अर निरविकार वणजौ। आंपां आंपणा मन, वांणी, वुद्धि, हिरदा अर इंद्रियां मांय सूं ओछापणौ नीं काट सकां? जिकौ मिनख पोतारै मन, वांणी अर हिरदां सूं ओछा पणौ आगौ नीं कर सकै, फगत पौतारै पंग री विचार इज करै, उणरै जीवण में उजास किण विध आय सकै? वे भलांई कोई पण संप्रदाय नैं मांनता व्है, कोई पण धर्म में सिरधा राखता व्है, भलांई धार्मिक क्रियावां में रात दिन लागौड़ा रैवता व्है, लांवा लांवा भाषण देवता व्है, पोतारी जात, प्रांत, भासा अर देस खातर परसेवौ पाड़ता व्है, पणजे उणां में परोपकार री, मरियादावंधी रा अभाव री, सीमारेखा का अभाव री, अर लेवल नैं साइन वोर्ड रै अभाव की भावना नीं प्रगटै, उणरी इन्द्रियाँ, मन, वुद्धि अर वांणी जीवां अर मिनखां रा कल्याण में नीं लागै तो उणरी आ सगली भगती-भावना, पूजा-पाठ, सिरधा, क्रिया कांड, भासण अर जात-पांत वास्तै कीनौड़ी मैंणत फिजूल है।

अवै तो आप समझ्या व्हौला के मांनखा रै जीवण में परमार्थ अर परोपकार री कितरी जरूरत है। परमार्थ विहूणौ मांनव जीवण निसार है, नकांमो है।

आप जांणौ हो के आपरौ ओ सरीर पण नासवांन है। ओ मोड़ौ वेगौ सेवट एक दिन माटी भेलौ व्हैणौ है। इण सरीर रै सागै सगली इंद्रियां पण नासवांन है। आंपणी वुद्धि रीं विचार करवारी ताकत, आंपणै मन री मनन करवारी सगती, अर आंपणै वांणी री वोलवारी सांमरथ इण सगलां रौ सरींर रै सागै इज नास व्हैणौ है। आंपां जिकौ साधन सांमगरी भेली कोवी है, धनरा ढिगला संचिया है, हूंटा-ढंचा करनैं जिकौ सावन भेला कीना है, ए सगली चीजां पण नासवांन है। परलोक में एकपण सागै नीं चालै। आंपां सगलाई आछी तरियां जांणां के इण में सूं एकपण आंपणै सागै नी चालैला।

इणरै पछै आंपणै आगै ओ सवाल आवै के जिण वखत आंपणी आत्मा परलोक में जावण लागैला, उण वखत आंपणै सागै कांई चीज आवैला ? सरीर, मन, बुद्धि, इन्द्रियां, धन-दौलत अर दूजी चीजां तो अठै इज रैवण वाली है पण आंप कैवौला के पाप-पुन्न तो साथै चालैला इज।

म्हूं पण आपनें आइज बात कैवणी चावतौ के ए सगली चीजां तो अठैइज रैवणी है। तो पछै इण चीजां री मदद सूं संसार में चोखासूं चोखा कांम करनें, आंरौ चोखा सूं चोखौ उपयोग करनें पुन्न री थैली आंपणै सागै क्यूं नी लेवणी ? इण साधनां सूं पापरा पाटका बांध नें परलोक में दुखी क्यूं व्हैणौ ? भारत भोम कौ हरेक मिनख आ बात तो आच्छी तिरियां जाणै के जिणरा जिसा काम व्हैला, इणनें विसीज गति पण मिलैला। तो पछै भला काम करनें, आंपणा साधनां सूं बीजां री भलाई करनें परलोक वास्तै पुन्न क्यूं नीं कमावणौ ? थोड़ी जेज वास्तै परलोक की बात छोड़ दो। परलोक तो हाल आगै है। इण लोक में पण कियौ मिनख दूजांरी भलाई करै, परोपकार में मस्त रैवै, उणनें जीवण में सुख अर संतोक मिलै। उण नें परोपकार करण में इज सुरगरा आणंद कौ अनुभव व्है। पण इण लोक में जिकौ धणी पातारी स्वार्थ देखनें इज पग धर्कै मेलै, काछवारी गलाई संकोजतौ २ आगै वधै, पूजांरी परवा नीं करै तो कांई वो मिनख सुखी व्है सकै ? अनुभव तो ओ बतावै के जिको मिनख पोतारा स्वार्थ में इज लवलीन रैवै, उणनें नी तो कड़ूंवा में सुख मिलै, नीं जात में अर नी समाज में सुख मिलै। अर नीं उण मिनख नें देस में पण सुख मिलै। उणकै लोरै तो चिंतावांरी कतार रैवै। इसा मिनख नें तो फगत पैसा भेला करवारी, के उण पैसां री पोरौ देवण री चिंता लागौड़ी रैवै। इसौ स्वार्थी मिनख नीं तो पोता रा कड़ूंवा नें राजी राख सकै, नीं पाडोसियां नें अर नीं जात-पांत वालां नें। मिनखां री तणिजियौड़ी आख्यां के ललाड़ रा सलां री परवा नीं कर नें पोता रा मन में महाराज वण्यौड़ौ भलाइ रै वौ पण इसौ स्वार्थी अर अभिमांनी मिनख सुखी तो हरगिज नीं व्है सकै। इसा मिनख कनें थोड़ी टैम वास्तै पैसा री गरमी भलांई रै वौ के साधन सांमग्री वधारै भलांई व्है। पैसा रा जोर सूं वो दूजां नें मोल ले सकै पैसा देय नें पोता री

सेवा चाकरी पण कराय सकै। पण सेवट बीजा मिनख उणकै आगा नेड़ाई नीं रैवै। जे रैवैला तो टिक नैं नी रैवै अर जे कदाच रैवैला तो कांमचोरी करैला। अर सेठजी छाती कूटौ करता इज रैवैला। वांनैं न चिताई कदैई नीं मिल सकै। कैवण री मतलव ओ के इसा संजोगां में पण वांनैं सुख नीं मिल सकै। वांनैं साचौ सुख तो उण वखत इज मिल सकै के जद वांरौ मन बदलै, हिरदौ उदार वणै अर मन में परोपकार री भावना पैदा व्है।

अढारै ई पुरांण लिखीज्यां पछै व्यासजी नैं पूछ्यौ—इण सगलाई पुराणां री सार कांई है ? ए अढारैई पुरांण लिखनैं आप दुनिया नैं कांई सिक्षा देवणी चावौ ? इणां में मांनखा कै ग्रहण करवा लायक चीज कोइ है ? व्यासजी फगत एक स्लोक में इज जवाव देय दियौ—

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्॥

अढारै ई पुरांणां में व्यासजी रा फगत दो वचन इज सार रूप है के परोपकार कियां सूं पुन व्है अर दूजां नैं दुख दियां सूं पाप व्है।

जे सगला मिनख इतरा सास्त्र, इत रा पुरांण, इत रा वेद अर इतरा सूत्र नी घोख नैं फगत ए वे वचन इज याद राखता व्है तो घणा। इण वच्चनां रै माफक एक कांम वरजंत है तो दूजौ करणौ चाहिजै। वीजां नै दुख नीं देवणौ अर वण सकै जितरौ परोपकार करणौ।

केई मिनखां री इसी मांनता है के परोपकार फगत पैसा सूं इज व्है सकै। पण वांरी आ मांनता एक भरम है। पैसा सिवाय सरीर सूं, मन सूं बुद्धि सूं, वांणी सूं अर बीजा साधनां सूं पण परोपकार व्है सकै।

चोखा कांमां में पैसौ वापरणौ, गरीब गरवारी मदद करणी, वांनै अन्न, कपड़ौ अर दवाइयां देवणी, ए सगला कांम धन अर वीजा साधनां कै पांण किया जा सकै !

कोई मांदा के गरडा मिनख री सरीर सूं सेवा करणी, कोई निबला मिनख री मदद करणी, पंड मैंणत सूं बीजां रो भलौ करणौ, कोई नैं पंड रै मदद री जरूरत व्है तो उण नैं देवणी, ए सगला परोपकार रा कांम पंड सूं वण सकै।

पोतारी बुद्धि सूं कोई रो भलौ करणौ, कोई नैं चोखौ मार्ग बतावणौ, जोग सलाह देवणी, कोई नैं हिम्मत बंधावणी, वेहमी मिनख रौ वेहम मेटणौ, रलपट मिनखा नै चोखै मार्ग घालणा, कोई लुगाई के आदमी नैं अवला मार्ग सूं पाधरै मार्ग लावणा, बे भाई माहौमाह झगड़ता ह्वै अर कचेड़ियां में नांणा फगडता ह्वै तो वांनैं समझावणा समाज, जात-पांत के देस में जिकौ खराब रीत-भात चालतो ह्वै, उण नैं मिटावणो, नकांमा खरचा ओछा करणा, ए सगला परोपकार रा कांम बुद्धि सूं होय सकै।

कोई दुखी भाई बैंन नैं दिलासा देवी, ज़िकण माथै आंपणा बोलां रौ असर ह्वै सकै, वे कैयनैं उणनैं मदद देवणी, मांदा मिनख नैं धीरप रा बे बोल कैवणा, ए सगला परोपकार वांणी सूं ह्वै सकै।

मन सूं संसार, समाज अर जीव मात्र रौ भलौ चावणौ, संसार रै कल्यांण रौ विचार करणौ, इसा परोपकार मन सूं ह्वै सकै।

इणीज भांत पांचूं इंद्रियां सूं पण परोपकार ह्वै सकै। कांनां सूं कोई दुखियारी पुकार सुणनैं उणरी मदद करणी, आंख्यां सूं कोई कस्ट भोगवता के गुलामी भोगवता मिनख नैं उणरी मदद करणी, नाक सूं सूंघ नैं जठै गंदगी पड़ी ह्वै, उणनै हटाय नैं दूजां नैं उण गंदगी सूं बचावणा, जीभ सूं बासी के सड़ियौड़ी चीजां चाखनैं वांनै आघी नखावणी, जिण सूं दूजां रौ पेट खराब नीं ह्वै, परस इंद्रियां सूं सरीर री ज्ञानेंद्रियां अर कर्मेंद्रियाँ रौ चोखौ उपयोग करणै री प्रेरणा देवणी।

परोपकार बाबत मोकलौ कैय दियौ। एक वाक्य में इज केवणौ ह्वै तो सार ओ है परोपकार इज मांनव जीवण री साची निसांणी है। जिकौ मिनख परोपकार सूं अलगौ रैवै वो पोतारा जीवण में सफलता पण नीं पाय सकै। इण वास्तै हर वखत पलक-पलक आंपणा हिरदा में, बुद्धि में, वांणी में, अर इंद्रियां में परोपकार रौ इमरत वैवतौ रैवणौ चाहिजै। इण भांत जे हर वखत परोपकार रौ इमरत वैवतौ रैवैं तो आंपां इण भव नैं अर आगीतर नैं, दोनूं नैं सुधार सकां।

卐

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

- भगवान अरिष्टनेमि और कर्मयोगी श्रीकृष्ण : एक अनुशीलन
- चिन्तन की चांदनी
- अनुभूति के आलोक में
- विचार रश्मियां
- विचार और अनुभूतियां
- खिलती कलियां : मुस्कराते फूल
- प्रतिध्वनि
- फूल और पराग
- बुद्धि के चमत्कार
- अतीत के उज्ज्वल चरित्र
- बोलते चित्र
- जिन्दगी की मुस्कान
- जिन्दगी की लहरें
- साधना का राजमार्ग
- ओंकार : एक अनुचिन्तन
- नेम वाणी
- श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र
- संस्कृति के स्वर
- रामराज
- मिनख पणारो मोल
- संस्कृति रा सुर
- कल्प सूत्र